जुलाई-सितम्बर 2011
मूल्य 40 रुपए

शोध दिशा

समकालीन सृजन को समर्पित त्रैमासिकी

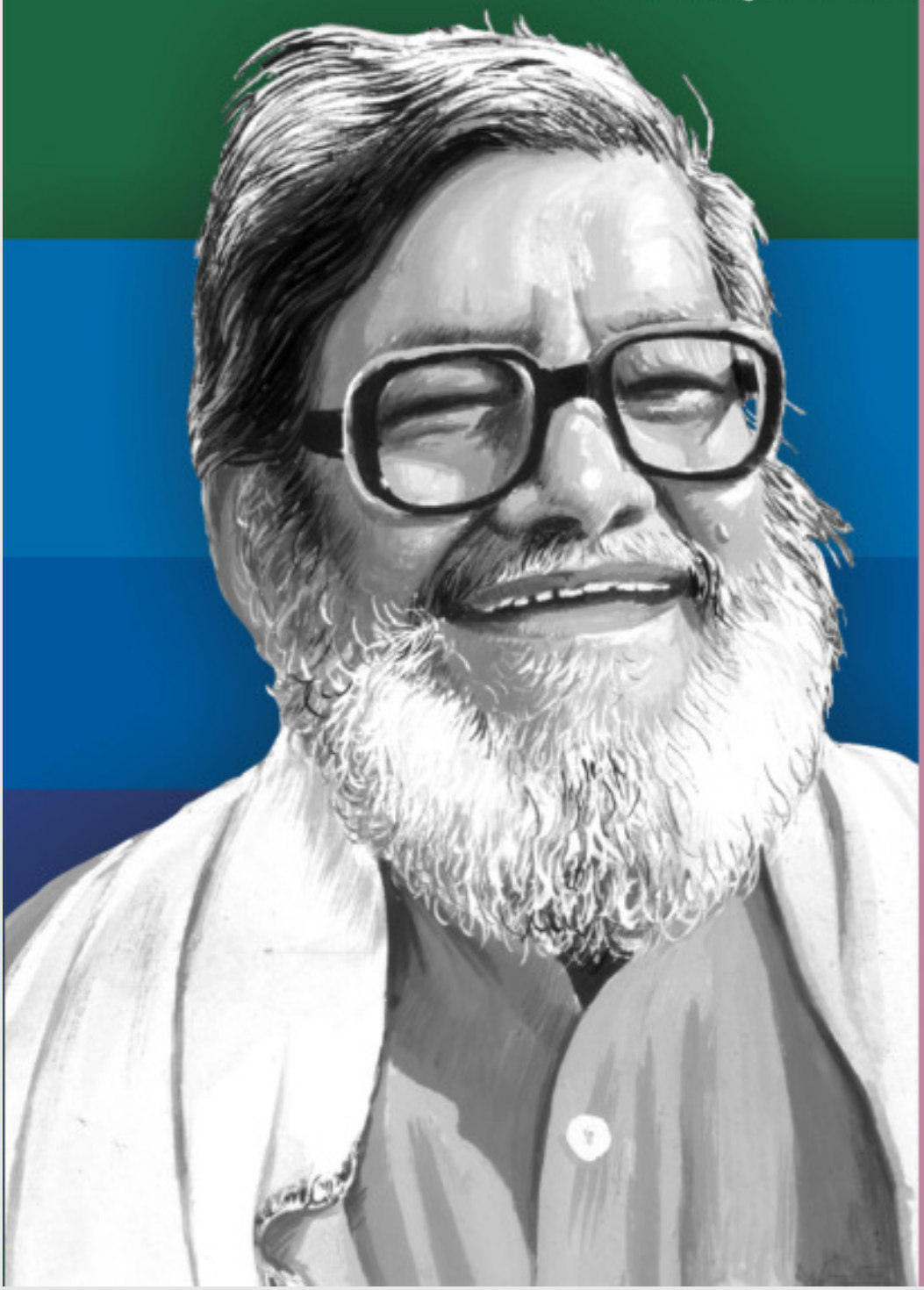

काका हाथरसी अंक

शोध दिशा

वर्ष 4 अंक 3 | जुलाई-सितंबर 2011 | 40 रुपए

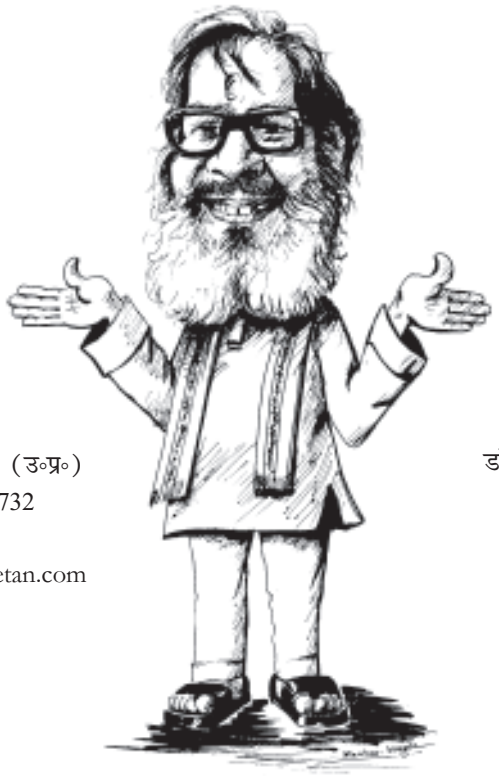

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : giriraj3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली एन॰सी॰आर॰
अनुभूति
सी-106, शिव कला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फ़ोन : 09952070700

गुड़गाँव कार्यालय
डॉ॰ मीना अग्रवाल
एफ़-403, पार्क व्यू सिटी-2
सोहना रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)
फ़ोन : 0124-4076565, 07838090237

दक्षिण भारत
राहुल भटनागर
जी-202, दि ईस्ट सेंट्रल पार्क, लेंकर अपार्टमेंट
अल्कोट एवेन्यू रोड, ओल्ड महाबलीपुरम् रोड
शोलिंगनल्लूर, चेन्नई-600019
फ़ोन : 044-24508070, 09176670727

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
मनोज अबोध
सत्यराज

कला संपादक
गीतिका गोयल 09582845000
डॉ॰ अनुभूति 09952070700

उपसंपादक
डॉ॰ अशोक कुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

चित्रकार
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
देवेंद्र शर्मा
अतुलवर्धन

शुल्क
आजीवन शुल्क : एक हज़ार पाँच सौ रुपए
वार्षिक शुल्क : एक सौ पचास रुपए
एक प्रति : चालीस रुपए
विदेश में : पंद्रह यू॰एस॰डॉलर (वार्षिक)

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें।

स्वत्वाधिकारी 'हिंदी साहित्य निकेतन' की ओर से स्वत्वाधिकारी, मुद्रक प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, निकट ज्योतिष भवन, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

संरक्षक

रो॰ असित मित्तल, नोएडा
श्री अजय रस्तोगी, मेरठ
श्री निश्चल रस्तोगी, मेरठ
श्री अनिलकुमार गोयल, नोएडा
रो॰ आर॰के॰ जैन, बिजनौर
डॉ॰ धैर्य विश्नोई, बिजनौर
डॉ॰ प्रकाश, बिजनौर
रो॰ राजीव रस्तोगी, मुरादाबाद
रो॰ नीरज अग्रवाल, मुरादाबाद
रो॰ राकेश सिंहल, मुरादाबाद
श्री महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
श्रीमती ताराप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ परमकीर्तिसरन अग्रवाल, मु॰न॰
रो॰ देवेंद्रकुमार अग्रवाल, (काशी विश्वनाथ स्टील्स, काशीपुर)
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल, (नैनी पेपर्स, काशीपुर)
श्री विवेक गोयल, संभल
श्री अमितप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ नीरज अग्रवाल, जयपुर
श्री सत्येंद्र गुप्ता, नजीबाबाद
श्री अशोक अग्रवाल, गुड़गाँव

आजीवन सदस्य

रो॰ आर॰ के॰ साबू, चंडीगढ़
रो॰ सुशील गुप्ता, नई दिल्ली
रो॰ एम॰एल॰ अग्रवाल, दिल्ली
डॉ॰ मनोजकुमार, दिल्ली
श्री प्रवीण शुक्ल, दिल्ली
डॉ॰ दीप गोयल, दिल्ली
श्री आशीष कंधवे, दिल्ली
श्री अविनाश वाचस्पति, दिल्ली
पावर फाइनेंस कारपोरेशन (इं) लि॰

उत्तर प्रदेश

रो॰ डॉ॰ के॰ सी॰ मित्तल, नोएडा
श्री सुभाष गोयल, नोएडा
श्री ओमप्रकाश यति, नोएडा
डॉ॰ कुँअर बेचैन, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ अंजु भटनागर, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश रोहतगी, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मंजु शुक्ल, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित, शिकोहाबाद
डॉ॰ पल्लवी दीक्षित, शिकोहाबाद
रो॰ डॉ॰ एस॰के॰ राजू, हाथरस
श्री दिनेशचंद्र शर्मा, मोदीनगर
श्री एस॰सी॰ संगल, बुढ़ाना
डॉ॰ नीरू रस्तोगी, कानपुर
श्री विनोदकुमार गोयल, दादरी
श्री अलीहसन मकरैंडिया, दादरी
डॉ॰ प्रणव शर्मा, पीलीभीत
श्रीमती पिंकी चतुर्वेदी, वाराणसी
श्री अरविंदकुमार, जालौन
नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन
डॉ॰ राकेश शरद, आगरा
डॉ॰ राकेश सक्सेना, एटा
श्री अरविंदकुमार, मोहदा (हमीरपुर)
श्री गोपालसिंह, बेलवा (जौनपुर)
डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा, फिरोजाबाद
श्री दिनेश रस्तौगी, शाहजहाँपुर
श्री भूदेव शर्मा, नोएडा

खुरजा (उ॰प्र॰)

श्रीमती उषारानी गुप्ता
रो॰ राकेश बंसल
रो॰ डॉ॰ दिनेशपाल सिंह
रो॰ प्रेमप्रकाश अरोड़ा
रो॰ सुनील गुप्ता आदर्श

जे॰पी॰ नगर

रो॰ अभय आनंद रस्तोगी, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ विनोदकुमार अग्रवाल, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ सरल राघव, अमरोहा
डॉ॰ बीना रुस्तगी, अमरोहा
रो॰ शिवकुमार गोयल, धनौरा
रोटरी क्लब, भरतियाग्राम

अफजलगढ़ (बिजनौर)

रो॰ रविशंकर अग्रवाल
रो॰ अतुलकुमार गुप्ता
रो॰ महेंद्रमानसिंह शेखावत
श्री वासुदेव सरीन
श्री हंसराज सरीन
श्री अमृतलाल शर्मा
श्री सुरेशकुमार

चाँदपुर (बिजनौर)

डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल
श्री सुरेंद्र मलिक
गुलाबसिंह हिंदू महाविद्यालय
डॉ॰ बलराजसिंह, बाष्टा (बिजनौर)

धामपुर (बिजनौर)

डॉ॰ लालबहादुर रावल
श्री जे॰पी॰ शर्मा, शुगर मिल
डॉ॰ सरोज मार्कण्डेय
डॉ॰ शंकर क्षेम
श्री नरेंद्रकुमार गुप्त
डॉ॰ ऋषि गौड़
डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
रो॰ शिवओम अग्रवाल
डॉ॰ वीरेंद्रकुमार शर्मा
डॉ॰ कृष्णकांत चंद्रा
डॉ॰ श्रीमती संहिता शर्मा
डॉ॰ पूनम चौहान
डॉ॰ भानु रघुवंशी
डॉ॰ ख़ालिदा तरन्नुम
श्री आर्यभूषण गर्ग
श्री संजय जैन
श्री निशिवेशसिंह एडवोकेट
श्री दीपेंद्रसिंह चौहान
मौ॰ सुलेमान, परवेज़ अनवर, शेरकोट
कुँ॰ निहालसिंह, दुर्गा पब्लिक स्कूल
प्राचार्य, आर॰एस॰एम॰ (पी॰जी॰)कालेज
प्राचार्या, एस॰बी॰डी॰ महिला कालेज
राधा इंटर कालेज, अल्हेपुर (धामपुर)
धामपुर पब्लिक कन्या इंटर कालेज

नगीना (बिजनौर)

श्री पंकजकुमार, पो॰ भोगली
श्री करनसिंह, पो॰ भोगली
श्री पंकजकुमार अग्रवाल
श्री मुनमुन अग्रवाल
डॉ॰ वारिस लतीफ
श्री ओमवीर सिंह

नजीबाबाद (बिजनौर)

श्री इंद्रदेव भारती
डॉ॰ रासुलता

बरेली (उ॰प्र॰)

रो॰ डॉ॰ आई॰एस॰ तोमर
रो॰ रविप्रकाश अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रामप्रकाश गोयल
डॉ॰ सविता उपाध्याय
डॉ॰ महाश्वेता चतुर्वेदी
रो॰ पी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ अशोक उपाध्याय

रो॰ श्यामजी शर्मा
श्री विशाल अरोड़ा
डॉ॰ वाई॰एन॰ अग्रवाल
श्री राजेंद्र भारती

बिजनौर (उ॰प्र॰)

श्री राजकमल अग्रवाल
डॉ॰ बलजीत सिंह
रो॰ रमेश गोयल
रो॰ ज्ञानदेव विज्ञानदेव अग्रवाल
रो॰ महेंद्रकुमार जैन
डॉ॰ मोनिका भटनागर
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
श्री जोगेंद्रकुमार अरोरा
श्री चंद्रवीरसिंह गहलौत, एडवोकेट
रो॰ आर॰डी॰ शर्मा
डॉ॰ निकेता
डॉ॰ अजय जनमेजय
श्री पुनीत अग्रवाल
डॉ॰ निरंकारसिंह त्यागी
श्री अशोक निर्दोष
श्री वी॰पी॰ गुप्ता
रो॰ प्रदीप सेठी
रो॰ हरिशंकर गुप्ता
रो॰ सी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ तिलकराम, वर्धमान कॉलेज
आर॰बी॰डी॰महिला महाविद्यालय
रो॰ डॉ॰ रजनीशचंद्र ऐरन, हल्दौर
श्री अरुण गोयल, किरतपुर
रो॰ डॉ॰ दीपशिखा लाहौटी, नगीना
रो॰ बी॰के॰ मालपानी, स्योहारा
डॉ॰ हेमलता देवी, गोहावर
नहटौर डिग्री कालेज, नहटौर
श्री विवेक गुप्ता, शादीपुर

मवाना (उ॰प्र॰)

रो॰ अनुराग दुबलिश
श्री अंबरीशकुमार गोयल
आर्य कन्या इंटर कालेज
ए॰एस॰ इंटर कालेज
लक्ष्मीदेवी आर्य कन्या डिग्री कालेज

मुज़फ़्फ़रनगर (उ॰प्र॰)

रो॰ शरद अग्रवाल
रो॰ वीरेंद्र अग्रवाल
रो॰ दिनेशमोहन
रो॰ डॉ॰ ईश्वर चंद्रा
रो॰ डॉ॰ अमरकांत
रो॰ अनिल सोबती
रो॰ डॉ॰ जे॰के॰ मित्तल
रो॰ सुधीरकुमार गर्ग
रो॰ प्रदीप गोयल
श्री गौरव प्रकाश
डॉ॰ बी॰के मिश्रा
रो॰ राकेश वर्मा
रो॰ संजीव गोयल
प्राचार्य, एस॰डी॰ कालेज ऑफ लॉ
प्रधानाचार्य, ग्रेन चेम्बर्स पब्लिक स्कूल
रो॰ संजय जैन, शामली
रो॰ डॉ॰ कुलदीप सक्सेना, शामली
रो॰ उमाशंकर गर्ग, शामली
रो॰ डॉ॰ सुनील माहेश्वरी, शामली
श्री अतुलकुमार अग्रवाल, खतौली

मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

रो॰ सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
रो॰ बी॰एस॰ माथुर
रो॰ ललितमोहन गुप्ता
रो॰ सुरेशचंद्र अग्रवाल
श्री शचींद्र भटनागर
रो॰ योगेंद्र अग्रवाल
रो॰ नीरज अग्रवाल
रो॰ के॰के॰ अग्रवाल
रो॰ श्रीमती सरिता लाल
रो॰ श्रीमती चित्रा अग्रवाल
डॉ॰ महेश 'दिवाकर'
रो॰ ए॰एन॰ पाठक
रो॰ चक्रेश लोहिया
रो॰ यशपाल गुप्ता
रो॰ सुधीर खन्ना
रो॰ रमित गर्ग
श्री विनोदकुमार
डॉ॰ रामानंद शर्मा
डॉ॰ पल्लव अग्रवाल
श्री राजेश्वरप्रसाद गहोई
श्री विश्वअवतार जैमिनी
श्रीमती कनकलता सरस
श्री योगेंद्रकुमार
श्री हरीश गर्ग, संभल
श्री वीरेंद्र गोयल, संभल
श्री नितिन गर्ग, संभल
रो॰ डॉ॰ राकेश चौधरी, चंदौसी

मेरठ (उ॰प्र॰)

रो॰ ओ॰पी॰सपरा
रो॰ विष्णुशरण भार्गव
रो॰ एम॰एस॰ जैन
रो॰ गिरीशमोहन गुप्ता
रो॰ डॉ॰ हरिप्रकाश मित्तल
रो॰ प्रणय गुप्ता
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
रो॰ संजय गुप्ता
श्री किशनस्वरूप
रो॰ नरेश जैन
रो॰ सागर अग्रवाल
डॉ॰ अनिलकुमारी
रो॰ प्रदीप सिंहल
श्री शिवानंद सिंह 'सहयोगी'
रो॰ नवल शाह
डॉ॰ रामगोपाल भारतीय
श्रीमती बीना अग्रवाल
श्रीमती मृदुला गोयल
रो॰ मुकुल गर्ग
श्री सियानंद सिंह त्यागी
श्री राकेश चक्र

रामपुर (उ॰प्र॰)

श्री शांतनु अग्रवाल
श्री नरेशकुमार सिंघल
डॉ॰ मीना महे

लखनऊ (उ॰प्र॰)

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, आई॰पी॰एस॰
श्री दामोदरदत्त दीक्षित
डॉ॰ किरण पांडेय
श्री अनुपम मित्तल
श्रीमती रेणुका वर्मा
श्रीमती उषा गुप्ता
श्री अमृत खरे
श्री विनायक भूषण

सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ विपिनकुमार गिरि
श्री श्रीपाल जैन ठेकेदार
श्री पूर्णसिंह सैनी, बेहट
श्री विनोद 'भृंग'
एम॰एल॰जे॰खेमका गर्ल्स कालेज

उत्तराखंड

डॉ॰ आशा रावत, देहरादून
डॉ॰ राखी उपाध्याय, देहरादून
श्री अमीन अंसारी, जसपुर
श्री विपिनकुमार बक्शी, कोटद्वार
डॉ॰ अर्चना वालिया, कोटद्वार
धनौरी डिग्री कालेज, धनौरी
नेशनल इंटर कालेज, धनौरी

रुड़की

डॉ॰ अनिल शर्मा
श्री प्रेमचंद गुप्ता
श्री अविनाशकुमार शर्मा
श्री वासुदेव पंत
श्री मयंक गुप्ता
श्री अमरीष शर्मा
श्री उमेश कोहली
श्री जे॰पी॰ शर्मा
श्री मनमोहन शर्मा
श्री सुनील साहनी
श्री अशोक शर्मा 'आर्य'
श्री मेनपालसिंह
श्री संजय प्रजापति
श्री ओमदत्त शर्मा
श्री अरविंद शर्मा
श्री राजेश सिंहल
श्री ब्रिजेश गुप्ता
श्री संजीव राणा
श्री ऋषिपाल शर्मा
श्री राजपाल सिंह
बी॰एस॰एम॰इंटर कालेज,
आनंदस्वरूप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर
योगी मंगलनाथ सरस्वती विद्या मंदिर
शिवालिक पब्लिक स्कूल, डंडेरा

काशीपुर

श्री समरपाल सिंह
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ वी॰एम॰ गोयल
रो॰ डॉ॰ एस॰पी॰ गुप्ता
रो॰ डॉ॰ डी॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ एन॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रविनंदन सिंघल
रो॰ विजयकुमार जिंदल
रो॰ जितेंद्रकुमार
रो॰ प्रदीप माहेश्वरी
रो॰ रवींद्रमोहन सेठ
श्री प्रमोदसिंह तोमर

आंध्र, कर्नाटक एवं केरल

श्री अनंत काबरा, हैदराबाद
श्री श्याम गोयनका, बैंगलौर
डॉ॰ दीपा के॰, बैंगलोर (कर्नाटक)
डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर, केरल

तमिलनाडु

डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन शेष, चेन्नई
श्रीमती जयालक्ष्मी, चेन्नई
श्री एन॰ गुरुमूर्ति, चेन्नई
सुश्री प्रतिभा मलिक, चेन्नई
सुश्री अपराजिता शुभ्रा, चेन्नई
श्री योगेशचंद्र पांडेय, चेन्नई
श्री महेंद्रकुमार सुमन, चेन्नई
श्री संजय ढाकर, चेन्नई
श्री प्रदीप साबू, चेन्नई
सुश्री स्वर्णज्योति, पांडिचेरी

पंजाब

रो॰ विजय गुप्ता, राजपुरा
कर्नल तिलकराज, जालंधर
श्री सागर पंडित, अमृतसर

उड़ीसा

श्री श्यामलाल सिंहल, राउरकेला

मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़

रो॰ रविप्रकाश लंगर, उज्जैन
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह, उज्जैन
डॉ॰ अशोक भाटी, उज्जैन
श्री माणिक वर्मा, भोपाल
श्री प्रदीप चौबे, ग्वालियर
श्री उमाशंकर मनमौजी, भोपाल
श्री जगदीश जोशीला
श्री विनोदशंकर शुक्ल, रायपुर
श्री रामेश्वर वैष्णव
श्री गजेंद्र तिवारी, बागबाहरा
श्री धीरेंद्रमोहन मिश्र, लक्खीसराय

महाराष्ट्र, गुजरात

रो॰ सज्जन गोयनका, मुंबई
श्री जावेद नदीम, मुंबई
रो॰ डॉ॰ माधव बोराटे, पुणे
श्रीमती रिज़वाना कश्यप, पुणे
रो॰ सुरेश राठौड़, बंबई
डॉ॰ शैलजा सुरेश माहेश्वरी, अमलनेर
श्री मधुप पांडेय, नागपुर
श्री सुभाष काबरा
श्री अरुणा अग्रवाल, पुणे
श्री सागर खादीवाला, नागपुर
डॉ॰ मिर्ज़ा एच॰ एम॰, सोलापूर
श्री वनराज आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज,
धरमपुर (बलसाड)
श्री मोरारजी देसाई आर्ट्स एंड कॉमर्स
कालेज, वीरपुर (तापी)

राजस्थान

रो॰ डॉ॰ अशोक गुप्ता, जयपुर
रो॰ अजय काला, जयपुर
श्री कमल कोठारी, जयपुर
रो॰ विवेक काला, जयपुर
श्री आर॰सी॰ अग्रवाल, जयपुर
श्री राजीव सोगानी, जयपुर
श्री सुरेश सबलावत, जयपुर
श्री कमल टोंगिया, जयपुर
श्री मुकेश गुप्ता, जयपुर
श्री विनोद गुप्ता, जयपुर
श्री गिरधारी शर्मा, जयपुर
रो॰ एस॰के॰ पोद्दार, जयपुर
रो॰ राजेंद्र सांघी, जयपुर
रो॰ आर॰पी॰ गुप्ता, जयपुर
श्री जयपुर चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंड॰
डॉ॰ शंभुनाथ तिवारी, भीलवाड़ा
डॉ॰ दयाराम मैठानी, भीलवाड़ा
श्री मुरलीमनोहर बासोतिया, नवलगढ़

हरियाणा

श्री विकास, तहसील महम, रोहतक
डॉ॰ स्नेहलता, रोहतक
डॉ॰ सुदेशकुमारी, जींद
श्री हरिदर्शन, सोनीपत
डॉ॰ प्रवीनबाला, जुलाना मंडी
श्रीमती अनिलकुमारी, घिलौड़ कलाँ
डॉ॰ प्रवीणकुमार वर्मा, फरीदाबाद
श्रीमती रेखारानी, फरीदाबाद
श्रीमती सविताकुमारी, सोनीपत
श्रीमती सुमनलता, रोहतक
श्री सुरेशकुमार, भिवानी
डॉ॰ सविता डागर, चरखी दादरी
छोटूराम किसान कालेज, जींद
प्राचार्य, ए॰पी॰जे॰ सरस्वती पी॰जी॰
कालेज, चरखी दादरी
विनोदकुमार कौशिक, चरखी दादरी
श्रीमती विधु गुप्ता, गुड़गाँव

आपसे कुछ बातें...

काका जन-जन के कवि थे। उनकी हास्य-कविताओं को सुनने के लिए जहाँ श्रोताओं की अपार भीड़ एकत्र होती थी, वहीं कतिपय आलोचक उनकी कविताओं पर नाक-भौंह सिकोड़ते दिखाई देते थे। किंतु उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। वे कहते थे कि मैं अपनी बात उस भाषा और शैली में कहना चाहता हूँ, जिसे एक सामान्य रिक्शा चलानेवाला भी समझ सके और हँस सके। उनके हास्य में कहीं भी भौंड़ापन नहीं है, इसी का परिणाम है कि तीन-तीन पीढ़ियाँ एक साथ बैठकर काका हाथरसी की कविताओं को सुनती रही हैं।

अपने 28 वर्ष के संपर्ककाल में मैंने काका जी को केवल एक बार ज्वरग्रस्त देखा था, सन् 1975 में। तब वे मसूरी में थे। तीन-चार दिन बाद वे स्वस्थ हो गए। उनके स्वास्थ्य का राज़ था, उनका नियमित-व्यवस्थित जीवन। नियमित प्रातःकालीन भ्रमण, इतना कि लोग अपनी घड़ियाँ मिला लें। नाश्ते में एक कप कॉफ़ी और दो स्लाइस ब्रैड की और थोड़े से भुने चने, दोपहर में बारह बजे दो चपातियाँ। यदि पसंद की कोई मिठाई हो तो एक पीस के साथ एक रोटी कम। शाम को एक कप कॉफ़ी, फिर भ्रमण तथा रात में आठ बजे दो चपातियाँ।

और दूसरा रहस्य था, उनका उल्लास, हास्य का मूड। हँसी बाँटना और दूसरों के साथ खिलखिलाकर हँसना। यह हँसी उनके जीवन का अंग बन गई। इसीलिए उन्होंने कहा—हास्य-व्यंग्य : जीवन का अंग।

अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन : ए-वन' लिखकर वे सर्वाधिक संतुष्ट थे। घोर ग़रीबी से आकाश की बुलंदियों पर पहुँचने वाले काका ने यही स्थापित किया कि उन्होंने जीवन के सब सुख प्राप्त कर लिए हैं। अब उन्हें किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं है।

काका को उदास चेहरे कभी पसंद न आए। हँसते-खिलखिलाते चेहरों को देखकर वे प्रफुल्लित हो जाते थे। इसीलिए उन्होंने कहा था कि मेरी मृत्यु के बाद लोग आँसू न बहाएँ, हँसें और खिलखिलाएँ और हँसते हुए मुझे लेकर जाएँ। यहाँ तक कि श्मशान-घाट पर भी हास्य-कविसम्मेलन आयोजित हो।

मैं इस दृश्य का प्रत्यक्ष गवाह हूँ। 18 सितंबर से 19 सितंबर तक पूरे हाथरस शहर के साथ-साथ दूर-दूर के गाँवों से स्त्री-पुरुष अपने बच्चों को कंधों पर उठाए हुए उनके अंतिम दर्शन के लिए उपस्थित हुए।

काका की इच्छा के अनुसार एक ऊँटगाड़ी पर उनका पार्थिव शरीर रखकर अंतिम 'शोभायात्रा' निकाली गई। इस शोभायात्रा में जहाँ तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक लोगों के सिर ही सिर दिखाई देते थे। चार किलोमीटर के लंबे रास्ते पर छतों पर चढ़े हुए लोग, जिनमें स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सभी थे, काका के अंतिम दर्शनों के लिए लालायित थे। वे अपने चरितनायक पर पुष्पों, मखानों, खीलों और बताशों की वर्षा कर रहे थे। ऐसा लगता था कि कोई भी नर-नारी इस अवसर का गवाह बनने से वंचित नहीं होना चाहता था।

विचित्र वातावरण था। ग़मगीन निगाहों में हँसी और हँसी में भरे हुए आँसू। कीर्तन करता हुआ जनसमूह, हँसता-खिलखिलाता जनसमूह। रोने के लिए तत्पर, आँसू छिपाता हुआ जनसमूह। विश्व के घटनाक्रम में यह भी एक अद्भुत दृश्य था। एक ओर काका के पार्थिव शरीर को अग्नि अपने में विलीन कर रही थी तो दूसरी ओर श्मशान-भूमि में हास्य-कविसम्मेलन चल रहा था। लोग ठहाके लगा रहे थे।

निश्चय ही हास्य को अपने रक्त से सींचने वाले इस हास्य-पुरुष की अंतिम यात्रा पूरी हुई, किंतु यहीं से आरंभ होती है हमारी ज़िम्मेदारी कि हम उनकी दी हुई इस हास्यचेतना को संवेदनाहीन होते समाज में जीवंत बनाए रखें।

चिट्ठी-पत्री

जनवरी-मार्च, 2011 'दोहा-विधा' को समर्पित अंक मिला, इतने दोहाकारों से एक साथ परिचित कराने के लिए धन्यवाद कल 'हरिगंधा' हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित अंक में अपने दोहे पुन: पाकर हर्ष हुआ आपके संबंधों के तार कहाँ तक जुड़े हैं, इस बात का अहसास हुआ, आपके अगले अंक किन विधाओं पर आधारित हैं। यह तो मालूम नहीं, किंतु समकालीन सृजन को समर्पित आपकी पत्रिका सचमुच सराहनीय एवं संग्रहणीय है। जानकारी मिलेगी तो आगे भी स्नेह-सूत्र मजबूत रहेगा।

अश्विनीकुमार पांडेय

34/67 ए, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, चांदखेड़ा, गांधीनगर
मो॰ 09426039691

'शोध दिशा' की स्वर्णिम प्रति ई-मेल द्वारा भिजवाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका में छपे लेखों से न केवल पत्रिका, शोध-संदर्भ, साहित्यकार संदर्भ कोश व अन्य प्रकाशित पुस्तकों के बारे में जानकारी मिली, बल्कि आपके जीवट व हौसले से प्रेरणा भी मिली। पत्रिका में छपे व्यंग्य चुटीले होने के साथ-साथ लेखक व प्रकाशक की दशा भी बयान कर रहे थे। पवित्रा अग्रवाल की कहानी अच्छी लगी। विज्ञानकथा विशेष रूप से सराहनीय थी। ब्लॉग के द्वारा हिंदी को आधुनिकता से जोड़ने के लिए साधुवाद। शुभकामनाओं के साथ।

डॉ॰ नीरोत्तमा मौदगिल

nerotma@yahoo.com

'शोध दिशा' का अप्रैल-जून अंक मिला। हिंदी साहित्य निकेतन की स्वर्ण जयंती पर प्रकाशित सामग्री आपकी निष्ठा अध्यवसाय, प्रबंध-कौशल की परिचायक है। पिछले चार दशक से मैं इसकी प्रगति का गवाह हूँ। मेरा प्रथम शोध-लेख तुलसी मानस संदर्भ में आपने छापा था—'भाग्य और पुरुषार्थ के संबंध में तुलसी का दृष्टिकोण।' फिर सूर, काका हाथरसी आदि ग्रंथों तथा शोध दिशा के विशेष अंकों में भी आपने लेख छापे। बहुत-बहुत बधाई-शुभकामनाएँ।

डॉ॰ कृष्णचंद्र गुप्त

186/42 आर्यपुरी, मुजफ्फरनगर (उ॰प्र॰)

'शोध दिशा' का अप्रैल-जून अंक मेरे सम्मुख है। यह अंक गत 50 स्वर्णिम वर्षों की विकास-यात्रा और आपके साहित्यिक योगदान की जीवंत दास्तान कह रहा है। आपने इस सुअवसर को पूर्ण उत्सवधर्मिता के साथ 'सेलिब्रेट' किया है। आपकी प्रसन्नता में मैं भी सम्मिलित हूँ, आपसे इतना जुड़ाव जो है। मंचस्थ विभूतियों के श्रीमुख से निर्झरित भाव-विचार-गंगा सुखद लगी। उसमें डूबते-उतराते हुए मेरे चित्रपट पर आपका एक रेखाचित्र-सा खिंचा जा रहा था। प्रभु से प्रार्थना है कि आपको दीर्घायु करें ताकि साहित्य समृद्ध होता रहे, समाज को रोशनी मिलती रहे।

जितेंद्र 'जौहर'

आई॰आर॰-13/6, रेणुसागर, सोनभद्र (उ॰प्र॰)

सर्वप्रथम मैं आपको व हिंदी साहित्य निकेतन परिवार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप सभी ने बहुत लगन, मेहनत से कार्य करते हुए गौरवशाली 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आपका नाम हमेशा ऊपर रहे, ऐसी हम कामना करते हैं। आपके द्वारा स्वर्णजयंती कार्यक्रम का आयोजन व विभिन्न साहित्यकारों व ब्लॉगर्स का सम्मान करना निश्चित ही सराहनीय है। हाँ, इस कार्यक्रम में गीतिका जी द्वारा प्रस्तुत 'पावर पाइंट प्रजेंटेशन' बहुत अच्छा लगा। यह दर्शाता है कि हमारी गीतिका जी कितनी क्रिएटिव हैं। उन्हें बधाई प्रेषित कीजिएगा। शोध दिशा के अप्रैल-जून अंक में उपर्युक्त जानकारियाँ पढ़ते ही आपको व आपकी टीम को बधाई देने से नहीं रोक पाया और इस पत्र के माध्यम से आप सभी को बधाई प्रेषित कर रहा हूँ। आदरणीय डा॰ मीना जी व आप सभी परिजनों को हमारा प्रणाम।

नीरज अग्रवाल

पी-45, मधुबन पश्चिम-2, किसान मार्ग, टॉक रोड, जयपुर

Just received your 84 page publication SHODH-DISHA of April-June with messages by CMs of MP & Rajasthan, feed back & report of Golden Jubilee celebration of your Institute with speeches with art work by Geetika & Anubhuti with beautiful poem by Geetika 'Badi Ho Gai Hun Na' with articles by several literary dignitaries. It was an exhilarating experience for me to go thro, the above issue for which my heartiest compliments & congratulations ! The remarkable manner in which both of you have nurtured this Institute since last 50 years is most exemplary for which my compliments ! While going thro the progress of your journey of 50 years, I extend my deep admiration for goals you have achieved and tasks you have

performed and the image of Hindi blogging you enhanced. Both you & Meenaji deserve our utmost admiration ! With warm personal regards to you & Ann. Meenaji from myself and Indumati, we remain,

Jagmohan Katakia
PDG, D: 3040 (94-95)
23-B, Kunj Society, Alkapuri Baroda 390 007

'शोध दिशा' का अप्रैल-जून अंक प्राप्त हुआ। बेहद प्रसन्नता हुई जानकर कि हिंदी साहित्य निकेतन ने अपनी स्वर्ण जयंती पूरी की है, आपकी समर्पित कार्य निष्ठा निश्चित ही हम सबके लिए प्रेरक है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। पत्रिका सामग्री और कलेवर दोनों ही दृष्टि से उत्कृष्ट है। पवित्रा अग्रवाल की कहानी 'शुभचिंतक' अच्छी लगी। नीरज गोस्वामी, श्यामल सुमन जी की ग़ज़लें भी सलाहियत से भरपूर हैं, पूर्णिमा वर्मन जी के साक्षात्कार से ब्लॉग-जगत् की सक्रियता और उसकी संभावनाओं की अच्छी पड़ताल हुई है। अविनाश वाचस्पति, गिरीश पंकज जी का व्यंग्य भी रोचक है। स्वर्ण जयंती समारोह की विस्तृत रिपोर्ट तथा हिंदी साहित्य निकेतन के प्रति तमाम वरिष्ठ अग्रज साहित्यकारों के विचार जानना सुखद रहा। आपको पुनः बधाई।

डॉ॰ दिनेश त्रिपाठी शम्स
वरिष्ठ प्रवक्ता, जवाहर नवोदय विद्यालय
ग्राम घुघुलपुर, देवरिया 371201(बलरामपुर) उ॰प्र॰

'शोध-दिशा' (अप्रैल-जून, 2011) की प्राप्ति पर आभार। हिंदी साहित्य निकेतन की स्वर्णिम विकास-यात्रा तथा उसके पचास स्वर्णिम वर्षों का विवरण रोचक एवं प्रेरक लगा। आपके अतीत में मैं भी डूबने लगी, तथा अनुभूति हुई कि किसी भी विशाल भव्य भवन के निर्माण में नींव महत्त्वपूर्ण होती है। कार्यक्रम में आमंत्रित अतिथियों के वक्तव्य भी पढ़े। सुपाठ्य सामग्री परोसने हेतु आप साधुवाद के पात्र हैं। हिंदी साहित्य निकेतन का निरंतर उत्कर्ष हो।

महाश्वेता चतुर्वेदी
24 आँचल कालोनी, श्यामगंज, बरेली (उ॰प्र॰)

'शोध-दिशा' (अप्रैल-जून, 2011) की प्रति प्राप्त हुई। आकर्षक मुखपृष्ठ है तथा अंतर्वस्तु की सामग्री पठनीय है। 'आपसे कुछ बातें' शीर्षक के अंतर्गत शोध-प्रबंधों को पुरस्कार प्रदान करने की योजना सर्वथा सराहनीय है। इस पत्रिका के माध्यम से अपनी प्रगति के पचास वर्षों का जो लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है, वह साहित्य और साहित्यकारों की जानकारी के लिए द्रष्टव्य है। शोध-संदर्भ, शोध-अंक (चौदह भाग) शोधार्थियों के लिए अमूल्य सामग्री है। ब्लॉग के विषय में इस पत्रिका में नई जानकारी दी गई है। ब्लॉग चर्चा, ब्लॉगिंग को बनाएँ तनावमुक्त जीवन का एक हिस्सा, डॉ॰ रामदरश मिश्र की डायरी का एक पृष्ठ, डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने कहा आदि आलेख एवं व्याख्यान ने इस अंक को सारगर्भित स्वरूप प्रदान किया है।

रामशिरोमणि होरिल
साहित्य एवं वैदिक शोध संस्थान, समालकोट, परसीपुर
(भदोही) 221402

लोकप्रिय त्रैमासिक 'शोध-दिशा' का अप्रैल-जून अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ आकर्षक है और उससे भी आकर्षक है उसके अंदर समाई सामग्री, जिसमें मूर्धन्य विद्वानों के बेवाक विचार पढ़ने पर यह ज्ञात हुआ कि इसके प्रणेता डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल एवं उनकी सहधर्मिणी माननीया विदुषी श्रीमती डॉ॰ मीना अग्रवाल ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों को साहित्य-सेवा में सहयोग कर उपकृत किया है। पत्रिका के पृष्ठ 42 से 47 के चित्र देखकर एवं शुभकामनाएँ व संदेश पढ़कर प्रफुल्लित हो गया हूँ, जिसमें डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक' मुख्यमंत्री (साहित्य मनीषी) एवं डॉ॰ रामदरश मिश्र, डॉ॰ अशोक चक्रधर, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ॰मीना अग्रवाल, प्रो॰ प्रभाकर श्रोत्रिय, नरेंद्रकुमार वर्मा, विश्वबंधु गुप्ता, डॉ॰ कुँअर बेचैन, गीतिका गोयल जैसे विद्वानों का समागम है। हिंदी साहित्य निकेतन ने साहित्य की जो सेवा की है, कालजयी है अमर रहेगी। पत्रिका प्रत्येक अंक आकर्षक ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है, जिसके लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

एम॰डी॰ मिश्रा 'आनंद'
कवि एवं साहित्यकार, सब टी॰वी॰ मुंबई
पृथ्वीपुर (टीकमगढ़) म॰प्र॰

'शोध-दिशा' का अप्रैल-जून, 2011 विशेषांक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित स्तरीय साहित्यिक रचनाएँ, पठनीय एवं मननीय हैं। 'हिंदी प्रचारक पत्रिका' में उक्त अंक की चर्चा की जाएगी। आपकी प्रकाशन यात्रा सतत जारी रहते हुए साहित्य की समृद्धशाली परंपरा की श्रीवृद्धि करती रहे, हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं।

विजयप्रकाश बेरी
संपादक, हिंदी प्रचारक पत्रिका
सी-21/30 पिशाचमोचन, वाराणसी 221010

'शोध-दिशा' का अप्रैल-जून, 2011 अंक प्राप्त हुआ। अंक बहुत अच्छा बना है। शोध-दिशा ने हिंदी के क्षेत्र में अपने आप एक नई दिशा को चुनकर अपना एक अतिविशिष्ट स्थान बनाया है। साहित्य के सृजनात्मक पहलुओं—कहानी, निबंध, कविता, नाटक, व्यंग्य आदि को साधने के साथ-साथ शोध-प्रबंधों को जनमानस के सम्मुख रखना भाषा एवं साहित्य की एक बड़ी अभूतपूर्व सेवा इसके द्वारा हुई है।

भूदेव शर्मा
406, सी-58/10, मेकन अपार्टमेंट, सैक्टर-62, नोएडा

कविताएँ काका की

गणपति बप्पा मोरिया 11
जय बोलो बेईमान की 12
आरती श्री उल्लूजी की 13
सु' की सुराही 14
मुफ़्तख़ोर 15
भगवान को ज्ञापन 16
रेलमंत्री का थर्डक्लासी स्वप्न 17
कार-चमत्कार 19
कंजूस-कथा 20
मिलावट 21
पिल्ला-पुराण 22
फ़ायल-महिमा 23
कालेज स्टूडेंट 24
अमृत की परिभाषा 24
राष्ट्रीय अजगर 25
हिंदी बनाम अँग्रेज़ी 26
न्यायालय में भ्रष्टालय 26
नेत्रदान 26
लिंग-भेद 27
बनारसी साड़ी 28
नाम बड़े दर्शन छोटे 29
नाम बड़े हस्ताक्षर खोटे 31

आलेख/कविताएँ

मुस्कुराओ मौत की आँखों में आँखें डालकर/
काका हाथरसी 33
इतने आसान नहीं हैं काका/
प्रो॰ अशोक चक्रधर 37
प्यार किया तो मरना क्या?/
काका हाथरसी 45
स्मृतियाँ मेरे साथ हैं/
डॉ॰ मीना अग्रवाल 48
अतीत के गलियारे से
सुधा ओम ढींगरा 52
काका हाथरसी और मैं/
अविनाश वाचस्पति 56
दो बालकविताएँ/
श्रीमती पुष्पा मित्तल 56
वो घर जो मेरी यादों में बसता है/
गीतिका गोयल 55
काका हाथरसी जी की पुण्य-स्मृति में/
डॉ॰ ब्रजेशकुमार मिश्र 55
साहित्यिक गतिविधियाँ 57

शोध
दिशा
के
आजीवन सदस्य बनिए
और पाइए हिंदी साहित्य निकेतन से
प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य में।

शोध-दिशा के पाठकों के लिए एक विशेष योजना

शोध-दिशा का आजीवन सदस्यता-शुल्क 1500 रुपए है।

हिंदी साहित्य निकेतन की पुस्तकों की सूची पत्रिका के अंत में प्रकाशित की गई है।

कृपया पत्रिका के लिए अपना बैंक ड्राफ़्ट **'शोध-दिशा'** के नाम प्रेषित करें।

पुस्तकों के लिए अपना बैंक ड्राफ़्ट **'हिंदी साहित्य निकेतन'** के नाम से भेजें।

हिन्दी साहित्य निकेतन
16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**
फोन : 01342-263232, 09368141411

जन्मतिथि : 18 सितंबर 1906; स्वर्गवास : 18 सितंबर 1995

भोजन आधा पेट कर, दुगुना पानी पीउ
तिगुनौ स्रम, चौगुन हँसी, बरस सवा सौ जीउ

—काका हाथरसी

गणपति बप्पा मोरिया

प्रजातंत्र-प्रांगण में भगवन् अजब तमाशा होरिया।
—गणपति बप्पा मोरिया!

गांधी जी का चित्र लगाकर, जन-गण-धन पर डालें डाका,
जाने कब कुरसी छिन जाए, फिर कैसे जीएँगे काका।
खोलेंगे अगले चुनाव में, भर लें आज तिजोरियाँ,
—गणपति बप्पा मोरिया!

गालों पर छाई है लाली, चेहरा दमक रहा ज्यों दर्पण,
ये सफेद डाकू हैं, हरगिज नहीं करेंगे आत्मसमर्पण।
जितने पहरेदार बढ़ रहे, उतनी होती चोरियाँ,
—गणति बप्पा मोरिया!

सच्चे स्वतंत्रता सेनानी, 'ताम्रपत्र' को चाट रहें हैं,
जाली सर्टिफिकेट बनाकर, चमचे चाँदी काट रहें हैं।
कूटनीति की पिचकारी से, खेल रहे हैं होरियाँ,
—गणपति बप्पा मोरिया!

फर्स्टक्लास एम.ए. रिजेक्ट कर, ले लें थर्डक्लास बी.ए. को
साहब नहीं छुएँगे पैसा, दो हज़ार दे दो पी.ए. को।
जनसेवा का लगा मुखौटा, दाग दनादन गोलियाँ,
—गणपति बप्पा मोरिया!

मार्केटिंग को जायँ 'हजूरिन' सजकर सरकारी कारों में,
उनके दर्शन को हो जाती, भीड़ इकट्ठी बाज़ारों में।
फ़िल्मी हीरोइन-सी लगतीं, ये राष्ट्रीय चकोरियाँ,
—गणपति बप्पा मोरिया!

लड़के लंबे बाल बढ़ाएँ, केस कटाती हैं कन्याएँ,
बेटे ब्लाउज़ पहिन रहे हैं, बिटिया जी लुंगी लटकाएँ।
धोखे में पड़ जाते 'काका', को छोरा को छोरियाँ?
—गणपति बप्पा मोरिया!

ईमानी अफ़सर को
नीचेवाले बेईमान बना दें,
लालच का पेट्रोल छिड़ककर,
नैतिकता में आग लगा दें।
तू भी खा और हमें खिला,
या बाँध बिस्तरा-बोरिया,
—गणपति बप्पा मोरिया!

जय बोलो बेईमान की

मन मैला, तन ऊजरा, भाषण लच्छेदार
ऊपर सत्याचार है, भीतर भ्रष्टाचार
झूठों के घर पंडित बाँचें, कथा सत्य भगवान् की
जय बोलो बेईमान की!

प्रजातंत्र के पेड़ पर, कौआ करें किलोल
टेप-रिकार्डर में भरे, चमगादड़ के बोल
नित्य नई योजना बन रहीं, जन-जन के कल्याण की
जय बोलो बेईमान की!

महँगाई ने कर दिए राशन-कारड फेल
पंख लगाकर उड़ गए, चीनी-मिट्टी-तेल
'क्यू' में धाक्का मार किवाड़ें बंद हुईं दूकान की
जय बोलो बेईमान की!

बेकारी औ' भुखमरी, महँगाई घनघोर
घिसे-पिटे ये शब्द हैं, बंद कीजिए शोर
अभी ज़रूरत है जनता के त्याग और बलिदान की
जय बोलो बेईमान की!

डाक-तार-संचार का 'प्रगति' कर रहा काम
कछुआ की गति चल रहे, लैटर-टेलीग्राम
धीरे काम करो, तब होगी उन्नति हिंदुस्तान की
जय बोलो बेईमान की!

मिल मालिक से मिल गए नेता नमकहलाल
मंत्र पढ़ दिया कान में ख़त्म हुई हड़ताल
पत्र-पुष्प से पाकिट भर दी, श्रमिकों के शैतान की
जय बोलो बेईमान की!

चैक केश कर बैंक से, लाया ठेकेदार
आज बनाया पुल नया, कल पड़ गई दरार
बाँकी झाँकी कर लो काकी, फाइव ईयर प्लान की
जय बोलो बेईमान की!

न्याय और अन्याय का नोट करो डिरेंस
जिसकी लाठी बलवती, हाँक ले गया भैंस
निर्बल धक्के खाएँ, तूती बोल रही बलवान की
जय बोलो बेईमान की!

वेतन लेने को खड़े प्रोफ़ेसर जगदीश
छहसौ पर दस्तख़त किए, मिले चारसौ बीस
मन-ही-मन कर रहे कल्पना, शेष रक़म के दान की
जय बोलो बेईमान की!

पर-उपकारी भावना पेशकार से सीख
दस रुपए के नोट में बदल गई तारीख
खाल खिंच रही न्यायालय में सत्य-धार्म-ईमान की
जय बोलो बेईमान की!

खड़े ट्रेन में चल रहे काका धक्का खाँय,
पाँच रुपे की भेंट में टू-टायर मिल जाय
हर स्टेशन पर हो पूजा श्री टी०टी० भगवान् की
जय बोलो बेईमान की!

नेता जी की कार से, कुचल गया मजदूर
बीच सड़क पर मर गया, हुई ग़रीबी दूर
गाड़ी को ले गए भगाकर, जय हो कृपानिधान की
जय बोलो बेईमान की!

आरती श्री उल्लूजी की

जय उल्लू पापा! ओम् जय उल्लू पापा।
सब पक्षिन में श्रेष्ठ, अर्थ के फीते से नापा। ओम्।

श्याम सलोने मुख पर शोभित अँखियाँ द्वय ऐसे।
चिपक रहीं प्राचीन चवन्नी चाँदी की जैसे। ओम्।

लक्ष्मी-वाहक दरिद्र-नाशक महिमा जगजानी।
सरस्वती का हंस आपका भरता है पानी। ओम्।

अर्थवाद ने बुद्धिवाद के दाँत किए खट्टे।
विद्वज्जन हैं दुखी, सुखी हैं सब 'तुम्हरे पट्ठे'। ओम्।

जब 'पक्षी-सरकार' बने तुम डबल सीट पाओ।
प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री ख़ुद बन जाओ। ओम्।

सभी लखपती बनें, न हो कोई भूखा-नंगा।
बहे देश के गाँव-गाँव में, नोटों की गंगा। ओम्।

पूँजीवादी पक्षी तुम सम और नहीं दूजा।
वित्तमंत्री, नित्य आपकी करते हैं पूजा। ओम्।

उल्लू जी की आरति यदि राजा-रानी गाते।
'काका' उनके प्रिवीपर्स छिनने से बच जाते। ओम्।

'सु' की सुराही

स्वामी सुतलीदास से बोले सुकवि सुजान,
सु से सुशोभित शब्द को सदा मिला सम्मान।
सदा मिला सम्मान, सु की महिमा है भारी,
किसी कुमारी से सुंदर लगती सुकुमारी।
मित्रानंदन का न हुआ, अब तक अभिनंदन,
'सु' की कृपा से वंदित हुए सुमित्रानंदन।

बेढंगे-बेडौल का उड़ता रहा मखौल,
लगे सुहाना सभी को, सुघड़ शरीर सुडौल।
सुघड़ शरीर सुडौल, रहे यूँ ही श्रीदामा,
कृष्णचंद्र से चरण धुलाए भक्त सुदामा।
बिगड़ जाएँ शुभ कार्य, अगर लग जाएँ भद्रा,
सु से प्रतिष्ठित हुई, कृष्ण की बहिन सुभद्रा।

सुबह सु की माला जपो, हाथ सुमरनी धारि,
मिले सुसुर की कृपा से, सुखद सुलोचनि नारि।
सुखद सुलोचनि नारि, रंग महफ़िल में छाए,
सुरा-सुराही संग सुभाषी साकी आए।
सुरपुर मध्य सुरेंद्र सु की सुषमा से चमके,
सुरमा से बूढ़ी आँखों में यौवन छलके।

स्वामी सुतलीदास से बोले सुकवि सुजान,
'सु' से सुशोभित शब्द को सदा मिला सम्मान।

सुखदायी हों सभी को, सुरभित सुमन-सुगंध,
अतिथि सुखी हो देखकर सुख-सुविधा-सुप्रबंध।
सुख-सुविधा-सुप्रबंध, सुहावत सुमुखि सुकेशी,
हैं सुदेश को हितकारी, सब वस्तु सुदेशी।
यद्यपि सिंधु विशाल, हुई सुप्रसिद्ध सरसरी,
दरी पद-दलित हुई, सु से बन गई सुंदरी।

सारंगी से अधिक है, सुरमंडल का मान,
वही सुगायक जानिए, शुद्ध लेय सुर-तान।
शुद्ध लेय सुर-तान, व्यर्थ है छैल-छबीला,
महफ़िल में वह जमे कि जिसका कंठ सुरीला।
सु से बनी सुसराल, सु को पहिचान अभागे,
फाइन डाउन हुआ सुपरफ़ाइन के आगे।

कड़की होय कुनैन पर मीठे लगें सुनैन,
सु के सबब सुग्रीव को भाए वैद्य सुषेण।
भाए वैद्य सुषेण, ख्याति पाई जन-जन में,
छोड़ कुकर्म, सुकर्म किए जिसने जीवन में।
सुफल उन्हें ही मिला, चले जो सुजन सुपथ पर,
'सुब्रह्मण्यम' हुए प्रतिष्ठित मंत्री पद पर।

शहंशाह नामी हुए, सुलेमान-सुलतान,
पाया सुर्ख गुलाब ने नेहरू से सम्मान।
नेहरू से सम्मान, सु की है अद्‌भुत माया,
देख सुहासिन नर्स, सुन्न हो जाती काया।
सु से सुलह कर बने, सुखी-सुखिया-सुखकारी,
फीका है वह पान कि जिसमें नहीं सुपारी।

सुज्ञ-सुधीजन से सुने, हमने यह सुविचार,
जहाँ काम आवे सुई–कहा करे तलवार।
कहा करे तलवार, जग रहे या कि सो रहे,
सुखानंद जी सुरानंद में मगन हो रहे।
यह सिद्धांत फेमिली प्लानिंग का है सच्चा,
एक सुपुत्र, पाँच पुत्रों से होता अच्छा।

फेल नई कविता हुई, सफल सुगम्य-सुछंद,
नाक सड़े दुर्गंध से, सुखकर लगे सुगंध।
सुखकर लगे सुगंध, सुशिक्षित सुता सुहानी,
कागा से मीठी होती, सुग्गा की बानी।
धन्य सुरासुर विष्णु शिखर पर 'सु' को चढ़ाया,
ले 'वराह अवतार' सुअर का मान बढ़ाया।

कर्ण छिपे इतिहास में, नामी हुए सुकर्ण,
वर्ण उपेक्षित ही रहा, आगे बढ़ा सुवर्ण।
आगे बढ़ा सुवर्ण, सु से चमकाई माला,
जब सुनार ने इस पर तनिक सुहागा डाला।
सुन सुकाव्य यह बोले एक सुधारक चच्चा,
सौ दुष्टों से एक सुष्ट होता है अच्छा।

कंपोजीटर कह रहे, कहाँ करें अब खोज,
सु समाप्त सब हो गए, कैसे हो कंपोज?
कैसे हो कंपोज, हमारा सर चकराया,
हैं विचित्र काका कवि, सु का सुमेरु बनाया।
लंबी कविता पढ़कर, बोर हुए कवि 'राही',
बहुत हो गया, बंद कीजिए 'सु' की सुराही।

मुफ़्तख़ोर

माल मुफ़्त दिल बेरहम, कैसे जान बचायँ?
जिधर देखिए उधर ही, मुफ़्तख़ोर मिल जायँ।
मुफ़्तख़ोर मिल जायँ, न्याय-दर्शन है कैसा?
इन पर लागू हो, कोई कानून न ऐसा।
यदि थोड़ी-सी भी उदारता आप दिखाएँ,
चीज़ भाड़ में गई, आपको भी ले जाएँ।

टैस्ट मैच जब चल रहा, आए प्रातःकाल,
ट्रांजिस्टर को ले गए, बाबू किरकिट लाल।
बाबू किरकिट लाल, माँगने पहुँचे जब हम,
कहने लगे कि यार बड़े बेसब्री हो तुम!
चीज़ ज़रा-सी, इतना शोर मचा रक्खा है,
कविता लिखिए आप, मैच में क्या रक्खा है।

काव्यगोष्ठी जम रही, टपक रही थीं बूँद,
छाता लेकर चल दिए, प्रोफेसर अमरूद।
प्रोफेसर अमरूद, तकाजा भेजा घर पर,
'आप रात लाए थे वह छाता दे दो सर।'
जीभ हिलाई 'सर' ने लेकर एक उबासी,
अभी ले गया है उसको कल्लू चपरासी।

कल्लू खाँ कहने लगे, सुनिए बरखुरदार!
छाता हमसे ले गया, चुन्ना चौकीदार।
चुन्ना चौकीदार, हमारा सीना धड़का,
पता लगा—स्कूल ले गया उसका लड़का।
तान मोड़कर, मूँठ तोड़कर वापिस लाया,
फिर भी हमने छाता, छाती से चिपकाया।

सुबह डाकख़ाने गए, देने टेलीग्राम,
रोनी सूरत में मिले, मिस्टर मुफ़्तीराम।
मिस्टर मुफ़्तीराम, मर गई हैं माता जी,
तार लिखूँगा, ज़रा पैन देना काका जी!
शब्दों की शुमार में था जब ध्यान हमारा,
पैन जेब में खोंस, कर गए आप किनारा।

ले रक्खा है आपने घर पर टेलीफ़ोन,
मुफ़्तख़ोर बातें करें, साधे रहिए मौन।
साधे रहिए मौन, पड़ोसीधर्म निभाएँ,
आधी रात जगाकर, ट्रंककाल कर जाएँ।
पैसे माँगो तो 'काका' कंजूस कहाओ,
गाँठ कटाओ, अथवा टेलीफ़ोन कटाओ।

काका बैठे ट्रेन में, लेकर हिंदुस्तान,
उठा ले गए बर्थ से, उसे एक श्रीमान।
उसे एक श्रीमान, मुफ़्तख़ोरी में माहिर,
उनसे झपट ले गया कोई और मुसाफ़िर।
इससे उस पर, उससे उस पर, उससे उस पर,
ग़ायब था अख़बार, न जाने पहुँचा किस पर?

'फोकट' जी कहने लगे, चार पुस्तकें दाब,
हास्य-व्यंग में आपका 'काका' नहीं जवाब!
काका नहीं जवाब, इन्हें घर पर देखूँगा,
हल्ला मच जाए, वह आलोचना लिखूँगा।
आशावादी बने हुए हम टाप रहे हैं,
पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने चाट रहे हैं।

तीन महीने बाद हम, पहुँचे उनके पास,
आलोचक जी व्यस्त थे, खेल रहे फल्लाश।
खेल रहे फल्लाश, देखकर बोले हमको,
ग़ज़ब हो गया काका! क्या बतलाएँ तुमको।
लगे हुए थे हम कविता की 'तुकबंदी में—
वाइफ ने पुस्तकें बेच डालीं रद्दी में'।

ज्ञानी गुनिजन कह गए, निज जीवन का सार,
पत्नी-पुस्तक-लेखनी, कभी न देउ उधार।
कभी न देउ उधार, नहीं वापिस आ पाएँ,
यदि आएँ भी तो खराब होकर के आएँ।
रक्षा संभव है, डाकू-बरजोर-चोर से,
लेकिन बहुत कठिन है, बचना मुफ़्तख़ोर से।

भगवान को ज्ञापन

पंद्रह अगस्त को–
हास्यरसी कवियों का लेकर डेपूटेशन
पहुँच गए हम बैकुंठधाम स्टेशन।
गेट पर खड़ा हुआ दरबान
हो गया हक्का-बक्का
घुस गए अंदर
देकर उसे धक्का।

नारे लगाए–
जय नारायण, जय परमात्मा,
ज्ञापन लेकर आई हैं कुछ आत्मा।
अंदर से आवाज़ आई–
'क्या शोर-शराबा है, कौन हैं ये दुस्साहसी?'
हमने कहा–
'काका हाथरसी, बेधड़क बनारसी,
अल्हड़-भुल्लड़, डंठल-कुल्लड़,
सनीचर-फटीचर-भौंपू-हुल्लड़।'

'किसलिए आए हैं?'
'क्रांतिकारी कल्पनाएँ लाए हैं।'

सांसारिक नर-नारी–
नवीनता की ओर बढ़ रहे हैं,
आप बेख़बर होकर
क्षीर-सागर में शयन कर रहे हैं।

यही दशा रही तो
विरोधी दल हथिया लेगा सत्ता,
कट जाएगा बैकुंठ से आपका पत्ता।
जन-गण-मन पर डालने के लिए इंप्रेशन
नोट कीजिए हमारे सप्तसूत्री सजेशन–

1
मानव-बॉडी का वर्तमान ढाँचा
'आउट ऑफ़ डेट' हो गया है,
इसे बदल दीजिए
संविधान में संशोधन कीजिए।

2
मनुष्यों को दे दिए हैं आपने दो-दो कान
इनका दुरुपयोग करता है इंसान,
किसी भी बात को गंभीरता से नहीं लेता है
इस कान से सुनकर उस कान से
निकाल देता है।
आइंदा के लिए नोट कीजिए,
एक आदमी को, एक ही कान दीजिए।

3
कान के बदले में–
सिर के चारों ओर आँखें फिट कर दीजिए चार
सौंदर्य को मुड़-मुड़कर
नहीं देखना पड़ेगा धर्मावतार।

4
नेत्रों की ज्योति घटती जा रही है,
इनमें एक्सरे वाले, ऐसे लैंस कीजिए एडजस्ट,
नेताओं की अंतरात्मा दीख सके स्पष्ट।
फिर, जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे,
दलबदलू वोट नहीं ले सकेंगे।

5
महिलाओं की जिह्वा
ज़रूरत से ज़्यादा लचीली बना दी है आपने।
बोलती है तो बोलती चली जाती है ऐसे,
रौटरी मशीन चल रही हो जैसे।
जहाँ इकट्ठी हो जाएँ देवियाँ चार,
कोई प्रोग्राम नहीं जम सकता सरकार।
इनकी जीभ–
कुछ छोटी कर दीजिए या मोटी कर दीजिए।

6
छात्राओं पर आवाज़कशी करते हैं गुंडे
उनकी सुरक्षा का प्रबंध कीजिए
प्रत्येक लड़की के सिर में
दो-दो सींग फिट कर दीजिए।
कालेज हो या मार्केट
जहाँ भी कोई छेड़े, फाड़ दें उसका पेट।

7
शासन में आकर्षण लाने के लिए
समाजवादी क़दम उठाइए दीनानाथ
आप 'चतुर्भुज' बने हुए हैं
हमको केवल दो हाथ?
या तो आप भी दो रखिए
या हमको भी चार दिलवाइए।
ज्ञापन लीजिए
हस्ताक्षर कीजिए!

अंत में–
बुलाकर हमको एकांत में
चुपके से समझाया भगवान ने–
'वत्स काका!
जनता को मत भड़काओ
लो ये दस सहस्र मुद्राएँ
पीओ, खाओ मौज उड़ाओ।'
हमने कहा–'गुरू!
स्वतंत्रता की 50वीं जयंती मनाएँगे
पचास हज़ार लिए बिना नहीं जाएँगे।'

रेलमंत्री का थर्डक्लासी स्वप्न

रेलमंत्री ने संतरी को बुलाया एकांत में–
'सुनो मलखान!
जानते हो वेश बदलकर
क्यों घूमते थे अकबर महान?
इसी तरह प्राप्त होता है,
जनजीवन का वास्तविक ज्ञान।
चलोगे हमारे साथ,
थर्ड क्लास के सफ़र का स्वाद लेने?'
संतरी चकित
आधा प्रसन्न, आधा उदास
'हुजूर, आप और थर्डक्लास?'
'धीरे बोलो–
कल सुबह चलना है,
जो भी मुसीबत आए, उसे सहना है।'
इसी मंत्रणा में मंत्रीजी सो गए,
विचार-सागर में खो गए।
भीड-भाड़ से भरपूर–'दिल्ली जंक्शन'
थर्डक्लास की खिड़की पर
दो सौ गज लंबा क्यू,
पहिले मैं, पीछे तू।
'जेबकतरों से सावधान' का बोर्ड देखकर
यात्रियों ने अपनी-अपनी पाकिट सँभाली,
कलाकारों ने भाँप लिया,
किसकी भरी है, किसकी ख़ाली।
जिन स्टेशनों पर ऐसे बोर्ड नहीं लगाती सरकार,
वहाँ अपने ख़र्चे से लगवा देते हैं पॉकिटमार।
डिब्बे खचाखच, दरवाज़े ठसाठस,
मंत्री जी को सीधा लिटाकर–
संतरी ने ठूँस दिया खिड़की में।
अंदर तो पहुँच गए, बैठने को भटक रहे हैं।
संतरीजी पायेदान पर लटक रहे हैं।
झंडी हिली, गाड़ी चली,
मंत्रीजी चिल्लाए अंदर से–
'अरे किधर है मलखान?'
'मौत के मुँह में हूँ श्रीमान'
'हमारा भी दम घुटा जा रहा है यार'

'बाथरूम में घुस जाइए सरकार'
'वह तो पहले से ही रिजर्व है
दो बाहर अड़े हैं, तीन भीतर खड़े हैं।'

यकायक गाड़ी रुकी, धक्का आया
मंत्री जी का सिर
एक महिला से टकराया।
बोली फुफकार कर–
फूट गई हैं क्या? अभी मजा चखा दूँगी–
मारते-मारते 'चरणसिंह बना दूँगी।'

मंत्री जी कुछ कहने ही वाले थे–
अपर बर्थ से बोले एक खद्दरधारी,
'नारी से लड़ोगे? ऐसी ठोकर मारेगी,
विरोधियों में जा पड़ोगे।'

'यह क्या हो रहा है?
ट्रेन पीछे को वापिस चल रही है,
उल्टी गंगा, क्यों बह रही है?'
'चुप रहो,
गार्ड साब की प्रेमिका
प्लेटफार्म पर रह गई है।'
उसको रिसीव करके
गाड़ी पुनः आ रही है।
हर तीसरे मील पर
जंजीर खींची जा रही है।
बेटिकिट यात्री–
अपने-अपने घरों का रास्ता नाप रहे हैं,
गार्ड और टी॰टी॰ टुकुर-टुकुर टाप रहे हैं।
कौन करे, इन लोगों से संग्राम?
बूढ़ा मरे या जवान
हमें तनुखा से काम।

डिब्बों में अंधकार छा रहा है,
'ब्लैक आउट' का मज़ा आ रहा है।
गाड़ी पुल पर धड़ाधड़ चल रही है,
'गंगामाई की जय' बुल रही है।
'धड़ाम धड़ाम धम्म' ...
पुल टूट गया,
इंजन से डिब्बों का संबंध छूट गया।

'सुनो मलखान!
जानते हो वेष बदलकर
क्यों घूमते थे अकबर महान?
इसी तरह प्राप्त होता है,
जनजीवन का वास्तविक ज्ञान।'

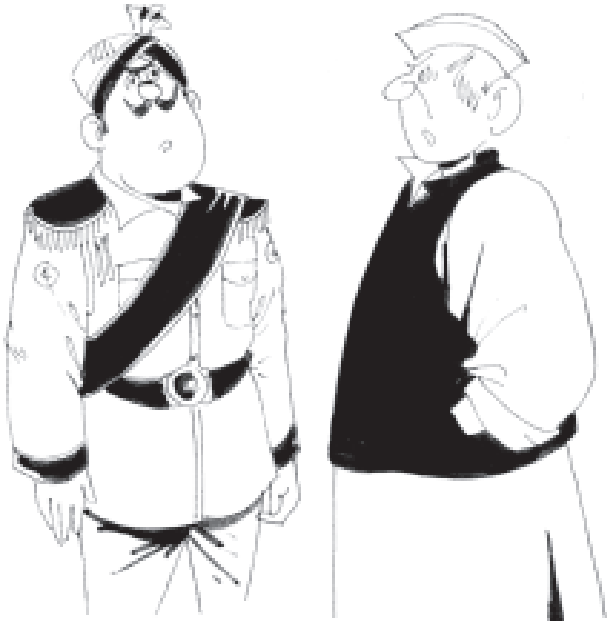

डूबते हुए मंत्री जी ने
संतरी का पाजामा पकड़ लिया है
संतरी झटका मारकर छुड़ा रहा है।
'दूर रहिए दूर, मुझे बख़्शिए हुज़ूर,
बहुत सेवा कर चुका तुम्हारी
परलोक में जिम्मेदारी नहीं है हमारी।'

सबेरा हुआ–
मंत्री जी आँख मीड़ते हुए उठे–
सबसे पहले संतरी को बुलाया,
हुकुम सुनाया–
'यात्रा-प्रोग्राम कैंसिल!
आज से सर्विस ख़त्म हुई तेरी,
स्वप्न में भी दगा दे गया
तो जाग्रत में क्या रक्षा करेगा मेरी?'

कार-चमत्कार

(इसमें 64 कार हैं, सरकार)

अहंकार जी ने कहा लेकर एक **डकार**,
कितने **कार** प्रकार हैं, इस पर करें विचार।
इस पर करें विचार, कार को **नमस्कार** है,
ओंकार में **निर्विकार** में व्याप्त कार है।
निरंकार या **निराकार** का चक्कर छोड़ो,
कलियुग में **साकार** ब्रह्म से नाता जोड़ो।

मजिस्ट्रेट के कोर्ट में, होने लगी **पुकार**,
पेशकार के सामने पहुँचा **पैरोकार**।
पहुँचा पैरोकार, प्रभो **उपकार** कीजिए,
आया एक **शिकार**, उसे **स्वीकार** कीजिए।
पुरस्कार है यह, इससे **इंकार** न करिए,
साधिकार सुखकार नोट पाकिट में धरिए।

तदाकार हो जाइए, तजकर **मनोविकार**,
सरोकार क्या कौन पर, किसका है **अधिकार**?
किसका है अधिकार, आपसे हमें प्यार है,
पूर्व जन्म के **संस्कार** का **चमत्कार** है।
पत्रकार अपकार करे **प्रतिकार** न करिए,
काव्यकार औ' **व्यंगकार** से बचकर रहिए।

पड़े कला के फेर में **चित्रकार-छविकार**,
नृत्यकार जी रट रहे, कत्थक के '**तथकार**'।
कत्थक के तथकार, बिचारे **गीतकार** जी,
करें प्रतीक्षा, नहीं मिले **संगीतकार** जी।
कलाकार, **बेकार** सड़क पर घूम रहे हैं,
साहूकार सेफ़ से चिपके झूम रहे हैं।

'बद' अच्छा लेकिन बुरा होता है **बदकार**,
मूर्धन्य **मक्कार** हैं, गुरू **भूदराकार**।
गुरू भूदराकार, आप तो **जानकार** हैं,
उनके चेले उच्चकोटि के **चाटुकार** हैं।
श्री **भ्रष्टालंकार** तख़्त पर बैठे जब तक,
अंधकार यह दूर नहीं हो सकता तब तक।

ताऊजी थे तबलिया, मामाजी, मुख़्तार,
बीनकार थे बापजी, दादा **लेखाकार**।
दादा लेखाकार, बनी तकदीर हमारी,
करी वकालत पास, हुए **उत्तराधिकारी**।
पुरखाओं की मिक्श्चर-कल्चर निभा रहे हैं,
मुवक्किलों के सर पर तबला बजा रहे हैं।

पड़ी नहीं जिस पर कभी, पत्नी की **फटकार**,
उस भौंदू भरतार को लाख बार **धिक्कार**।
लाख बार धिक्कार, न **हाहाकार** कीजिए,
तिरस्कार दुतकार सभी का स्वाद लीजिए।
बहिष्कार कर दें तो भी हिम्मत मत हारो,
वे मारें **फुफकार** आप उनको पुचकारो।

काकीजी की कर रहे काका **जैजैकार**,
तुकमिल्ला कुछ कार के बतला दो **सरकार**।
बतला दो सरकार, चपल नैना मटकाए,
अलंकार झंकार और **टंकार** बताए।
'ड्राइंग के **दूकानदार** पर जल्द जाइए,
मुन्ने को **दरकार**, एक **परकार** लाइए।'

कंजूस-कथा

ख्यातिप्राप्त कंजूस थे श्री पिस्सूमल सेठ,
पंडा आए गया से, हुई सेठ से भेंट।
हुई सेठ से भेंट, बही में नाम दिखाए,
पिंडदान करने के फलादेश समझाए।
लाला बोले–'हमें नहीं माफ़िक आता है,
दान-धर्म से दर्द पेट में हो जाता है।'

पंडा जी करवाएँगे खर्च अनाप-शनाप,
पिंडदान चुपचाप हम कर लें अपने-आप।
करलें अपने-आप, दक्षिणा-खर्च बचेगा,
वेश बदलकर जाएँ, न कोई पहचानेगा।
बैठ मुसाफिरखाने में यह काम कर लिया,
चने और सत्तू खा करके पेट भर लिया।

धर्म-कर्म में देवियाँ रखती हैं विश्वास,
इसीलिए पंडा गए सेठानी के पास।
सेठानी के पास, 'देवि! पति को समझाओ,
पितरों का ऋण चढ़ा हुआ है, उऋण कराओ!'
आश्वासन, पालागन द्वारा पेट भर दिया,
चाय पिलाकर पंडा जी को विदा कर दिया।

लाला आते रात्रि को, करके बंद दुकान,
'पिंडदान कब करोगे,' लाली खाती कान।
लाली खाती कान, सहन कब तक कर पाते,
रस्सी के घिस्सों से लोहे भी कट जाते।
कहँ काका, झुक गए अंत में तिरिया-हठ पर,
रेल-किराया दाब चल दिए यात्रा-पथ पर।

स्टेशन से शहर में करने लगे प्रवेश,
चेहरे पर थी दीनता, फटेहाल था वेश।
फटेहाल था वेश, जा रहे लपके-लपके,
डंडा लिए सामने पंडा जी आ टपके।
'वाह सेठ! यह रूप बनाया कैसा तुमने?
मुश्किल से जिजमान तुम्हें पहचाना हमने।'

'बोल रहे हैं मंत्र हम, आप करो अस्नान,
पिंड तभी स्वीकार हों, करो स्वर्ण का दान।'
'करो स्वर्ण का दान, गुरू मत देखो सपने,
सोना क्या, लोहा भी पास नहीं है अपने।'
पंडा जी ने कहा, 'सेठ, क्यों घबराते तुम,
कर दीजे संकल्प, बाद में ले लेंगे हम।'

पिस्सूमल कहने लगे, 'छोड़ो सभी विकल्प,
सवा रुपे के स्वर्ण का छुड़वा दो संकल्प।'
छुड़वा दो संकल्प, गुरू ने आँख तरेरी,
'तीर्थ घाट पर क्यों हेटी करते हो मेरी!'
पंडा का रुख देख, बढ़ा कुछ और हौसला,
बढ़ते-बढ़ते पाँच रुपे में हुआ फैसला।

लाला घर को चल दिए, किया तीर्थ को पार,
पंडा जी के हो गए रुपए पाँच उधार।
रुपए पाँच उधार, महीना तीन बिताए,
अपना धन वसूल करने को पंडा आए।
लाला बोले लड़के से, 'सुन, बेटा घिस्सू!
कह दीजो, बीमार पड़े हैं पापा पिस्सू!'

पंडा जी कहने लगे, 'छोड़ूँ सारे काज, 'मैंलें आप मिला

काएखुदेओहो! कोछूँ इलिहाज, खुद हीनाकस्दैंना
इसूताक,रभाग जाएभबीमारी, जायँ जड़ी-बूहियोंज।
केाअनुभाअँ मेंमह्यागुज़ारीवाचन क्योंघोबोत्वीसएको?'
एफ्नीदवाबोहुँचाई अंजीते-जी मैं रोबाँले सैकसे?'
'कर्म्हें सेअल्दीलकासे, 'नहीं माधेरगी कबपरतांक,
डंडा एक लगे, रोएगी घंटे-भर तक।'

झूठ-मूठ रोने लगी, समझ पिया की नीत,
'हाय-हाय' को सुन हुए पंडा जी भयभीत।
पंडा जी भयभीत, पड़ा मूजी से पाला,
कहा कान में, 'मेरे रुपये दे दो लाला!
आज न दोगे, जन्म दुबारा लेना होगा,
दान किया धन नहीं पचेगा, देना होगा!'

पिस्सूमल कहने लगे, 'भाग जाउ चुपचाप,
करूँ शिकायत पुलिस में, फँस जाओगे आप।
फँस जाओगे आप, आ रही हैं उबकाई,

मिलावट

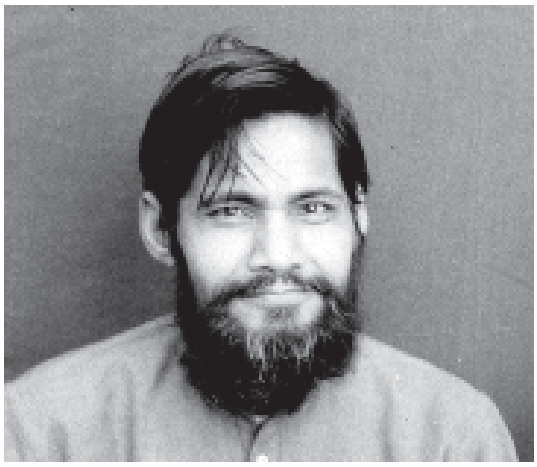

मनसुख लाल मुनीम से, बोले कुशलकिशोर
मेल-मिलावट के लिए, व्यर्थ मच रहा शोर
व्यर्थ मच रहा शोर, जानते सब विज्ञानी
हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिल, बनता पानी
कहँ 'काका' कविराय, शहद में गुड़ का शीरा
पहुँचाता है लाभ, गोंद में मिला कतीरा

वेद-शास्त्र सबने यही, तथ्य किया स्वीकार
मिलकर माया-ब्रह्म यह, सृष्टि हुई तैयार
सृष्टि हुई तैयार, विधाता स्रष्टाचारी
शब्द बिगड़कर यही हो गया भ्रष्टाचारी
कहँ 'काका' कर रहे, मिलावट की क्यों निंदा
चलने दो व्यापार, भजो राधे गोविंदा

कपट-कंपनी ने किए, पैदा पंद्रह लाख
मिला-मिला सीमेंट में, फ़िफ्टी-फ़िफ्टी राख
फिफ्टी-फिफ्टी राख, साख को लगा न धक्का
क्योंकि चढ़ाते रहे, बड़े साहब पर छक्का
कहँ 'काका', क्या करे, अगर बिल्डिंग फट गई
फर्म कर दिया ख़त्म, मुनाफ़ा सभी बँट गई

कभी घूस खाई नहीं, किया न भ्रष्टाचार
ऐसे भोंदू जीव को, बार-बार धिक्कार
बार-बार धिक्कार, व्यर्थ है वह व्यापारी
माल तोलते समय न जिसने डंडी मारी
कहँ 'काका', क्या नाम पाएगा ऐसा बंदा
जिसने किसी संस्था का, न पचाया चंदा

जाने क्या तुमने जहरीली दवा पिलाई!'
कह पंडा घबराय, 'दया ब्राह्मण पर कीजे,

पिल्ला-पुराण

पिल्ला बैठा कार में, मानुष ढोवें बोझ
भेद न इसका मिल सका, बहुत लगाई खोज
बहुत लगाई खोज, रोज़ साबुन से न्हाता
देवी जी के हाथ, दूध से रोटी खाता
कहँ 'काका' कवि, माँगत हूँ वर चिल्ला-चिल्ला
पुनर्जन्म में प्रभो बनाना, हमको पिल्ला

परमेश्वर से भी बड़े, कहे जात हैं नंग
इसीलिए पिल्ला कबहुँ, वस्त्र न धारत अंग
वस्त्र न धारत अंग, रंग यौवन का आए
भागे-भागे फिरें, काम जब इन्हें सताए
कहँ 'काका' कविराय, शीघ्र पंडित बुलवाऊँ
सुंदर पिलिया-संग आपका, ब्याह रचाऊँ

या असार संसार में, क्यों चाहत संतान
जब घर में मौजूद हैं, पिल्ला पुत्र-समान
पिल्ला पुत्र-समान, दुक्ख दारिद्र हरेगा
मर जाने पर प्यारा पिल्ला, पिंड भरेगा
कहँ 'काका' कविराय, अरे ओ बागड़बिल्ला
जो चाहे उद्धार, पाल कुत्ते का पिल्ला

काका-कोश

रक्षक को भक्षक समझ उन्नति माने रेड़
नेता माने भेड़िया, जनता माने भेड़
जनता माने भेड़, अर्थ उल्टा पहचानो
जनसेवक का सही अर्थ, तनसेवक मानो
'काका' कवि का कोश, अनोखा और अजूबा
संत फतेहसिंह के मानी, पंजाबी सूबा

अफ़सर माने रौब है, इनकम माने टैक्स
भौंरा माने भगत जी, पूजन माने सैक्स
पूजन माने सैक्स, सती नारी दुखियारी
टॉपलैस माने शिक्षित, आधुनिका नारी
समय-समय पर अर्थ, बदल जाते युग-युग में
गिरहकट्ट को 'कलाकार', कहते कलियुग में

रिश्वत माने हक्क है, इज़्ज़त माने नाक
मक्खन माने खुशामद, झगड़ा माने 'पाक'
झगड़ा माने पाक, बात यह सच्ची मानो
मुँह पर करे प्रशंसा, उनको 'चमचा' जानो
कह 'काका' कवि, अणुबम माने सत्यानाशम्
खाड़ी युद्धम् तेल कुओं का अठ्यानाशम्

भूतपूर्व का अर्थ है, बहुत पुराना भूत
मात-पिता जिससे डरें, उसका नाम सपूत
उसका नाम सपूत, मूँग छाती पर दलता
आज़ादी के माने, समझो उच्छृंखलता
बदल गए शब्दार्थ, क्योंकि बदली मर्यादा
चेला माने गुरू, गुरू के माने दादा

टीचर माने फ़टीचर, बाबू माने दास
फोड़ा माने डाक्टर, घोड़ा माने घास
घोड़ा माने घास, चंट को निपुण मानिए
सच्चा-सीधा होय, उसी को गधा जानिए
श्री निरक्षराचार्य, बने बैठे आचारी
काकी माने पर्स, नर्स माने बीमारी

कालेज स्टूडैंट

फ़ादर ने बनवा दिए तीन कोट, छै पैंट
लल्लू मेरा बन गया कालिज स्टूडैंट
कालिज स्टूडैंट, हुए होस्टल में भरती
दिन-भर बिस्कुट चरें, शाम को खायँ इमरती
कहँ काका कविराय, बुद्धि पर डाली चादर
मौज कर रहे पुत्र, हड्डियाँ घिसते फ़ादर

पढ़ना-लिखना व्यर्थ है, दिन-भर खेलो खेल
होते रहु दो साल तक फ़र्स्ट इयर में फ़ेल
फर्स्ट इयर में फ़ेल, जेब में कंघा डाला
स्कूटर ले चल दिए, लगा कमरे का ताला
कहँ काका कविराय, गेटकीपर से लड़कर
मुफ़्त सिनेमा देख, कोच पर बैठ अकड़कर

प्रोफ़ेसर या प्रिंसिपल बोलें जब प्रतिकूल
लाठी लेकर तोड़ दो मेज़ और स्टूल
मेज़ और स्टूल, चलाओ ऐसी हाकी
शीशा और किवाड़ बचे नहिं एकउ बाक़ी
कहँ 'काका' कवि, राय भयंकर तुमको देता
बन सकते हो इसी तरह 'बिगड़े दिल नेता'

फ़ाइल-महिमा

फ़ाइल, तू बड़भागिनी, कौन तपस्या कीन?
4नेता अफ़सर क्लर्क सब, हैं तेरे आधीन
हैं तेरे आधीन, मिनिस्टर बाहर जाते
पत्नी को घर छोड़, साथ तुझको ले जाते
कहँ 'काका' वादी-प्रतिवादी हा-हा खाएँ
जज, वकील औ' ज़िलाधीश जी, शीश नवाएँ

कोर्ट-कचहरी, दफ़्तरों में फ़ाइल की धूम
पूजा तेरी सब करें, हों उदार या सूम
हों उदार या सूम, 'दक्षिणा' लेकर आते
तब बाबू फ़ाइल के, दर्शन उन्हें कराते
कहँ 'काका', तहसील, फ़ौजदारी, दीवानी
चहुँ दिशि तेरा राज, बनी बैठी पटरानी

लाला, बाबू, बौहरे, संत, महंत, अमीर
तेरे फ़ीते में बँधी, लाखों की तकदीर
लाखों की तक़दीर, कभी तू खो जाती है
तो आफ़िस में, महाप्रलय-सी हो जाती है
कहँ 'काका' कविराय, बिगड़ जाती जब फ़ायल
बड़े-बड़े श्रीमानों को, कर देती घायल

अमृत की परिभाषा

'काका-कोश' के लिए हम नए शब्द गढ़ रहे थे,
तर्क की सीढ़ियाँ लगाकर,
साहित्य के टीले पर चढ़ रहे थे
अचानक ही आ धमके आधुनिक 'दुर्वासा'
कहने लगे–
'बताओ अमृत की परिभाषा?'

हमने कहा–
'अमृत माने विष'
उन्होंने कहा– 'हिश्'
सुनकर महर्षि की झिड़की
खुल गई हमारे मस्तिष्क की खिड़की
हमने उनके स्वर से भी
एक सप्तक ऊँचे स्वर में
अपने वाक्य को दुहराते हुए कहा–
'हाँ-हाँ, अमृत माने विष
और विष माने अमृत।
कैसे? ऐसे
संखिया के योग से ही आज
बन रही हैं हज़ारों-लाखों औषधियाँ
जिनसे नवजीवन पा रहे हैं
रोगी, जोगी, भोगी
यह है विष का प्रताप
किंतु अमृतधारा की पूरी बोतल पी जाएँ
तो तत्काल मर जाएँगे आप
घबराइए नहीं, सुनते रहिए चुपचाप।

मीठा माने कड़वा, कड़वा माने मीठा
कड़वी सैक्रीन की एक बाजरे-सी गोली
पानी में घोली, बन गया शर्बत मधुर
है आश्चर्य की बात?
मिलाइए हाथ।'

इस पर क्रुद्ध होकर दुर्वासा जी ने
हमको शाप देने के लिए
अपने मुखारविंद का
फाटक खोला,
हमने उसमें उँडेल दिया 'काका कोला'।
वे घूँट पर घूँट लेते गए
हम भाषण देते गए–
सुरा माने बुरा
और बुरा माने भला,
शराब पी-पीकर सैकड़ों लाखपति
हो गए खाकपति
लेकिन उसी की चार बूँदों से
ठीक हो गया बुद्धू मियाँ का निमोनिया।

महर्षि ने भृकुटी तानी
हम कहते गए अपनी कहानी–
'मुँह पर काली स्याही पोत ले मानव
लगेगा जैसे दानव, किंतु,
उसी स्याही की एक पतली-सी रेखा
नयनों के नीचे
खींच ले चाची चंद्रलेखा
तो सीटी बजा-बजाकर
दाद देंगे चचा चुकंदर–
'अति सुंदर, अति सुंदर!'

राष्ट्रीय अजगर

तुम तो व्यर्थ की बातें करते हो संपादक जी!
राजनीति को समझते नहीं,
तर्क करते हो,
इश्क करने की तमीज़ नहीं,
आहें भरते हो !

देखो बंधु!
तुम हो केवल साहित्य-स्रष्टा
और हम ठहरे राजनीतिज्ञ,
भविष्य-द्रष्टा
इतना अंतर है हममें और तुममें–
जितना देशी और विलायती
कुत्ते की दुम में!
बुरा मत मानना दोस्त!
स्वार्थ और सिद्धांत में
जब होती है टक्कर
तो बड़े-बड़े
तीसमारखाँ
काट जाते हैं चक्कर!

मैं पूछता हूँ
राजभाषा-विधेयक पास हो गया
तो क्या प्रलय हो गई यार?
शोर मचाते हो बेकार !
वह तो होना ही था
हिंदी को दासी बनकर रोना ही था!
रही संविधान में संशोधन की बात
सो वह भी ठीक ही हुआ
जो वस्तु जिसने बनाई,
वह उसे तोड़ सकता है
मोड़ सकता है, घटा सकता है,
जोड़ सकता है।
कल्लू कुम्हार मूड में आ जाए तो
अपने स्वनिर्मित घड़े को
फोड़ सकता है
'ही इज ऑथोराइज़्ड'
उसे अधिकार है ऐसा करने का
फिर क्या कारण है डरने का?

रामायण में स्पष्ट लिखा है भाई
'समरथ को नहिं दोष गुसाई'

क्या कहा ... समर्थन?
हाँ-हाँ, चुनाव लड़ते समय हमने किया था
समर्थन हिंदी का
और अब करते हैं अँग्रेज़ी का
अवसर आएगा तो पक्ष लेंगे
तेलुगू, तमिल, उर्दू और उड़िया का
शराब की बोतल
और भंग की पुड़िया का।

सौ बातों की एक बात है तात!
दूल्हा के इशारे पर चलती है बारात
अपन तो
जैसा देखते हैं सरकार का रंग
वैसी ही उड़ाते हैं पतंग।
अब तुम्हीं बताओ डियर!
हिंदी की हिमायत करके
मैं पार्टी से विद्रोह करता?
पद छोड़कर भूखों मरता?
कहीं फँस जाता रिश्वत के कांड में
और चरनी पड़ती जेल की घास
तो क्या बचा लेते हिंदी के हिमायती
सेठ गोविंददास?
इसलिए हे अँग्रेजी रानी!
तुम्हारी जय-जयकार!
आलीशान कोठी, चमचमाती कार
फ्री-होल्ड बिजली, मुफ़्त का पानी
थैलियाँ, दावत, मानपत्र, मेहमानी।
चुनाव जीत जाएँ, तो क्या कर लेंगे
आडवाणी?

यहाँ तो अब तक जैसी घुटती रही है
वैसी ही घुटेगी
आदत जो पड़ गई, नहीं वह छुटेगी
क्योंकि हम अजर हैं, अमर हैं
राष्ट्रीय अजगर हैं!

हिंदी बनाम अँग्रेज़ी

हिंदी माता को करें, काका कवि डंडौत
बूढ़ी दासी संस्कृत, भाषाओं का स्रोत
भाषाओं का स्रोत कि 'बारह बहुएँ' जिसकी
आँख मिला पाए उससे, हिम्मत है किसकी?
ईर्ष्या करके ब्रिटेन ने इक दासी भेजी
सब बहुओं के सिर पर चढ़ बैठी अँगरेज़ी

गोरे-चिट्टे-चुलबुले, अंग-प्रत्यंग प्रत्येक
मालिक लट्टू हो गया, नाक-नक्श को देख
नाक नक्श को देख, डिग गई नीयत उसकी
स्वामी को समझाय, भला हिम्मत है किसकी?
अँगरेज़ी पटरानी बनकर थिरक रही है
संस्कृत-हिंदी दासी बनकर सिसक रही हैं

परिचित हैं इस तथ्य से, सभी वर्ग-अपवर्ग
सास-बहू में मेल हो, घर बन जाए स्वर्ग
घर बन जाए स्वर्ग, सास की करें हिमायत,
प्रगति करे अवरुद्ध, भला किसकी है ताकत?
किंतु फिदा दासी पर है 'गृहस्वामी' जब तक
इस घर से वह नहीं निकल सकती है तब तक

न्यायालय में भ्रष्टालय

न्याय प्राप्त करने गए, न्यायालय के द्वार
इसी जगह सबने अधिक पाया भ्रष्टाचार
पाया भ्रष्टाचार, मिसल को मसल रहे हैं
ईंट-ईंट से रिश्वत के स्वर निकल रहे हैं
कहँ 'काका', जब पेशकार जी घर को आए
तनुखा से भी तिगुने नोट दबाकर लाए

प्लीडर, मुंशी, मुहर्रिर सब निचोड़ लें अर्क
सायल को घायल करे, फ़ायल वाला क्लर्क
फ़ायल वाला क्लर्क, अगर कुछ बच जाएगा
वह चपरासी के इनाम में पच जाएगा
कहँ काका, जो जीत गया सो हारा समझो
हार गया, सो पत्थर से दे मारा समझो

सिविल कोर्ट के 'फोर्ट' में बाबू करते लूट
एक हज़ार का सूट है, दो सौ के हैं बूट
दो सौ के हैं बूट, फ्रूट औ' मक्खन खाएँ
मित्रों के संग पिएँ, पिलाएँ, मौज उड़ाएँ
इसके घर में दूध-दही की बहती गंगा
छाछ पी रहा दीन मुवक्किल होकर नंगा

गए गाँव से कचहरी, करके लंबा टूर
डेढ़ बज गया कोर्ट में आए नहीं हुजूर
आए नहीं हुजूर, किसी का केस न लेंगे
क्योंकि आज सरकार मैटनी शो देखेंगे
कहँ काका कविराय, नोट दस का सरकाएँ
पेशकार जी तब अगली तारीख़ बताएँ

नेत्रदान

नेत्रदान के पक्ष में थे डाक्टर 'रजदान',
हाथ जोड़ हमने कहा– 'क्षमा करें श्रीमान्।'
क्षमा करें श्रीमान्, लगाकर आँख हमारी,
सूरदास ने किसी सुघड़ नारी पर मारी।
तो बतलाओ उस अंधे का, क्या बिगड़ेगा,
आँख हमारी, हमको ही तो पाप लगेगा।

लिंग-भेद

'काका' से कहने लगे, ठाकुर ठर्रासिंग,
दाढ़ी स्त्रीलिंग है, ब्लाउज है पुल्लिग।
ब्लाउज है पुल्लिग, भयंकर ग़लती की है,
मर्दों के सिर पर टोपी-पगड़ी रख दी है।
उछला उनका पर्स रो रही अपनी पाकिट,
उनका लहँगा महँगा, सस्ती पति की जाकिट।

देख विरोधाभास को लागी दिल पर चोट
दोनों ही पुल्लिग हैं, जम्पर-पेटीकोट।
जम्पर-पेटीकोट, खोट क्या अपना भाई,
स्त्रीलिंग हैं सभी, पैंट, बुश्शर्ट व टाई।
कहँ काका कविराय, पुरुष की किस्मत खोटी,
मिसरानी का जूड़ा, मिसराजी की चोटी।

दुलहिन का सिंदूर से शोभित हुआ ललाट,
दूल्हा जी के तिलक को रोली हुई अलाट।
रोली हुई अलाट, टॉप्स, लॉकिट, दस्ताने
छल्ला, बिछुआ, हार नाम सब हैं मर्दाने।
कहँ काका कविराय, पहनतीं बाला 'बाला'
स्त्रीलिंग ज़ंजीर गले लटकाते लाला।

लाली जी के सामने लाला पकड़ें कान,
उनका घर पुल्लिग है, स्त्रीलिंग दुकान।
स्त्रीलिंग दुकान, नाम यह किसने छाँटे,
काजल, पाउडर हैं पुल्लिग नाक के काँटे।
कहँ काका कविराय, विधाता-भेद न जाना,
मूँछ मर्द को मिलीं किंतु है नाम जनाना।

ऐसी-ऐसी सैकड़ों, अपने पास मिसाल,
काकी जी का मायका, काका की ससुराल।
काका की ससुराल बचाओ कृष्णमुरारी,
उनका बेलन देख, काँपती छड़ी हमारी।
कैसे जीत सकेंगे उनसे करके झगड़ा,
अपनी चिमटी से उनका चिमटा है तगड़ा।

कविसम्मेलन में रहे कवयित्रियों की जीत,
कवि की कविता उखड़ती, जमता उनका गीत।
जमता उनका गीत, हो गई तबियत खट्टी,
हलवाइन का चूल्हा, हलवाई की भट्टी।
ग़लत व्याकरणशास्त्र, हुआ गड़बड़ घोटाला,
'काका' की अलमारी में काकी का ताला।

शून्य विधाता आपका लिंग-भेद का ज्ञान,
बिना व्याकरण पढ़े ही बन बैठे भगवान्।
बन बैठे भगवान्, दीप में डालो बाती,
उनको नाजुक हृदय, हमें स्त्रीलिंग छाती।
स्त्रीलिंग बिल्डिग, लगाया पुल्लिग झंडा,
मुर्ग़ा को कलगी दे दी, मुर्ग़ी को अंडा।

मंत्री, संत्री, विधायक सभी शब्द पुल्लिग,
तो भारत सरकार भी क्यों है स्त्रीलिंग?
क्यों है स्त्रीलिंग, समझ में बात न आती,
नब्बे प्रतिशत मर्द, किंतु संसद कहलाती।
'काका' बस में चढ़े, हो गए नर से नारी,
कंडक्टर ने कहा, आ गई एक सवारी।

शंका करने लग गए लाला गोपीकृष्ण,
काका कवि सुलझाइए एक हमारा प्रश्न।
एक हमारा प्रश्न, होय जब रायशुमारी,
राष्ट्रपती का पद हथिया ले कोई नारी।
लिंग-भेद की गाँठ वहाँ केसे खोलेंगे?
हमने कहा कि उसे 'राष्ट्रपत्नी', बोलेंगे।

उसी समय कहने लगे शेरसिंह दीवान,
तोती-तोता की भला कैसे हो पहचान?
कैसे हो पहचान, प्रश्न यह भी सुलझा लो,
हमने कहा कि उनके आगे दाना डालो।
असली निर्णय दाना चुगने से ही होता,
चुगती हो तो तोती, चुगता हो तो तोता।

बनारसी साड़ी

कविसम्मेलन के लिए बन्यौ अचानक प्लान,
काकी के बिछुआ बजे, खड़े हो गए कान।
खड़े हो गए कान, 'रहस्य छुपाय रहे हौ,
सब जानूँ मैं, आज बनारस जाय रहे हौ
'काका' बनिके व्यर्थ थुकायौ जग में तुमने,
कबहु बनारस की साड़ी नहिं बाँधी हमने।'

'हे भगवन्, सौगंध मैं आज दिवाऊँ तोहि,
कवि-पत्नी मत बनइयो, काहु जनम में मोहि।
काहु जनम में मोहि, रखें मतलब की यारी,
छोटी-छोटी माँग न पूरी भई हमारी।'
श्वास खींच कें, आँख मींच आँसू ढरकाए,
असली गालन पै नक़ली मोती लुढ़काए।

शांत है गयौ क्रोध तब, मारी हमने चोट,
'साड़िन में खरचूँ सबहिं, सम्मेलन के नोट।'
'सम्मेलन के नोट? हाय ऐसौ मत करियौं,
खबरदार द्वै साड़ी सों जादा मत लइयौं।
हैं बनारसी ठग प्रसिद्ध तुम सूधे-साधे,
जितने माँगें दाम लगइयौं बासों आधे।'

गाँठ बाँध उनके वचन, पहुँचे चौक बज़ार,
देख्यौ एक दुकान पै, साड़िन कौ अंबार।
साड़िन कौ अंबार, डिजाइन बीस दिखाए,
छाँटी साड़ी एक दाम अस्सी बतलाए।
घरवारी की चेतावनी ध्यान में आई,
कर आधी कीमत, हमने चालीस लगाई।

दुकनदार कहिबे लग्यौ, 'लेनी हो तौ लेउ,
मोल-तोल कों छोड़ कै, साठ रुपैया देउ।'
'साठ रुपैया देउ? जँची नहिं हमको भैया,
स्वीकारौ तौ दैदैं तुमकूँ तीस रुपैया?'
घटते-घटते जब पचास पै लाला आए,
हमने फिर आधे करकैं, पच्चीस लगाए।

लाला कौ जरि-पजरि कैं, ज्ञान है गयौ लुप्त,
मारी साड़ी फेंक कैं, लै जा मामा मुफ़्त!
लै जा मामा मुफ़्त, कहै काका सौं मामा?
लाला, तू दूकानदार है या पाजामा?
अपने सिद्धांतन पै काका अडिग रहेंगे,
मुफ़्त देय तौ एक नहीं, द्वै साड़ी लेंगे।

भागे जान बजाय कैं, दाब जेब के नोट,
आगे एक दुकान पै, देख्यौ साइनबोट।
देख्यौ साइनबोट, नज़र वा पै दौड़ाई,
'सूती साड़ी द्वै रुपया, रेशमी अढ़ाई'।
कहँ काका कवि, यह दुकान है सस्ती कितनी,
बेचिंगे हाथरस, लै चलौ दै दै जितनी।

भीतर घुसे दुकान में, बाबू आडर लेउ,
सौ सूती, सौ रेशमी, साड़ी हमकूँ देउ।
साड़ी हमकूँ देउ, क्षणिक सन्नाटौ छायौ,
देख हमारी सूरत, दुकनदार मुसकायौ।
भाँग छानके आयौ है का दाढ़ी वारे?
लिखे बोर्ड पै 'ड्राई-क्लीन' के रेट हमारे।

नाम बड़े दर्शन छोटे

नाम-रूप के भेद पर कभी किया है गौर?
नाम मिला कुछ और तो, शक्ल-अक्ल कुछ और
शक्ल-अक्ल कुछ और, **नैनसुख** देखे काने
बाबू **सुंदरलाल** बनाए ऐंचकताने
कहँ 'काका' कवि, **दयाराम** जी मारें मच्छर
विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर

मुंशी **चंदालाल** का तारकोल-सा रूप
श्यामलाल का रंग है जैसे खिलती धूप
जैसे खिलती धूप, सजे बुश्शर्ट पैंट में-
ज्ञानचंद छै बार फेल हो गए टैंथ में
कहँ 'काका' **ज्वालाप्रसाद** जी बिल्कुल ठंडे
पंडित **शांतिस्वरूप** चलाते देखे डंडे

देख, **अशर्फीलाल** के घर में टूटी खाट
सेठ **भिखारीदास** के मील चल रहे आठ
मील चल रहे आठ, कर्म के मिटें न लेखे
धनीराम जी हमने प्रायः निर्धन देखे
कहँ 'काका' कवि, **दूल्हेराम** मर गए क्वाँरे
बिना प्रियतमा तड़पें **प्रीतमसिंह** बिचारे

दीन श्रमिक भड़का दिए, करवा दी हड़ताल
मिल-मालिक से खा गए रिश्वत **दीनदयाल**
रिश्वत दीनदयाल, करम को ठोंक रहे हैं
ठाकुर **शेरसिंह** पर कुत्ते भौंक रहे हैं
'काका' छै फ़िट लंबे **छोटूराम** बनाए
नाम **दिगंबरसिंह** वस्त्र ग्यारह लटकाए

पेट न अपना भर सके जीवन-भर **जगपाल**
बिना सूँड़ के सैकड़ों मिलें **गणेशीलाल**
मिलें गणेशीलाल, पैंट की क्रीज सँभारी-
बैग कुली को दिया चले मिस्टर **गिरिधारी**
कहँ 'काका' कविराय, करें लाखों का सट्टा
नाम **हवेलीराम** किराए का है अट्टा

दूर युद्ध से भागते, नाम रखा **रणधीर**
भागचंद की आज तक सोई है तकदीर
सोई है तकदीर, बहुत-से देखे-भाले
निकले प्रिय **सुखदेव** सभी, दुख देने वाले
कहँ 'काका' कविराय, आँकड़े बिल्कुल सच्चे
बालकराम ब्रह्मचारी के बारह बच्चे

चतुरसेन बुद्धू मिले, **बुद्धसेन** निर्बुद्ध
श्री **आनंदीलालजी** रहें सर्वदा क्रुद्ध
रहें सर्वदा क्रुद्ध, मास्टर चक्कर खाते
इंसानों को **मुंशी तोताराम** पढ़ाते
कहँ 'काका', **बलवीरसिंह जी** लटे हुए हैं
थानसिंह के सारे कपड़े फटे हुए हैं

बेच रहे हैं कोयला, **लाला हीरालाल**
सूखे **गंगाराम** जी, रूखे **मक्खनलाल**
रूखे मक्खनलाल, झींकते दादा-दादी
निकले बेटा **आशाराम** निराशावादी
कहँ 'काका' कवि, **भीमसेन** पिद्दी-से दिखते
कविवर **'दिनकर'** छायावादी कविता लिखते

आकुल-व्याकुल दीखते शर्मा **परमानंद**
कार्य अधूरा छोड़कर भागे **पूरनचंद**
भागे पूरनचंद **अमरजी** मरते देखे
मिश्रीबाबू कड़वी बातें करते देखे
कहँ 'काका', **भंडारसिंह जी** रीते-थोते
बीत गया जीवन **विनोद** का रोते-धोते

शीला जीजी लड़ रहीं, **सरला** करतीं शोर
कुसुम, कमल, पुष्पा, सुमन निकलीं बड़ी कठोर
निकलीं बड़ी कठोर, **निर्मला** मन की मैली
सुधा सहेली **अमृतबाई** सुनीं विषैली
कहँ 'काका' कवि, बाबूजी क्या देखा तुमने?
बल्ली जैसी मिस लल्ली देखी है हमने

बड़े छोटे

तेजपाल जी भोथरे मरियल-से **मलखान**
लाला दानसहाय ने करी न कौड़ी दान
करी न कौड़ी दान, बात अचरज की भाई
वंशीधर ने जीवन-भर वंशी न बजाई
कहँ 'काका' कवि, **फूलचंदजी** इतने भारी
दर्शन करके कुर्सी टूट जाय बेचारी

खट्टे-खारी-खुरखुरे **मृदुलाजी** के बैन
मृगनैनी के देखिए चिलगोजा-से नैन
चिलगोजा से नैन **शांता** करती दंगा
नल पर न्हातीं **गोदावरी, गोमती, गंगा**
कहँ 'काका' कवि, **लज्जावती** दहाड़ रही है
दर्शन देवी लंबा घूँघट काढ़ रही है

कलियुग में कैसे निभे पति-पत्नी का साथ
चपलादेवी को मिले बाबू **भोलानाथ**
बाबू भोलानाथ, कहाँ तक कहें कहानी
पंडित **रामचंद** की पत्नी **राधारानी**
'काका', **लक्ष्मीनारायण** की गृहिणी **रीता**
कृष्णचंद्र की वाइफ बनकर आई सीता

अज्ञानी निकले निरे पंडित **ज्ञानीराम**
कौशल्या के पुत्र का रक्खा **दशरथ** नाम
रक्खा दशरथ नाम, मेल क्या खूब मिलाया
दूल्हा **संतराम** को आई दुलहिन **माया**
'काका' कोई-कोई रिश्ता बड़ा निकम्मा
पार्वतीदेवी हैं शिवशंकर की अम्मा

पूँछ न आधी इंच भी, कहलाते **हनुमान**
मिले न **अर्जुनलाल** के घर में तीर-कमान
घर में तीर-कमान, बदी करता है नेका
तीर्थराज ने कभी इलाहाबाद न देखा
सत्यपाल 'काका' की रकम डकार चुके हैं
विजयसिंह दस बार इलैक्शन हार चुके हैं

सुखीराम जी अति दुखी, **दुखीराम** अलमस्त
हिकमतराय हकीमजी रहें सदा अस्वस्थ
रहें सदा अस्वस्थ, प्रभू की देखो माया
प्रेमचंद ने रत्ती-भर भी प्रेम न पाया
कहँ 'काका', जब व्रत-उपवासों के दिन आते
त्यागी साहब, अन्न त्यागकर रिश्वत खाते

रामराज के घाट पर आता जब भूचाल
लुढ़क जायँ श्री **तख़्तमल**, बैठें **घूरेलाल**
बैठें घूरेलाल रंग किस्मत दिखलाती
इतरसिंह के कपड़ों में भी बदबू आती
कहँ 'काका', **गंभीरसिंह** मुँह फाड़ रहे हैं
महाराज लाला की गद्दी झाड़ रहे हैं

नाम बड़े हस्ताक्षर खोटे

दूधनाथ जी पी रहे सपरेटा की चाय
गुरु **गोपालप्रसाद** के घर में मिली न गाय
घर में मिली न गाय, समझ लो असली कारण
मक्खन छोड़ डालडा खाते **बृजनारायण**
'काका', प्यारेलाल सदा गुर्राते देखे
हरिश्चंद्रजी झूठे केस लड़ाते देखे

रूपराम के रूप की निंदा करते मित्र
चकित रह गए देखकर **कामराज** का चित्र
कामराज का चित्र, थक गए करके विनती
यादराम को याद न होती सौ तक गिनती
कहँ 'काका' कविराय, बड़े निकले बेदर्दी
भरतराम ने **चरतराम** पर नालिश कर दी

नाम-धाम से काम का, क्या है सामंजस्य?
किसी पार्टी के नहीं **झंडाराम** सदस्य
झंडाराम सदस्य, भाग्य की मिटे न रेखा
स्वर्णसिंह के हाथ कड़ा लोहे का देखा
कहँ 'काका', कंठस्थ करो, यह बड़े काम की
माला पूरी हुई एक सौ आठ नाम की

प्रगति राष्ट्रभाषा करे, यह विचार है नेक,
लेकिन आई सामने, विकट समस्या एक।
विकट समस्या एक, कार्य हिंदी में करते,
किंतु शॉर्ट में हस्ताक्षर करने से डरते।
बोले काशीनाथ ज़रा हमको बतलाना,
दोनों आँखें होते हुए लिखूँ मैं 'काना'।

इसी तरह से और भी कर सकते हैं तर्क,
प्रोफ़ेसर या प्रिंसिपल, अफ़सर, बाबू, क्लर्क।
अफसर, बाबू, क्लर्क, होय गड़बड़ घोटाला,
डाक्टर नाथूलाल करें हस्ताक्षर 'नाला'।
कहँ काका, बतलाओ क्या संभव है ऐसा,
लाला भैंरों साह स्वयं को लिख दे 'भैंसा'?

परिवर्तन घनघोर हों, बदल जायगी कौम,
डोगरमल संक्षिप्त में लिखे जायँगे 'डोम'।
लिखे जायँगे डोम, नाम असली खो जाएँ,
गुप्पोमल को शॉर्ट करो तो 'गुम' हो जाएँ।
उजले कांतिलाल, किंतु कहलाएँ 'काला',
भैया, भाईलाल पुकारे जाएँ 'भाला'।

हरीलाल अपनी क़लम से हो जायँ 'हलाल',
श्री दरबारीलाल को बनना पड़े 'दलाल'।
बनना पड़े दलाल, तमाशा होय निराला,
आवें साहूलाल, कहें वह आया 'साला'।
लिखें बुलाकीराम 'बुरा' क्यों बुरा न मानें?
सुखीराम हों 'सुरा', सुरा का स्वाद न जानें।

'सीरा' सीताराम हों, जाहरमल हों 'जाम',
जीते-जी लिक्खें 'मरा', मामा मगनीराम।
मामा मगनीराम, किसी का क्या कर लेंगे?
चिढ़ा-चिढ़ाकर गजधारी को 'गधा' कहेंगे।
कहँ काका कवि, बाबूलाल बनेंगे 'बाला',
पंडित प्यारेलाल लिखे जाएँगे 'प्याला'।

विकट समस्या एक, कार्य हिंदी में करते,
किंतु शॉर्ट में हस्ताक्षर करने से डरते.....

मालिक दानसहाय को लिखना होगा 'दास',
और सारदासदन जी कहलाएँगे 'सास'।
कहलाएँगे सास, हँसें सब चेली-चेला,
गुरुवर केशवलाल करें हस्ताक्षर 'केला'।
कहँ काका कविराय, लोग मारेंगे ताने,
जयनारायण नेबटिया कहलायँ 'जनाने'।

गूजरमल जी 'गूम' हों, बूचीमल जी 'बूम',
सूरजमल से सब कहें आओ मिस्टर 'सूम'।
आओ मिस्टर सूम, होय आपस में दंगा,
नंदनगायक से जब लोग कहेंगे 'नंगा'।
पुल्लिग पर स्त्रीलिंग हो जाएगा हावी,
केप्टिन भारतवीर कहे जाएँगे 'भावी'।

लोग मनोरंजन करें, होनी हो सो होय,
गजानंद धीमान को 'गधी' कहें सब कोय।
गधी कहें सब कोय, हँसें नर-नारी सारे,
श्री सूरजपरसाद 'सूप' बन जायँ बिचारे।
स्यामनाथ जी स्वयं करें हस्ताक्षर 'स्याना',
नागनाथ को देख कहें–आओजी 'नाना'।

हिंदू ईश्वरदत्त का शार्ट नाम हो 'ईद',
लाला लीलादत्त जी बन जाएँगे 'लीद'।
बन जाएँगे लीद, मजे तो तब आएँगे,
तेजपाल लीडर जब 'तेली' कहलाएँगे।
कहँ काका कवि, होतीलाल कहाएँ 'होला',
छोटेलाल बिचारे बन जाएँगे 'छोला'।

इस संक्षिप्तीकरण से हों व्यक्तित्व खराब,
शक्तिराम बर्मन स्वयं कैसे लिखे 'शराब',
कैसे लिखें शराब, दया हमको आएगी,
हरीवंश त्यागी की 'हत्या' हो जाएगी।
बदल जायँ उपनाम, होयँ मानी-बेमानी,
कहलाएँ गोपालदास नीरज 'गोदानी'।

अर्थ व्यर्थ हो जाएँगे, भागीरथ हों 'भार',
सुखीनाथ रजनीश को लिखना पड़े 'सुनार'।
लिखना पड़े सुनार, लगे सुनने में खोटा,
किंतु सोम ठाकुर जी कहलाएँगे 'सोठा'।
कहँ काका अच्युत धर्मा हो जायँ 'अधर्मा',
बेकल शर्मा कैसे सहन करें 'बेशर्मा'?

कोर्ट-कचहरी-बैंक में मच जाएगा शोर,
चोखेमल रजपूत जब स्वयं लिखेंगे 'चोर'।
स्वयं लिखेंगे चोर, हँसी हो खुल्लमखुल्ला,
मिस्टर मुन्नीलाल पुकारे जाएँ 'मुल्ला'।
बड़े नाम को छोटा किया, हो गया खोटा,
लोचन टालीवाल करे हस्ताक्षर 'लोटा'।

कीर्ति नष्ट हो जायगी, कीर्तिचंद हों 'कीच',
नीकचंद संक्षिप्त में बन जाएँगे 'नीच'।
बन जाएँगे नीच, मिलाएँ जब तुकमिल्ला,
पांडे पित्तीलाल लिखे जाएँगे 'पिल्ला'।
कौशल जी आचार्य बिचारे होंगे 'कौआ',
नौबतमल आढ़ती पुकारे जाएँ 'नौआ'।

कुछ लोगों के हैं बड़े लंबे-चौड़े नाम,
ढाई गज का नाम है, दो अंगुल का काम।
दो अंगुल का काम, अचानक दर्शन पाए,
श्री नारायणलाल यतींद्र कथक्कड़ आए।
चारों शब्दों को लेकर जब शॉर्ट बनाया,
तो उनका संक्षिप्त नाम 'नालायक' पाया।

जान-बूझकर व्यर्थ ही क्यों होते बदनाम,
उतना दुखदायी बने, जितना लंबा नाम।
जितना लंबा नाम, रखो छोटे से छोटा,
दो अक्षर से अधिक नाम होता है खोटा।
सूक्ष्म नाम पर कभी नहीं पड़ सकता डाका,
'काका' को उल्टो-पल्टो, फिर भी है काका।

वक़्त के साँचे में अपनी ज़िंदगी को ढालकर मुस्कुराओ मौत की आँखों में आँखें डालकर

काका हाथरसी

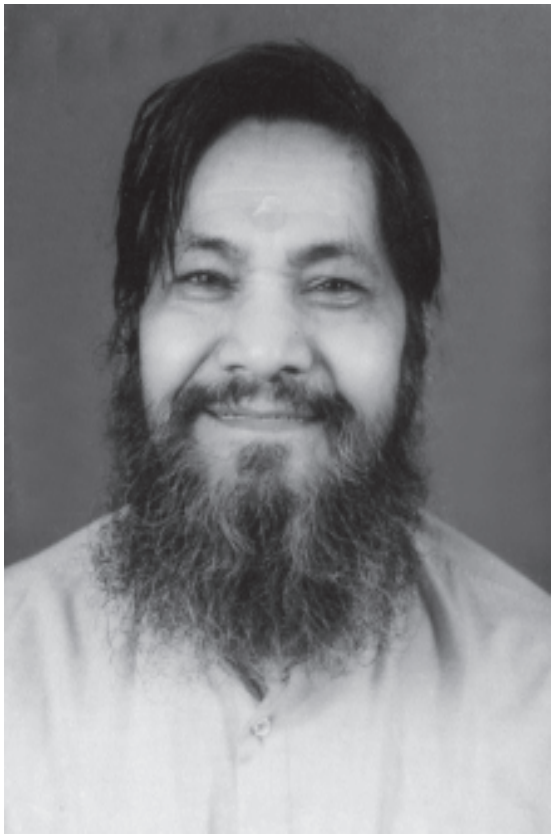

ये लेख काकाजी ने लगभग बीस वर्ष पहले लिखा था, लेकिन इसका विषय आज भी उतना ही नवीन और उपयोगी है, जितना उस समय था, जब कि यह लिखा गया था।

'असिया सो रसिया'

ब्रजभाषा की यह पुरानी कहावत उन व्यक्तियों को बल प्रदान करती है, जो रिटायर्ड होते ही निराशा के अंधकार में अपने को असहाय मानकर दु:खी रहते हैं। उपर्युक्त कहावत ग़लत नहीं है। इसका अर्थ है कि साठ के बाद अपने-आपको पाठा (पट्ठा) और 80 के बाद स्वयं को रसिक या रसिया मानकर जीवन-नौका चलाते रहना चाहिए।

मुझे भी देख लीजिए, 85 में चल रहा हूँ। अब भी किसी हमउम्र से पंजा लड़ाकर उसे ठंडा कर सकता हूँ। मतलब यह कि हौसला बनाए रखो, बुढ़ापे से घबराकर हाय-हाय करने की बजाय वाह-वाह से उसका स्वागत करो और जब मृत्यु महारानी तुमको लेने आ ही जाएँ तो ख़ुशी से गले लगा लो।

जो बुज़ुर्गवार अपनी संतान की उपेक्षा से दु:खी होकर बुढ़ापा काट रहे हैं, उनसे मेरा निवेदन है कि वे अपनी अंतरात्मा को टटोलकर उससे पूछें कि ऐसा क्यों हो रहा है ? आपको उत्तर मिलेगा कि अपनी ग़लतियों पर भी ध्यान देने की कृपा कीजिए, क्योंकि आप छोटी-छोटी बातों पर टीका-टिप्पणी करके घर की फुलबगिया के फूलों को मलिन करते रहते हैं, क्यों छोटे-छोटे बच्चों को डाँटते-फटकारते रहते हैं। भोजन-सामग्री में दोष निकालना, घरेलू कामों में दख़लंदाज़ी करना आदि कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके कारण बहू-बेटे खीजकर कहने लगते हैं–

बुढ़ऊ अब सठिया गए हैं। हर समय टें-टें करते रहते हैं। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि साठ की उम्र के बाद सठिया जाना ज़रूरी है। हज़ारों व्यक्ति ऐसे मिलेंगे, जो 60 के बाद भी अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाकर लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

हौसला बनाए रखो, बुढ़ापे से घबराकर हाय-हाय करने की बजाय वाह-वाह से उसका स्वागत करो और जब मृत्यु महारानी तुमको लेने आ ही जाएँ तो खुशी से गले लगा लो।

एक संस्मरण याद आ रहा है

यहाँ मुझे एक संस्मरण याद आ रहा है, जिसने मेरे बुढ़ापे को बल प्रदान करके उखड़ती साँसों को, उछलती साँसों में परिवर्तित कर दिया है। आज से 25 वर्ष पूर्व मैं एक कविसम्मेलन में रायपुर (म०प्र०) गया था। प्रात: खुली हवा में घूमने-टहलने की आदत मुझे किशोरावस्था से ही रही है।

सम्मेलन 2 बजे रात्रि तक चला था। केवल 3 घंटे की निद्रा लेकर मैं प्रात: 6 बजे वहाँ के प्रसिद्ध फूलबाग में चला गया। उन दिनों मेरी आयु 60 वर्ष के आस-पास थी। उस बाग में प्रयाग के एक कथावाचक पंडितजी भी घूम रहे थे, जो मानस-प्रवचन में अपना विशेष स्थान रखते थे। एक जगह खड़े होकर कहने लगे कि साठ के आस-पास वाली आयु के जो शख़्स यहाँ घूम रहे हैं, यहाँ आ जाएँ। मैं उन्हें बताऊँगा कि बुढ़ापे में अपने घर में ही आनंदपूर्वक कैसे रह सकते हैं। पंडितजी की यह बात सुनकर बूढ़े-अधबूढ़े, घुमक्कड़ सब इकट्ठे हो गए। एक श्रद्धालु ने अपना अँगोछा घास पर बिछाकर पंडितजी को आदरपूर्वक आसन दे दिया।

हमने हाथ जोड़कर जिज्ञासु मुद्रा में पंडितजी से निवेदन किया, 'बताइए महाराज, अपने विचार। हम उनका पालन करेंगे।' पंडितजी ने कहा, 'देखो, अपने बुढ़ापे को बिगाड़ना या सम्हालना खुद तुम्हारे हाथों में है। मैं आज एक ऐसा नुस्ख़ा बुज़ुर्गों का बता रहा हूँ, जिसके द्वारा घर में सुख-शांति से रहकर बुढ़ापे को आनंदमय बना सकते हैं।'

पंडितजी के इस पाँचसूत्रीय मंत्र को मैंने अपने जीवन में उतारा है, इसलिए मैं 85 वर्ष की आयु में भी सारे परिवार का प्रिय बना हुआ हूँ।

पाँचसूत्रीय कार्यक्रम

1. बहू-बेटों के कामों में दख़लंदाज़ी बिलकुल मत करो। आज कोई बहू नई साड़ी लेकर आई है तो यह मत कहो कि पचासों साड़ी तेरे पास रखी हैं, और लाने की क्या ज़रूरत थी। इसके विरुद्ध अपने स्वरों में कुछ मिठास घोलकर कहो, 'वाह बेटी, कितना सुंदर है इसका डिज़ाइन, रंग पसंद करने की तुम्हारी अभिरुचि तो हमेशा से कलात्मक रही है।
2. कोई बहू-बेटी या पौत्र-पौत्री फ़िल्म देखकर आए हैं, उनसे भूलकर भी नहीं कहना कि कल भी तो गए थे तुम, आज फिर? बल्कि उनसे पूछो कौनसी पिक्चर देखी थी बेटे, कहानी संक्षेप में बता सको तो थोड़ी देर हमारा भी मन बहल जाए।
3. भोजन के बारे में कभी आपसे पूछा जाए कि आज कौनसी दाल बनाऊँ बाबा? उनसे कहो, जो तुम सबको पसंद हो, वह हमें भी अच्छी लगेगी। ऐसा भी संभव है कि तुमसे कोई पूछे ही नहीं दाल-साग की बात, तो उसका अर्थ यह मत लगाओ कि हमारी उपेक्षा हो रही है, अपितु यह मानकर चलो कि जो कुछ आज रसोई में बना है, सबकी सहमति से ही बना होगा। भगवान् का प्रसाद समझकर ग्रहण करो, उसी में स्वाद प्राप्त होगा।
4. नित्यप्रति अपने इष्टदेव से प्रार्थना करो कि बुढ़ापे में मेरी बुद्धि ठीक रहे। भगवान्, चिड़-चिड़ापन या क्रोध-भावना अथवा पूर्वाग्रहों से बचता रहूँ।
5. घर की बहुओं को फ़ुर्सत के समय इकट्ठे करके उनको चुटकुले-कहानियाँ सुनाओ, उनके साथ खुलकर हँसो, ठहाके लगाओ।

घर छोड़कर बाहर जाने की या कपड़े रंगकर त्याग दिखाने की नौबत तो तभी आती है, जब घर में क्लेश, उपेक्षा या घृणा के कारण मन-मस्तिष्क में अनावश्यक तनाव बना रहता हो, घर-आँगन में प्रसन्नता के फूल खिलते रहेंगे तो घर में स्वर्गीय सुख प्राप्त करके सबके चहेते बने रहेंगे।

इन पाँच सूत्रों को यदि आपने आत्मसात् कर लिया तो बुढ़ापे को सुखी बनाकर लंबी आयु प्राप्त कर सकते हो। घर छोड़कर बाहर जाने की या कपड़े रँगकर त्याग दिखाने की नौबत तो तभी आती है, जब घर में क्लेश, उपेक्षा या घृणा के कारण मन-मस्तिष्क में अनावश्यक तनाव बना रहता हो, घर-आँगन में प्रसन्नता के फूल खिलते रहेंगे तो घर में स्वर्गीय सुख प्राप्त करके सबके चहेते बने रहेंगे। पंडितजी का यह पाँचसूत्रीय उपदेश सुनकर एक भक्त ने शंका उठाई, 'महाराज, यदि कोई पुत्र या पौत्र ऐसा कार्य करे, जिससे घर-परिवार की उजली चादर पर काला धब्बा लगने की नौबत आ जाए तो?' पंडितजी ने तत्काल उत्तर दिया, 'ऐसी स्थिति में शांत स्वरों में अपना सुझाव-मात्र देते हुए कह दो, बेटे यह कार्य ग़लत है, तुमको या परिवार को हानि पहुँचाएगा। फिर भी यदि वह न माने तो उसके भाग्य पर छोड़ दो।'

पंडितजी के इस पाँचसूत्रीय मंत्र को मैंने अपने जीवन में उतारा है, इसलिए मैं 85 वर्ष की आयु में भी सारे परिवार का प्रिय बना हुआ हूँ। मैंने अपने होश में कुल 5-6 फ़िल्म ही देखी होंगी, लेकिन बहू-बेटों से पूछ-पूछकर फ़िल्म-संबंधी बीसियों कविताएँ लिख डालीं। किस कलाकार या कलानेत्री में क्या ख़ूबियाँ हैं, बच्चे मुझे हँसते-हँसते बता देते हैं। इस संबंध में एक संस्मरण उल्लेखनीय है।

पृथ्वीराज कपूर ने नारा दिया

आज से 50 वर्ष पूर्व मैंने एक फ़िल्मी कविता बच्चों से पूछ-पूछकर ही लिखी थी, जिसे भारत के अनेक मंचों पर तथा विदेशों में सुना-सुनाकर धन के साथ-साथ यश भी भरपूर प्राप्त किया था। यह रचना जिस पुस्तक में छपी, उसकी तीन लाख प्रतियाँ, हिंद पाकेट बुक्स ने बेचकर मुझे भी भरपूर रॉयल्टी दी थी। उन दिनों फ़िल्मी जादू जनता पर किस प्रकार सवार था, यह बात व्यंग्यात्मक लहजे में मैंने बारह छंदों में वर्णित की थी, उनमें से केवल दो छंद यहाँ दे रहा हूँ :

जल-थल-नभचर-अचर पर छाया फ़िल्मी रंग
इसी रंग में सब रँगे बूढ़े, बालक, यंग
बूढ़े, बालक, यंग कि अफ़सर बाबू-लाला
फ़िल्मी गीत गा रहा जुम्मा रिक्शेवाला
भगवन् कवि-जीवन से मेरा पिंड छुड़ाना
पुनर्जन्म में मुझे फ़िल्म-तारिका बनाना

कैसी बनाना :

लता सरीखे स्वर मिलें, सिम्मी जैसे सैन
नूतन-से नखरे मिलें, निम्मी जैसे नैन
निम्मी जैसे नैन, कृपा करना प्रभु ऐसी
वैजयंती-सी भवें, कमर हो हेलन जैसी
कहँ काका, ललिता पवार-सी मम्मी पाऊँ
पृथ्वीराज से पापा मिलें धन्य हो जाऊँ

उन दिनों मैं संगीतकारों के चित्र बना रहा था

बंबई के 'चकल्लस' सम्मेलन में मैं यह रचना सुना रहा था। मेरे पास ही फ़िल्मी पितामह पृथ्वीराज कपूर भी बैठे थे। इस छंद की अंतिम पंक्तियाँ सुनकर उछल पड़े, मेरी पीठ थपथपाते हुए बोले, 'हास्य और व्यंग्य जीवन के अंग।' उनके दिए हुए इस नारे का मैंने यदा-कदा अपनी पुस्तकों में उपयोग भी किया है। उसके बाद कपूर साहेब जब अपनी नाटक-मंडली 'पृथ्वी-थियेटर) के साथ हाथरस आए थे तो 'दीवार' शीर्षक ड्रामा यहाँ के सिनेमा हाल में दिखाया था। दूसरे दिन वे सब कलाकारों के साथ हमारे निवास-स्थान पर पधारे थे। वहाँ उनके सम्मान में एक गोष्ठी आयोजित करके मैंने कविता सुनाई थी। उन दिनों मैं संगीतकारों के चित्र बना रहा था, बड़े-बड़े उस्तादों के पोट्रेट देखकर कपूर साहेब कह रहे थे कि ये चित्र तो अब अप्राप्त हैं, आपने कहाँ से लेकर इंलार्ज किए हैं। मैंने उनको बताया था, 'कैसे-कैसे ख़तरे मोल लेकर मैंने इन बुज़ुर्ग कलाकारों के फ़ोटो प्राप्त किए हैं।

ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय

अपने बुज़ुर्ग पाठकों से एक बात और कहना

चहूँगा। संतान समर्थ और स्वावलंबी हो तो गद्दी छोड़कर ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो जाने में ही आत्मानंद प्राप्त हो सकता है, किंतु अपने बुढ़ापे की शेष गाड़ी जीवन की विशेष पटरियों पर चलाने के लिए कुछ पूँजी अपने अधिकार में अवश्य रखनी चाहिए, ताकि आवश्यकता होने पर पुत्र-पौत्रों के आगे हाथ न फैलाना पड़े। मैंने कई बुज़ुर्गों को यह कहते हुए सुना है, 'अरे, भैया, हम तो पछता रहे हैं, सारी संपत्ति उनको सौंपकर, अब कुछ माँगते हैं तो फटकार-मिश्रित वाक्य सुनकर अपमान के घूँट पीने पड़ रहे हैं।' इसलिए किसी बैंक में अपना ऐसा खाता अवश्य रहने दो कि मन-चाहे तब धनराशि निकालकर उसका उपयोग कर सको। बैंक खाते में अपने नाम के साथ किसी सुपात्र बेटे या पोते का नाम भी दर्ज़ करा देना चाहिए, ताकि आँखें बंद होने पर वह धनराशि उसे प्राप्त हो सके।

उम्र के अंतिम पड़ाव में बुढ़ापे की कोई ऐसी बीमारी चिपक जाए जो डॉक्टर-वैद्यों के काबू में भी नहीं आ सके तो उसे झेलने के लिए ब्रजभाषा का यह दोहा बहुत सहायक होगा :
देह धरे कौ दंड तो सब काहू कूँ होय
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय

उम्र के अंतिम पड़ाव में बुढ़ापे की कोई ऐसी बीमारी चिपक जाए जो डॉक्टर-वैद्यों के काबू में भी नहीं आ सके तो उसे झेलने के लिए ब्रजभाषा का यह दोहा बहुत सहायक होगा :

देह धरे कौ दंड तौ सब काहू कूँ होय
ज्ञानी काटै ज्ञान तैं, मूरख काटै रोय

जैसा-जैसा तुम करो, वैसा पाओ आप

अंत में एक चेतावनी नई पीढ़ी के उन युवकों को भी, जो अपने बड़े-बूढ़ों की उपेक्षा करके उनकी सेवा से मुँह मोड़ लेते हैं और अपमान-तिरस्कार के घूँट पिलाकर उनकी ज़िंदगी को नरक बना देते हैं। अभी कुछ दिनों पूर्व दूरदर्शन पर एक छोटी-सी नाटिका प्रसारित हुई थी, जिसमें दिखाया गया था कि बूढ़े दादा के कँपकँपाते हाथ से चाय के कप-प्लेट ज़मीन पर गिरकर टूट जाते हैं। बेटा उनसे कुछ नहीं कहता, अपनी पत्नी से दोबारा चाय देने को कहता है तो तेज़-तर्रार स्वभाव वाली बहू कहती है, 'ये इस तरह प्याले तोड़ते रहेंगे तो काम कैसे चलेगा, कहाँ से लाएँगे इतनी क्राकरी?'

दूसरे दिन से बहूरानी अपने बूढ़े ससुर को बजाय थाली या प्लेट-प्यालों के पत्तल में रखकर खाना भेजती है तो छोटा-सा पाँच वर्षीय पौत्र अपने पिता से पूछता है, 'क्यों पापाजी, हमारे बाबा बूढ़े क्यों हो गए हैं?' पिता कहता है, 'बेटे ज़्यादा उम्र पाकर सभी बूढ़े हो जाते हैं।' 'तो पापाजी, आप भी बूढ़े हो जाएँगे।' 'हाँ बेटे, ज़रूर हो जाएँगे।' 'तो पापा, आपके हाथ भी काँपने लगेंगे।' 'ऐसा भी हो सकता है बेटा!' फिर बाल-सुलभ भावना से बालक कहता है कि तब तो मैं भी आपको पत्तलों में खाना दिया करूँगा।' बच्चे के इस डायलॉग को सुनकर पति-पत्नी के हृदय परिवर्तित हो जाते हैं। बहू-बेटा भोजन की थाली सजाकर बूढ़े बाबा को देते हैं और अपने व्यवहार के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हैं।

जो कार्य बड़े-बड़े ग्रंथों के अध्ययन से या उपदेशकों के प्रवचन से नहीं हो सकता, वह कार्य एक अबोध बालक की सुबोध प्रश्नावली ने कर दिया। इस पर छह पंक्ति का यह छंद द्रष्टव्य है :

देखी जब यह नाटिका पड़ी हृदय पर छाप
जैसा-जैसा तुम करो, वैसे पाओ आप
वैसे पाओ आप, एक दिन ऐसा आए
कमर झुके, मन-मर्दन हो, गर्दन हिल जाए
यौवनमद में जो बूढ़ों को सता रहे हैं
इसका फल उनके ही बच्चे बता रहे हैं

इतने आसान नहीं हैं काका

अशोक चक्रधर

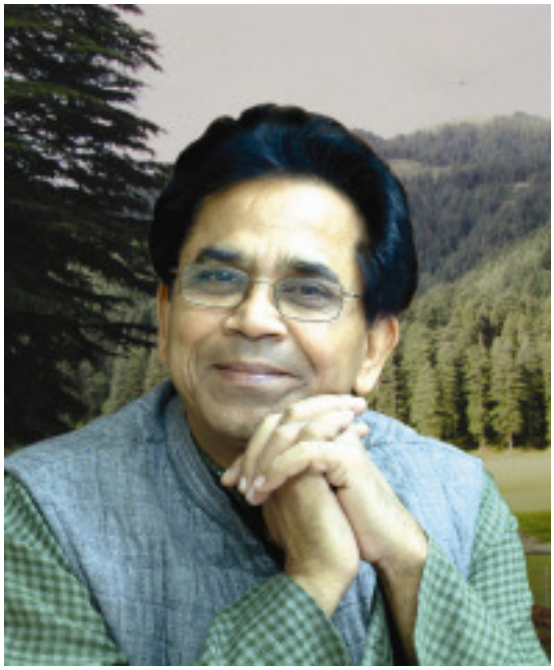

धुँधलके में प्रकाश की एक किरण भी साफ़ दिखाई देती है और अपना महत्त्वपूर्ण अस्तित्व बनाती है। उसी तरह अब से लगभग 48 वर्ष पहले की धुँधली यादों में काका की एक कौंधती हुई तस्वीर मेरे ज़हन पर अभी भी अंकित है।

खुर्जा, मौहल्ला अहीरपाड़ा की हमारी गली के मोड़ पर 'काका आए, काका आए' का शोर हो रहा था। मेरी उम्र 11-12 की रही होगी। गोदी में एक साल की मेरी छोटी बहन थी और उस शोर के बीच अचानक दिखे काका! चूड़ीदार पायजामा, पीला कुर्ता, एकदम श्यामल दाढ़ी, श्याम केस, पीली बिंदी। कुछ ऐसा असामान्य लोकोत्तर व्यक्तित्व पतली-सी गली में जब प्रविष्ट हुआ और उसके साथ चलनेवाले लोगों में उल्लास की लहर जब मैंने देखी तो मैं भी उस व्यक्तित्व पर लट्टू हो गया। वे मेरे सामने निकले। उन्होंने मेरी छोटी बहन के सिर पर हाथ फिराया, उनकी आँखों में मेरे प्रति एक प्रशंसा का भाव था। मैं अपनी छोटी बहन को गोदी में लिए हूँ और इस कमउम्र में किसी तरह के दायित्व-बोध से जुड़ा हूँ। वे आगे बढ़ गए। हमारे घर में घुसे। घर में ज़ाहिर-सी बात है, उनके स्वागत में सारी व्यवस्थाएँ थीं। जब मैं अपनी छोटी-सी बहन को लिए हुए घर आया, तब उन्हें पता चला कि मैं श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ' का ही पुत्र हूँ। मुझे याद है उनका पहला वाक्य-'अरे, इससे तो मैं मिल चुका हूँ।' कुछ और भी उन्होंने कहा होगा, जो मेरी स्मृति में नहीं है। लेकिन इतना-भर अवश्य याद है कि हमारे घर में मोहल्ले के ढेर सारे बच्चे, युवक और युवतियाँ उनको देखने के लिए पंजों के बल उचक-उचककर खड़े हुए थे और किसी भी तरह उनकी एक झलक पाने के लिए लालायित थे।

इसके बाद काका जी के सलाह-निर्देश पर मेरे पिता श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ' ने सन् 64 में खुर्जा छोड़ दिया और तबसे मेरा आना-जाना संगीत कार्यालय हाथरस में होने लगा। मेरी छोटी-छोटी कविताएँ वे सुनते थे और मुझे वो सबसे अच्छे इसलिए लगते थे, क्योंकि ख़ूब प्रोत्साहित करते थे। एक कविता थी, जिसकी शुरुआत कुछ इस तरह से थी-'छिपकर पाप करते हो। दीवारों के भी आँखें होती हैं।' मुहावरे को बदल देना उनको बहुत पसंद आया और उन्होंने कुछ रुपये तत्काल अपनी जेब

काका को समझना बहुत आसान कार्य नहीं है। काका लगते आसान हैं। शायद इसलिए, क्योंकि ये आसान भाषा का प्रयोग करते रहे हैं। बड़ी आसानी से बात कह देते हैं।

से निकालकर पुरस्कार के रूप में दिए। मैं उन्हें पसंद करता था। वे मुझे पसंद करते थे और ये सिलसिला अनेक मोड़ लेते हुए पारिवारिक बनते हुए, कार्मिक क्षेत्र में एक जैसा होने के बाद अब तक जारी रहा। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि उस लोकोत्तर पुरुष का काफ़ी सान्निध्य-सुख मैंने लिया।

वे कतई आसान व्यक्ति नहीं थे

काका को समझना बहुत आसान कार्य नहीं है। काका लगते आसान हैं। शायद इसलिए, क्योंकि ये आसान भाषा का प्रयोग करते रहे हैं। बड़ी आसानी से बात कह देते हैं। बड़ी आसानी से लोगों तक पहुँच जाते हैं और लोग उन तक बहुत आसानी से पहुँच जाते हैं। लेकिन मैं दावे के साथ कहता हूँ कि वे कतई आसान व्यक्ति नहीं थे। वे विलक्षण सौंदर्यपूर्ण संश्लिष्ट व्यक्तित्व थे। उनके रचनाक्रम में इतना वैविध्य था और उस वैविध्य में इतना तालमेल था, जिसको लोग समझ नहीं पाए, ललित कलाओं में उनकी पैठ, संगीत के प्रति उनका चुंबकीय खिंचाव, चित्रकला के लिए उनकी निष्ठा, हास्य के लिए उनका समर्पण और इन सबका एक साथ अनुशासनात्मक समुच्चय वे कैसे व्यवस्थित करते थे, इसको समझना भी आसान नहीं है।

जब तक व्यक्ति रहता है, तब तक हम उसकी सीमाएँ देखते हैं, उसके जाने के बाद हम उसकी शक्तियाँ देखते हैं।

मेरे सोचने की प्रक्रिया उनके जाने के बाद कुछ अजीब ढंग से चल पड़ी है। हमारे देश में परंपरा है, जब तक व्यक्ति रहता है, तब तक हम उसकी सीमाएँ देखते हैं, उसके जाने के बाद हम उसकी शक्तियाँ देखते हैं। मैंने उनकी शक्तियाँ उनके जीते-जी देखीं और अब मैं बात करता चाहता हूँ उनकी सीमाओं से। और, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उनकी सीमाएँ ही उनकी शक्तियाँ थीं। उदाहरण के लिए क्रमशः गिनाना शुरू करता हूँ।

मुर्दनी में बिल्कुल नहीं जाएँगे

वे किसी मुर्दनी में नहीं जाते थे। शवयात्रा में जाना बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। परिवार का आत्मीयतम व्यक्ति भी क्यों न देहावसान पा चुका हो, वे उसकी शवयात्रा में नहीं जाते थे। समाज तो आख़िर समाज है। इस पर लोग टिप्पणी करने से चूकते नहीं थे। 'काका श्मशान घाट तक नहीं चलोगे। मुर्दनी में नहीं जाओगे? तो क्या सोचते हो कि जब तुम मरोगे तो तुम्हारी मुर्दनी में कोई जाएगा?' और, काका तटस्थ भाव से हलकी मुस्कान के साथ कह देते थे–'भैया, जानेवाला तो चला गया, अब हम क्यों वहाँ रोनी सूरत बनाकर जाएँ? हमसे किसी के आँसू नहीं देखे जाते... हमसे दुःखी चेहरे नहीं देखे जाते, इसलिए हमें अगर ले चलना है तो किसी के जन्मदिन पर ले जाओ, किसी शादी-बारात में ले जाओ। हम कविता सुनाएँगे, आशीर्वाद देंगे। लेकिन मुर्दनी में बिल्कुल नहीं जाएँगे, भले ही हमारी मुर्दनी में कोई आए ना आए और जब हम रहेंगे ही नहीं तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि हमारी मुर्दनी में कोई आया या नहीं आया।'

और, जब 19 सितंबर 1995 को उनकी शवयात्रा में हज़ारों की भीड़ को मैंने देखा कि काका की किसी की ग़मी में शरीक न होनेवाली बात सोचने लगा और उनको ताने देनेवाले लोगों की बात भी सोचने लगा, उलाहनों का भी विश्लेषण करने लगा–'तुम किसी की मुर्दनी में नहीं गए तो कोई तुम्हारी मुर्दनी में क्यों जाएगा?' संभवतः हाथरस नगर ने इस व्यक्ति के मन में झाँक लिया था और जान लिया था कि दुःख, मनहूसियत, उदासी, कुंठा, आत्मजन्य बेचैनी का यह कितना विरोधी है!

काका ने हास्य अर्जित किया हो, ऐसा कतई नहीं

'भइया, हमारे-आपके संबंध बड़े मजबूत हैं, बिल्कुल नहीं टूटे, लेकिन अब आप यहाँ से फूटे!'

था। वे नख से शिख तक, नस-नस और नाड़ी-नाड़ी में, अपनी संपूर्ण मांस-मज्जा में हास्य समोए हुए थे। वे किसी मनहूस सूरत को अपने पास बर्दाश्त भी नहीं कर सकते थे। हँसाना उनके लिए कोई सायास-श्रमपूर्वक किया गया कार्य नहीं था, बल्कि उनकी भंगिमाएँ, उनकी सहज प्रतिक्रियाएँ और जीवन के प्रति उनका तटस्थ भाव उनके अंदर हास्य पैदा करता था। जो जनसैलाब मैंने हाथरस में देखा, विभिन्न धर्मों के, विभिन्न जातियों के लोग एक साथ उस अंतिम यात्रा में मैंने शिरकत करते हुए पाए और जिस तरह से हर्ष और विषाद के मिले-जुले भावों की निदर्शना मैंने हाथरस में देखी, वह भी उतनी ही जटिल है, जितना जटिल व्यक्तित्व मैं काका का मानता हूँ। आज जनसंचार माध्यमों से सबको पता है कि काका ने वसीयत की कि ऊँटगाड़ी पर उनकी शवयात्रा निकाली जाए। उन्होंने यह भी चाहा कि चिता जलते समय भीड़ में कोई व्यक्ति रोए नहीं, बल्कि वहाँ हास्यकवि-सम्मेलन हो और लोग ठहाके लगाते हुए, नाचते-गाते हुए उनकी शवयात्रा में शिरकत करें।

बहरहाल, ऐसा ही हुआ जैसा उन्होंने चाहा। हाथरस नगर में अंतिम यात्रा का जो रूप बनाया गया था, उसमें कुछ गली-मोहल्ले छूट गए। उन गली-मोहल्ले के निवासियों ने प्रशासन के आगे धरना दे दिया कि यह मुमकिन ही नहीं है कि काका हमारी गली से न गुज़रें और प्रशासन को जनभावना के आगे झुकना पड़ा। काका के घर से श्मशान की दूरी लगभग एक किमी होगी, लेकिन अंतिम यात्रा हाथरस नगर में पूरे चार घंटे बिताने के बाद अपने गंतव्य तक पहुँच पाई। उस पूरे मार्ग में लोगों का हुजूम दूर तक दिखाई देता था, कुछ पीछे छूट जाते थे, नए जुड़ जाते थे। छज्जों पर, कंगूरों पर, अटारियों पर ढेर सारे बाल-वृद्ध, महिलाएँ उनकी ऊँटगाड़ी पर पुष्प-वर्षा कर रहे थे। दृश्य बड़ा ही रोमांचकारी हो जाता था कई बार। फूल फेंकनेवालों की श्रद्धांजलि और नीचे उल्लास में रसिया गाते हुए लोग 'सुरपुर सिधार गए हमारे काका'। तिलक, चंदन लगाए हुए विचित्र वेशभूषा बनाए हुए लोग, जिनमें आह्लाद भी ऐसा, जिसके मूल में दुःख भरपूर था। ये बड़ी जटिल सामाजिक मानसिकता है, जिसको मैं लगातार सोच रहा हूँ। मानव-जाति के इतिहास में शायद ही ऐसा कभी हुआ हो कि श्मशान-भूमि पर जिस व्यक्ति का अंतिम संस्कार करने के लिए लोग आए हैं, वे अग्निदाह के समय ठहाके लगा रहे हों। लेकिन अग्निदाह के समय ठहाके लगे। पूरे दो घंटे एक हास्यकवि-सम्मेलन चला, जिसमें हास्य-शैली में ही कवियों ने काका को विदाई दी। अनेक समाचार-पत्रों में उनकी रिपोर्ट छपी है। उन कविताओं के अंश भी प्रकाशित हुए हैं, जिनसे अंदाज़ा लग सकता है कि काका की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए एक नगर कितना कृतसंकल्प था। यह थी काका की पहली सीमा कि वे मुर्दनी में नहीं जाते थे और यही थी उनकी ताक़त कि वे किसी की मुर्दनी में नहीं जाते थे।

पूरे मार्ग में लोगों का हुजूम दूर तक दिखाई देता था, कुछ पीछे छूट जाते थे, नए जुड़ जाते थे। छज्जों पर, कंगूरों पर, अटारियों पर ढेर सारे बाल-वृद्ध, महिलाएँ उनकी ऊँटगाड़ी पर पुष्प-वर्षा कर रहे थे। दृश्य बड़ा ही रोमांचकारी था

काका का अपना एक कार्यानुशासन था:

लोकाचार के नाते आगंतुक से कितनी देर बात की जाए, शिष्टाचार के रहते हुए किसी व्यक्ति की उपस्थिति को कितना सहा जाए, यह आमतौर पर हम देखते हैं कि अंदर-अंदर कुढ़ते हुए, मन ही मन गालियाँ देते हुए भी हम आगंतुक को या किसी अनपेक्षित व्यक्तित्व को सहते रहने के लिए प्रायः मजबूर हो जाते हैं, लेकिन काका ऐसा नहीं करते थे। काका का अपना एक कार्यानुशासन था। यदि उनको ग्यारह बजे पत्र लिखने हैं और एक व्यक्ति ग्यारह बजकर पाँच मिनट पर उनके पास आया तो वे दो-तीन मिनट

तक ही उससे बात करते थे, भले ही वह कितना ही कोई रोचक प्रसंग लेकर बैठा हो, भले ही वह अपनी अतिरिक्त उपस्थिति क्यों नहीं चाह रहा हो और भले ही वह काका के भले की ही क्यों न कह रहा हो, काकाजी उससे दो टूक शब्दों में कह देते थे–'भइया, हमारे-आपके संबंध बड़े मजबूत हैं, बिल्कुल नहीं टूटे, लेकिन अब आप यहाँ से फूटे!' वे मुख पर सीधी बात कह देते थे। थोड़ी देर के लिए आगंतुक का चेहरा श्यामल होता था, लेकिन काका की निश्छल आदेश-प्रक्रिया को वह समझ जाता था और उठकर चला जाता था। यह सीमा भी उनकी शक्ति थी और उस शक्ति का नाम है–'अनुशासन'।

काकाजी जितना अनुशासन रख पाना, आत्मसंयम रख पाना और आत्म-व्यवस्था से स्वयं को नियोजित करना बहुत-बहुत कठिन कार्य है। उनके पूरे दिन की चर्या का एक निश्चित विधान रहता था। प्रात:काल अपनी छड़ी के साथ जब वे टहलने निकलते थे तो लोग उनके क़दमों की आहट सुनकर घड़ी की सुइयाँ मिलाया करते थे। सब-कुछ ग़लत हो सकता है, काका के टहलने का समय ग़लत नहीं हो सकता। आँधी हो या पाला हो, अंधड़ चल रहा हो या कि बरसात हो, काका के टहलने का समय निश्चित है। वह बरसात में छतरी लेकर निकलेंगे तो जाड़े में गरम कुर्ता पहनकर जाएँगे। लेकिन जाएँगे ज़रूर। ये बात बहुत-से लोग जानते हैं कि अपने इस नियमित शौक़ के कारण कई बार उनकी रेलगाड़ी छूट गई। वे प्लेटफॉर्म पर टहलते रह गए और किसी अन्य माध्यम से कविसम्मेलन में विलंब से पहुँचे।

आठ बजे उनको कॉफ़ी के साथ मक्खन लगे दो ब्रैड-पीस खाने हैं और थोड़े से भुने हुए चने। उसके बाद वे पत्रों का उत्तर लिखवाएँगे या लिखेंगे। दो घंटे कविता-लेखन के लिए निश्चित हैं। कविता लिखनी ही है, क्योंकि प्रात:काल जो अख़बार पढ़े हैं, उनमें छपी घटनाओं पर जो टिप्पणी वे कविता में कर सकते हैं, उसे वे किसी प्रकार टालने की गुंजाइश नहीं रखते थे। कोई विचार यदि जन्मा है, आइडिया की कोई कौंध अगर मस्तिष्क में आई है तो वह तत्काल कविता में ढल जानी चाहिए। छंद पर, ख़ासकर कुंडलिया छंद पर उनका विशेष अधिकार था। दोहा बनाना उनके दाएँ हाथ की दो अँगुलियों का खेल था, जिनसे क़लम पकड़ी जाती है। क़लम पकड़ी, दोहा तैयार। क़लम पकड़ के थोड़ा-सिर खुजा के फिर लिखने लगे तो कुंडलिया तैयार। एक तृप्तिबोध उनके चेहरे पर दिखाई देता था, जब वे अपने समय के अनुसार कार्य संपन्न कर लेते थे।

आँधी हो या पाला हो, अंधड़ चल रहा हो या कि बरसात हो.....वह बरसात में छतरी लेकर निकलेंगे तो जाड़े में गरम कुर्ता पहनकर जाएँगे। लेकिन जाएँगे ज़रूर।

समय हुआ भोजन का तो बारह बजे भोजन उन्हें मिल जाना चाहिए। पूरा घर-परिवार जानता है कि काका को बारह बजे भोजन करना है। बारह बजने में पाँच मिनट पर नहीं। अगर बारह बजे भोजन नहीं मिला तो काका की कड़कदार आवाज़ अपनी विशिष्ट व्यंग्य-शैली में किसी के भी लिए रचना तैयार कर देगी, इससे सभी स्नेहपूर्वक भयाक्रांत रहते थे। उनको खिलानेवाले को आनंद इसलिए आता था, क्योंकि वे खाने की समीक्षा तत्काल कर दिया करते थे। जो चीज़ अच्छी लगी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा, जो चीज़ प्रथम ग्रास में पसंद न आई, उसको थाली से साढ़े छह इंच दूर सरका दिया। जितना खाना है वह निर्धारित है, उससे एक कौर भी अधिक वे खाएँगे नहीं। आग्रह करनेवाले पर कुपित हो जाएँगे और वह कोप इस प्रकार का होगा, जिसमें कि दुनियावी क्रोध नहीं होगा लेकिन सुननेवाला समझ जाएगा कि अब दुराग्रह करना बेकार है। अगले ही क्षण कुछ ऐसी हलकी-फुलकी बात कर देंगे कि कोप कब किया गया था और जो कोपभाजन बना था, उस पर उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई, ये सब तेज़ हवा के झोंके में उड़ जाएँगे और जिस प्रकार बादलों के छँट जाने पर निश्छल,

गर तुम्हारा कोई काम हो जाए तो अच्छा और अगर न हो तो और भी अच्छा..

निरभ्र आकाश दिखाई देने लगता है, वैसे ही काका दिखने लगेंगे। यानी दूसरी सीमा भी उनकी शक्ति थी–बुरा माने तो माना करे कोई, पर छोड़ेंगे नहीं अपनी साफ़गोई।

तीसरी सीमा उनके व्यक्तित्व की यह थी कि वे अपने परिवार के युवा सदस्यों की चलती हुई मनमानी में कभी टीका-टिप्पणी नहीं करते थे। वे कठोर अनुशासक बनकर होती हुई गड़बड़ियों को नहीं रोकते थे, बल्कि उन्हें उनकी स्वेच्छाचारिता के लिए अपनी ओर से छूट देते थे। कोई संगीतकार बनना चाहता है, बनो संगीतकार। ढूँढो रास्ता। कोई हाथरस में नहीं रहना चाहता है, बाहर प्रगति के मार्ग ढूँढ रहा है, ढूँढो रास्ता, लेकिन प्रगति करो। तुम मेरे कर्मचारी रहे इतने वर्ष तक, अब अपना कामकाज शुरू करना चाहते हो, करो। सहर्ष जाओ, कोई पाबंदी नहीं, कोई अंकुश नहीं। कोई रोक-टोक नहीं।

ये बात सीमा इसलिए लगती है कि कोई व्यवसायी अगर इस तरह करने लगे तो उसका धंधा चौपट हो जाए, लेकिन काका ने कभी इस प्रकार की चिंता नहीं की, बल्कि अपने अधीनस्थों, अपने परिवार के नौजवानों के निर्णयों का स्वागत ही किया, कभी उनकी अवमानना नहीं की। सलाह वे अवश्य देते थे, लेकिन सलाह को मानने की बाध्यता की शर्त वे नहीं रखते थे। आप मानें तो अच्छा, नहीं मानें तो और भी अच्छा। बच्चन जी के इस कथन का उल्लेख वे प्राय: करते रहते थे कि अगर तुम्हारा कोई काम हो जाए तो अच्छा और अगर न हो तो और भी अच्छा। कैसी भी स्थिति में स्वयं को विचलित नहीं होने देते थे। इसके मूल में उनके व्यक्तित्व-निर्माण की उस प्रक्रिया का योगदान है, जो उन्हें प्रारंभिक दिनों की घनघोर ग़रीबी से प्राप्त हुई थी, जिसने पंद्रह दिन की उम्र में ही पिताविहीनता दिखा दी थी, जिसने माँ को आजीविका के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया था, जिसने चंद रुपयों के लिए मुनीमगीरी कराई थी, जिसने साइनबोर्ड बनवाकर अंदर की कार्य-क्षमताओं को खोजा था, जिसने संघर्षशील माँ, बड़े भाई की मदद करने के लिए क्या- क्या किया जा सकता है, इस प्रश्न के विविध हल सोचने को बाध्य किया।

कहीं देखा कि साइनबोर्ड लिखने से ज़्यादा पैसा मिल सकता है, कोशिश की कि हम भी कर देखते हैं। पहली बार साइनबोर्ड बनाया तो वह उससे ज़्यादा अच्छा बन गया, जिसका धंधा चल रहा था। काका के अंदर का चित्रकार जाग उठा और रंग-ब्रुश के ज़रिए कमाई करने लगा। नया-नया ग्रामाफ़ोन आया तभी। सोचा, स्थान-स्थान पर ग्रामोफ़ोन बजाकर पैसा कमाया जा सकता है तो खोल ली ग्रामोफ़ोन-रिकार्ड्स की एक दुकान 'गर्ग एंड कंपनी'। काफ़ी दिन तक चलाई। फिर कोई नया कारोबार सूझा। कोई क्या? संगीत की दिशा में प्रविष्ट हुए। 'संगीत कार्यालय' बनाया। लाउडस्पीकर वाली वो दुकान अपने मामा के पुत्र को दे दी और स्वयं संगीत से जुड़ गए। वे कार्य-खोज की इस प्रक्रिया में सदैव बेहतर की तलाश करते रहे। जैसे-जैसे बोध हुआ कि वे एक चित्रकार भी बन सकते हैं या उनके अंदर रेखाओं को जीवंत करनेवाला एक कथाकार छिपा हुआ है, वे साइन बोर्ड पर पौराणिक कथाओं के चित्र बनाने लगे। नल-दमयंती के

चित्र, रामकथा के चित्र, पौराणिक पात्रों के चित्र। फिर शायद उन्हें लगा कि इस कार्य को तो भारत में अनेक चित्रकार कर रहे हैं। संकल्प लिया ऐसे-ऐसे व्यक्तित्वों के चित्र बनाने का, जिनके चित्र संभवत: दूसरे चित्रकार न बनाएँ! और, फिर उन्होंने शास्त्रीय संगीत के विभिन्न क्षेत्रों के उन महारथियों के चित्र बनाए, जो यदि काका ने अब तक न बनाए होते तो अभी भी किसी अन्य ने नहीं बनाए होते, क्योंकि शास्त्रीय संगीत के प्रति जनता का इतना व्यापक समर्थन उन्हें उत्तर भारत में नहीं दिखाई दे रहा था। उन्होंने विष्णुदिगंबर पलुस्कर, भातखंडे, अहमदजान थिरकवा, अलाउद्दीन खाँ, विलायत खाँ, पं॰ रविशंकर तथा अन्य लगभग पचास और बड़े संगीतकारों के चित्र बनाए। अनेक राग-रागिनियों के चित्र कल्पना से बनाए। ये सभी चित्र संगीत कार्यालय में लगे रहते थे। वे चित्र, चित्रकला की दृष्टि से अद्भुत कार्य हैं। कहीं उन्हें दीमक न चाट जाए और थोड़ी-सी असावधानी से वे नष्ट न हो जाएँ, इसलिए चित्रकला की चिंता करनेवाली किसी अकादमी को चाहिए कि वह उन चित्रों को अमूल्य निधि मानकर उनकी व्यापक प्रदर्शनी भी आयोजित करे, ताकि कला-जगत् के लोग-एक हास्यकवि की अद्भुत और विलक्षण प्रतिभा से परिचित हो सकें। बहरहाल, उन्होंने कला-जगत् में जब जैसा चाहा किया और घर-परिवार, कार्यालय में भी, जिसने जो चाहा, उसे करने दिया। कोई टोका-टाकी या दखलंदाज़ी नहीं की। उनकी यह सीमा भी उनकी ताक़त ही थी।

> मज़े की बात ये है कि जब कोई व्यक्ति इस दुनिया से चला ही जाएगा तो क्या सात सौ और क्या सात लाख.....अचानक गंभीर होते हुए वार्तालाप का अंत किस हास्य-प्रधान बिंदु पर हो जाएगा , चीज़ों का रुख़-रवैया कब एकदम बदल जाएगा, यह कहा नहीं जा सकता था।

चौथी सीमा : घर-परिवार के लोग प्राय: मैंने नाराज़ देखे कि वे कभी भी नौकरों के सामने परिवार के सदस्यों का अपमान कर दिया करते थे। पक्ष सदैव नौकरों का लिया करते थे। कड़वी से कड़वी बात परिवार के सदस्यों को कह सकते थे, पर अधीनस्थ कर्मचारी के प्रति की गई उपेक्षा तनिक भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मैं समझता हूँ कि दूसरों को सीमा लगनेवाली यह बात उनकी ज़बरदस्त शक्ति थी कि वे काम करनेवाले की महत्ता जानते थे और उसमें ऊँच-नीच का भेद नहीं करते थे।

पाँचवीं सीमा : जिसको कविगण भी उपहास में कहा करते थे कि काका कृपण हैं, कंजूस हैं। दरअसल, काका, कंजूस नहीं थे, वे अपव्यय के विरोधी थे। वे अपनी क़ीमती से क़ीमती चीज़ किसी को भी प्रदान कर सकते थे, लेकिन अगर उन्हें यह लगे कि ये दस रुपए फ़ुजूल ख़र्च किए गए हैं तो वे दस रुपए उनके लिए तत्क्षण तनाव का कारण बन जाते थे। उस फ़ुजूलख़र्ची को लेकर परिवार के सामने अति कठोर भी हो जाते थे। कठोरता की प्रतिक्रियाएँ होतीं, लेकिन बड़ी ही सहज।

अभी पिछले दिनों जब वे ख़ासे बीमार रहने लगे तो मुकेश गर्ग ने काका जी से एक बात कही। वह बात क्या थी, यह जानने से पहले इतना जान लें कि काका परिवार में हास्य-प्रधान जनतंत्र बहुत पहले ही आ चुका

किसी से अपने शत्रु की प्रशंसा करना और उकसाने में न आना या उकसानेवालों को शांत करना, जो उस समय उनकी सीमा लगती थी, आज उनकी ताक़त लगती है...

था। जानते हुए भी कि सामनेवाला व्यक्ति जो बात कह रहा है, इसमें गंभीरता नहीं है और बात हँसी के लिए कही जा रही है, लेकिन फिर भी परिवार का अभिनय कौशल कथ्य-गांभीर्य बनाए रखते हुए भी उस हास्य को उजागर नहीं होने देता। मुकेश ने काका जी से कहा–'काकू, एक ऐसी गोली ईज़ाद हुई है, जिसको आप अपनी जीभ पर रखो तो रखते ही चौथाई पल में ही प्राण निकल जाएँगे।' काकाजी ने ज्ञापित किए बिना कि वे समझ रहे हैं कि ये हास्य की बात है, यों ही कही जा रही है, पर गंभीरता बनाए रखते हुए जिज्ञासा रखी–'क्या कहा, झट से प्राण निकल जाएँगे और कड़वाहट भी महसूस नहीं होगी?' इस पर मुकेश ने उत्तर दिया–'हाँ, काकाजी, उस गोली के बारे में कहा तो यही जाता है कि गोली अपनी जीभ पर रखी और सब समाप्त'। काका जी ने कहा–'भई वो गोली मिलती कहाँ है? हमको ला दो कहीं से।' मुकेश बोले–'हाँ ज़रूर ला देंगे।' काका ने पूछा-'वह गोली है कितने की?' मुकेश ने बताया–'यही कोई सात सौ साढ़े सात सौ की होगी।' इस पर काकाजी एकदम से हैरानी-भरे आवेश में बोले–'साढ़े सात सौ की! इतनी महँगी तो भइया हम नहीं ख़रीदते'।

मज़े की बात ये है कि जब कोई व्यक्ति इस दुनिया से चला ही जाएगा तो क्या सात सौ और क्या सात लाख। मगर काकाजी के साथ रोचकता यह बनी रहती थी कि अचानक गंभीर होते हुए वार्तालाप का अंत किस हास्य-प्रधान बिंदु पर हो जाएगा और चीज़ों का रुख़-रवैया कब एकदम बदल जाएगा, यह कहा नहीं जा सकता था। अंतर्विरोध रखनेवाली सारी बातें तिरोहित हो जातीं और झट से सामंजस्य स्थापित हो जाता। मुकेश वाली बात का उदाहरण देकर यह सिद्ध नहीं किया जा सकता था कि काका कंजूस थे और इच्छित मृत्यु भी यदि महँगी मिल रही हो तो अपनी कंजूस वृत्ति के रहते उसे ख़रीदने से कतराते थे, बल्कि वे स्वयं को कंजूस समझे जानेवाले दूसरों के भाव को भुनाते थे। उनमें ज़बरदस्त जिजीविषा थी और उससे कहीं अधिक उदारता। कंजूस यदि वह थे तो अपनी उम्र के प्रति थे, जिसे वह यों ही ख़र्च नहीं कर देना चाहते थे। बिल्कुल अंतिम दिनों में भी वह एक और पुस्तक रचने की योजना बना रहे थे।

अगली सीमा : कोई आपको गाली दे और चला जाए और आप कोई प्रत्युत्तर न दें तो ज़माना आपको नपुसंक और शक्तिहीन मानेगा। हाथरस नगर में ही ऐसा कई बार हुआ। उन्हीं के समकालीन कुछ कवियों ने कुछ विचित्र आरोप लगाए। आरोप का उत्तर तत्काल कुछ दिया जाना चाहिए, ऐसा उन्होंने कभी नहीं चाहा। इसके विपरीत उनके समर्थक कवियों ने चाहा और एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया, लेकिन काका तत्काल उत्तेजित प्रतिक्रिया में कभी भरोसा नहीं रखते थे। उनका कहना था कि यदि आपके अंदर सत्य है तो आपके अंदर का वह सत्य ही आपका सबसे बड़ा पक्षधर है। उस सत्य रूपी आंतरिक कवच के कारण आप पर किया गया कोई भी प्रहार लौटकर उसी व्यक्ति पर प्रभावित होगा, जिसने प्रहार करना चाहा होगा। कई बार पानी सर के ऊपर गुज़र गया तो मजबूरी में काका को अपना पक्ष भी प्रस्तुत करना पड़ा, लेकिन वह भी इतनी विनम्र भाषा में कि कहीं से लगा ही नहीं कि यह किसी हिंसक गतिविधि का हिंसक उत्तर है।

उस समय लगता था कि काका स्वयं को हीन क्यों मानते हैं! बार-बार कहते हैं कि भाई जो विरोध कर रहा है वह सिद्ध कवि है, मैं तो प्रसिद्ध हो गया हूँ। किसी

समाज जब अस्वस्थ हो जाता है तो निदान के लिए साहित्यकार ही वैद्य का काम करता है। काका साहित्य से बहुत अच्छी पंक्तियाँ उदाहरणार्थ गिनाई जा सकती हैं, लेकिन जो मुझे सबसे अच्छी लगती हैं वे दो पंक्तियाँ बताना चाहूँगा–

क़ब्रों पर चिपका दिए बीस-बीस के नोट,
मुर्दे उठकर आ रहे देने अपने वोट।

से अपने शत्रु की प्रशंसा करना और उकसाने में न आना या उकसानेवालों को शांत करना, जो उस समय उनकी सीमा लगती थी, आज उनकी ताक़त लगती है, क्योंकि वे सबके सब लोग, जिन्होंने क्षणिकावेश में उनका विरोध करना चाहा, वे सबके सब उनकी अंतिम यात्रा में बहुत ही विनत और विनम्र मुद्राओं में प्रणाम करते हुए दिखाई दिए।

एक बार वे काका के साहित्य को पढ़ें...

साहित्यिक स्तर पर काका जी के प्रति नाक-भौं, सिकोड़ने वाले लोगों की कमी नहीं रही है। मेरा उन सबसे अनुरोध है कि एक बार वे काका के साहित्य को पढ़ें, क्योंकि काका अब नहीं हैं, अत: वे अधिक वस्तुवादी ढंग से काका की कविताओं का मूल्यांकन कर सकते हैं। और कृपया बताएँ कि क्या कहीं काका ने नारी का अपमान किया? क्या कहीं काका ने समाज में निचले तबके के लोगों के प्रति अपनी पक्षधरता को कमज़ोर दिखाया? क्या काका ने अपनी समकालीन समस्याओं पर तात्कालिक टिप्पणियों देकर व्यंग्य और हास्य के माध्यम से सकारात्मक हल नहीं सुझाए? क्या काका ने देश की सर्वोच्च शक्तियों-द्वारा की गई ग़लतियों पर ऐसे इशारे नहीं किए, जिनसे कि आगामी समय में परिवर्तन हुए? क्या काका को जन-मन का समर्थन प्राप्त नहीं था? और जन-मन का समर्थन प्राप्त था तो उसके क्या कारण थे? वे अब यह भी सोचें कि क्यों बिना किसी प्रशासकीय आदेश और शासकीय अभियोजना के और बिना किराए की बसों के और बिना भाड़े के टट्टुओं के कोई शहर अपने कवि की अंतिम यात्रा को इस प्रकार आयोजित कर सकता है, जैसा 19 सितंबर को हाथरस में हुआ।

अंत में मैं एक बात और कहना चाहूँगा, जिसे अपनी न्यूनाधिक समझ से मैं जानता हूँ, वह यह कि जो भी कवि होता है उसके पास कुछ गिनी-चुनी चीज़ें अवश्य होती हैं। मसलन कल्पना, भावना, बुद्धि उसके उद्देश्य। काका के पास अद्‌भुत हास्यमयी कल्पनाशीलता थी। उनके पास समय का आकलन करनेवाली प्रत्युत्पन्न बुद्धि थी। उनका भावनालोक अपने प्रभावी वर्ग की न केवल भाषा को जानता था, बल्कि उसकी संवेदनाओं से भी परिचित था और उनका उद्देश्य था कि संसार में सकीर्णताओं के बंधन-बिना, जाति-धर्म-संप्रदायों की लघुकथाएँ त्यागकर लोग सिर्फ़ हँसें, क्योंकि हँसना ही अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है।

समाज जब अस्वस्थ हो जाता है तो निदान के लिए साहित्यकार ही वैद्य का काम करता है। काका साहित्य से बहुत अच्छी पंक्तियाँ उदाहरणार्थ गिनाई जा सकती हैं, लेकिन जो मुझे सबसे अच्छी लगती हैं वे दो पंक्तियाँ बताना चाहूँगा। चुनाव से जुड़ी है देश की व्यवस्था और इस पूरी व्यवस्था के मूल में है मतदाता। सभी परिचित हैं कि चुनाव-क्षेत्रों में प्राय: गड़बड़ियाँ होती हैं। बोगस वोट डाले जाते हैं। काका ने चुनाव-प्रणाली पर जो पंक्तियाँ कहीं थीं, वे हैं–

क़ब्रों पर चिपका दिए बीस-बीस के नोट,
मुर्दे उठकर आ रहे देने अपने वोट।

इन दो पंक्तियों की ही व्याख्या करें हमारे सुधी महान साहित्यकार, जो यथार्थवादी धारातल पर साहित्य को व्याख्यायित करना चाहते हैं। क़ब्रों पर बीस-बीस के नोटों का चिपकना, मुर्दों का वोट डालने आना और इस सबके बावजूद इस जनतंत्र का चलते रहना, इन सब बातों को काका ने बख़ूबी देखा था, बख़ूबी दिखाया था, बख़ूबी सुनाया था।

अंत के भी अंत में मैं एक गुज़ारिश और करना चाहता हूँ कि हास्य पर भी गंभीरता से चिंतन करना चाहिए और हास्य की महत्ता को समझा जाना चाहिए। 'सत्यमेव जयते' संकल्प वाक्य की रक्षा तभी हो सकती है जब उसकी पूर्वपीठिका में 'हास्यमेव जयते' भी हो।

❐ **जे** 116 **सरिता विहार, नई दिल्ली**

प्यार किया तो मरना क्या?

काका हाथरसी

जब मैं बीस बरस का था तो एक ज्योतिषी ने मेरा हाथ देखकर मेरी माँ से कहा था कि 'यह चालीस बरस पार कर ले तो बहुत समझो।' मेरे ऊपर इस घोषणा का कोई ख़ास असर नहीं पड़ा था, क्योंकि मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब था। हर समय कफ़ की शिकायत रहती थी, दातों में पायरिया था। मैंने एक-एक कर के दाँत निकलवाना शुरू कर दिया। नियमित रूप से प्रातः और सायं आठ-दस किलोमीटर टहलना, दौड़ लगाना, नीम की पत्तियाँ चबाना, बकरी का दूध पीना तथा हरे पत्तों की सब्ज़ियों का सेवन चालू कर दिया। इन सब चीज़ों का अनुकूल प्रभाव हुआ और उमर चालीस को पार कर गई।

पुस्तकालय में बैठकर नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन, विद्वान, कलाकार और महात्माओं के सत्संग इत्यादि के कारण मेरा झुकाव साहित्य, संगीत और कला की ओर होने लगा। कवि सम्मेलनों के निमंत्रण आने लगे, फिर तो पता ही नहीं लगा कि हम कब साठा के पाठा हो गए। ज्योतिषी की भविष्यवाणी भी भूल गए। लेकिन जब सत्तर पार हो गए, तो हमने देखा कि हमारे अनेक साथी भगवान को प्यारे हो गए, हम स्वस्थ-मस्त बने हास्य-व्यंग्य में और अधिक व्यस्त हो गए। मरना तो अलग, बीमार होने के लिए भी अवकाश नहीं मिलता था। धीरे-धीरे जीवन की नैया अस्सी के किनारे आ लगी। अब लोगों ने कहना शुरू कर दिया-'असिया सो रसिया'। वास्तव में हम कुछ रसीले हो भी गए थे। इतनी उमर में भी अपने को सही-सलामत देखकर हमें खुद ताज्जुब होता। कहीं नज़र न लग जाए, इसलिए हमने कहना शुरू कर दिया कि अब हम मरना चाहते हैं। हमारे मुँह से निकलना था कि लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

युवा हास्यकवि सोचने लगे कि बस काका के मरते ही अपनी तूती बोलने लगेगी। साहित्यकार सोचने लगे कि काका की वजह से गीत मर गए हैं और मंच पर हास्य की धारा बहने लगी है, वह समाप्त होगी तो गीतकारों का कल्याण होगा। परिवार के लोग सोचने लगे कि अच्छा है, भगवान सुन ले तो बीमे की रक़म मिल जाए। हमें लगने लगा कि अब हमारा वक्त नज़दीक आ गया है, अतः ऐसे स्थान पर चले जाना चाहिए, जहाँ गंगा नज़दीक हो, क्योंकि गंगा से हमारा लगाव शुरू से ही रहा है। हमने लोगों से कहना शुरू कर दिया कि 'अब हम मरनेवाले हैं, इसलिए हाथरस छोड़कर बिजनौर रहा करेंगे। वहाँ गंगा है और हमारी भतीजी के पति डॉ॰ गिरिराज शरण भी हैं, जो हमें बड़े प्यार से रखेंगे।'

जब हम बिजनौर पहुँचे तो डॉ॰ गिरिराज बोले-

जब हम बिजनौर पहुँचे तो डॉ॰ गिरिराज बोले– 'काका अच्छा हुआ, जो आप इधर आ गए। बिजनौर मरने के लिए बहुत अच्छी जगह है, लेकिन यहाँ मेरे मित्र कुछ डॉक्टर हैं, जो आपको आसानी से मरने नहीं देंगे।'

'काका अच्छा हुआ, जो आप इधर आ गए। बिजनौर मरने के लिए बहुत अच्छी जगह है, लेकिन यहाँ मेरे मित्र कुछ डॉक्टर हैं, जो आपको आसानी से मरने नहीं देंगे।' हम निराश हो गए और कुछ दिन वहाँ बिताकर दिल्ली चले आए। दिल्ली में अपनी दूसरी भतीजी के पति डॉ॰ अशोक चक्रधर के घर हम ठहरे।

अशोक चक्रधर बोले–'काका आपने मरने की ठान ली है, तो फिर दिल्ली में मरना ठीक रहेगा। नेता टाइप लोग सब राजधानी में ही मरते हैं। आप देख लेना, जिस दिन आपकी मृत्यु होगी, उस दिन मैं सारी दिल्ली बंद करा दूँगा। राजघाट से धोबीघाट तक जुलूस ही जुलूस दिखाई पड़ेगा। केंद्रीय मंत्रिमंडल आपके शव पर पुष्प चढ़ाने आएगा। मैं आपके रथ पर खड़ा होकर कमेंट्री करूँगा, जिसे दूरदर्शनवाले दिखाते रहेंगे। आपका हो जाएगा काम और मेरा हो जाएगा नाम। बोलो मंजूर हो तो इंतज़ाम करूँ।

इतने में ही वहाँ कर्णवास गंगातटवाले एक पंडा आ गए, जो गत पचास वर्षों से हमसे परिचित थे। पंडाजी बोले, 'देखो काका, आप कवि हैं, गंगाप्रेमी हैं और किसी महात्मा से कम नहीं हैं। मरने का विचार आपका उत्तम है, हमारे देश में अनेक मुनियों ने इच्छामृत्यु का वरण किया है, जब भी आप चाहेंगे तो हम कर्णवास में पहले से ही आपकी चिता सजवा देंगे या चाहेंगे तो जलसमाधि दिलवा देंगे। लेकिन जबतक आपके होशहवास दुरुस्त हैं तब तक हमारी राय मानें, तो एक गाय पुन्न कर दें।'

अशोक चक्रधर बोले–'काका आपने मरने की ठान ली है, तो फिर दिल्ली में मरना ठीक रहेगा। नेता टाइप लोग सब राजधानी में ही मरते हैं।

हमें पंडितजी की बात जँची नहीं। गर्मी भी काफ़ी पड़ने लगी थी, इसलिए मसूरी चले गए। वहाँ नित्य प्रति बड़े-बड़े लोग कैमिल्स बैक रोड पर टहलने जाते हैं। उनसे भी हमने चर्चा करके राय माँगी। उनका कहना था कि 'मैदानी इलाक़ों में तो सभी मरते हैं, लेकिन पहाड़ पर मरना सबके नसीब में नहीं होता। यहाँ मरने का मज़ा ही कुछ और है। यहाँ न लकड़ियों का झंझट है और न चिता सजाने का झगड़ा। डॉक्टर भी आसानी से नहीं मिलता, जो मरते को बचा ले। चार-पाँच मित्र मिलकर लाश को पहाड़ की चोटी से लुढ़का देंगे। चारों ओर बर्फ़ से ढकी हुई श्वेत-धवल चोटियाँ आपका स्वागत करेंगी। बड़े-बड़े तीर्थयात्रियों की बसें जब यहाँ खड्डे में गिरती हैं तो सभी सीधे स्वर्ग चले जाते हैं। अजी और तो और पांडव तक यहाँ गलने को चले आए थे। आप भी जीवनमुक्त हो जाएँगे, बार-बार मनुष्य-योनि में नहीं भटकना पड़ेगा।'

इस बीच हमें मथुरा रेडियो से एक कार्यक्रम का निमंत्रण मिल गया। हम मथुरा चले आए, वहाँ ब्रज कला केंद्र वाले भैयाजी से भेंट हुई। भैयाजी से जब बात छिड़ी तो वे बोले 'काका, मरने के चक्कर में आप इधर-उधर क्यों भटक रहे हैं, पूरा बंगाल इस शुभकर्म के लिए यहाँ आता है। ब्रज में सभी देवी-देवताओं का निवास है। मथुरा में आप मरेंगे तो सीधे मोक्ष को प्राप्त होंगे। उस दिन हम नौटंकी भी करा देंगे। होली दरवाज़े पर झंडा लगवा दिया जाएगा। आप मोक्षधाम को जाएँगे और हम रबड़ी-खुरचन उड़ाएँगे। फिर आपकी पुण्यतिथि पर प्रति वर्ष नगाड़ा बजता रहेगा। चंदा होता रहेगा और धंधा चलता रहेगा। बोलो मंजूर हो तो आख़िरी घुटवा दूँ बादाम-पिस्ते की केसरिया ठंडाई।' हमने सोचकर जवाब देने के लिए कहते हुए उनसे विदा ली और हाथरस आ गए।

हाथरस में हमारे मरने की चर्चा आग की तरह फैल गई। सभी शुभचिंतक इकट्ठे

सामने बैठी एक बुढ़िया पर हमारी नज़र गई, जिसकी सफ़ेद ज़ुल्फ़ों पर लाइट मार रही थी। हम उस पर मर गए और मंच पर ही अड़ गए .....

हो गए। हमारा बेटा लक्ष्मीनारायण बोला–'काकू, आपको सब लोग बहका रहे हैं, आपकी कुंडली साफ़ कह रही है कि आप ज़मीन पर मर ही नहीं सकते। अभी तो आपको एक अमरीका यात्रा और करनी है। मैं प्रोग्राम बना देता हूँ। जाने से पहले पचास लाख का बीमा भी करा दूँगा। अगर हवाई जहाज़ गिर गया, तो आपको बिना कष्ट मौत मिलेगी, और इधर मैं बीमा की रक़म डकार जाऊँगा। ब्याज से प्रतिवर्ष श्राद्ध कर दिया करूँगा, फिर सैकड़ों विशिष्ट व्यक्तियों के साथ मरने का मज़ा ही कुछ और है।

इस चकल्लस में कुछ लोगों ने गोष्ठी जमा ली। कविता-पाठ हुए और पत्रकार सम्मेलन हुआ। हमें महसूस हुआ कि अभी तो हमारी आवाज़ में पूरी कड़क है, तभी सामने बैठी एक बुढ़िया पर हमारी नज़र गई, जिसकी सफ़ेद ज़ुल्फ़ों पर लाइट मार रही थी। हम उस पर मर गए और मंच पर ही अड़ गए, मित्र लोग ताड़ गए और सबने मिलकर घोषणा कर दी....काका अठासी के हो गए हैं। अब पूरा शतक बनाएँगे और हाथरस में ही मरेंगे। शोर-शराबा सुनकर काकी आ गईं तो सब भाग लिए और हम भीगी बिल्ली बनकर उसके साथ बैडरूम में यह कहते हुए चले गए...

बुढ़िया मन में बस गई,
लाइट मारें केस।
चल काका घर आपुने,
बहुत रह्यो परदेस।

प्यार किया तो..
प्यार किया तो..
प्यार किया तो..
मरना क्या?

स्मृतियाँ मेरे साथ हैं

डॉ॰ मीना अग्रवाल

साल के बारह महीनों में से ग्यारह महीने न जाने कब और कैसे बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता। लेकिन जैसे ही सितंबर माह आता है, मन बचपन की ओर लौट आता है। याद आने लगती है मायके की, हाथरस-स्थित अपने पैतृक आवास की। अपने काका की, जिनका जन्मदिन है 18 सितंबर और अद्‌भुत बात यह है कि उनका निर्वाण-दिवस भी 18 सितंबर ही है।

आज भी जब मैं हाथरस के घर की ऊपरी मंजिल से देखती हूँ तो दीवारों-मकानों के पार वही भीड़ दिखाई देती है, जो मैंने बालपन में देखी थी। यह मेरे मायके का वही स्थान है गली गंगाधर, जहाँ मैंने अपने बचपन के अनमोल क्षण बिताए हैं। मैं इस घर को ही नहीं, बाहर के उन सभी दृश्यों को पहचानती हूँ, जो एक-एक करके वर्षों मेरी स्मृति से गुजरते रहे हैं। दूर-दूर तक मकानों और भवनों की कतारों से दृष्टि हटाकर मैं अपने भीतर झाँकती हूँ तो मुझे दिखाई देता है अतीत का वह आईना, जिसमें बचपन से लेकर अब तक की कितनी ही परछाइयाँ उभर-उभर कर डूब रही हैं और मुझे याद दिला रही हैं, वह सब जो मैं बहुत पीछे छोड़ आई हूँ। आज वे स्मृतियाँ मेरे साथ हैं। मेरे बालपन की स्मृतियाँ, मेरे काका की स्मृतियाँ। कहते हैं कि विवाह के बाद बेटी सब कुछ भूल जाती है, पर अपना मायका कभी नहीं भूलती। आइए, मैं आपको ले चलती हूँ अपने अतीत की ओर।

हाथरस की गली गंगाधर

हाथरस की गली गंगाधर का यह घर, जहाँ मैं पली-बढ़ी। नहीं, मैं कुछ नहीं हूँ, मेरी कोई पहचान नहीं है, कहना यों चाहिए कि यह वही घर है, जहाँ काका हाथरसी ने अपना सक्रिय जीवन बिताया। वह काका हाथरसी जिनके नाम से हाथरस को साहित्यिक पहचान मिली। उन्हीं की छत्र-छाया में, मैं 1947 के 20 नवंबर को दुनिया में आई। मुझे गर्व है कि मैं काका की बाहों में खेली हूँ। तीन भाइयों की तीन बहिनों के बीच मैं मँझली हूँ। काका की देख-रेख में मैं पली-बढ़ी और शिक्षा पाई। मुझे यह सच स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि आज जो कुछ भी मैं हूँ, उसके पीछे काका का आशीर्वाद ही है।

काका बच्चों को बहुत अधिक प्यार करते थे। बच्चों की हँसती, मुस्कुराती, खिलखिलाती मुख-मुद्रा उनका मन मोह लेती थी। मुझे याद है, मैं जब छोटी थी, गोल-मटोल थी और हँसती भी खूब थी। काका मुझे प्यार से 'टमाटर' कहकर बुलाते थे और मैं भी टमाटर

नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाती थी। काका बच्चों को प्यार करके ही छुट्टी नहीं देते थे। कविसम्मेलनीय यात्रा से लौटने के बाद वे बच्चों के साथ बैठकर उनकी बातें सुनते, उन्हें समझाते, जीवन जीने का तरीका सिखाते और हम हँसते-हँसते जीने की कला सीख जाते।

वे बच्चों को पढ़ने के लिए सदैव प्रोत्साहित करते थे। वह ऐसा समय था, जब लड़कियों को पढ़ाना अच्छा नहीं समझा जाता था। दादी के विरोध के बाबजूद काका ने मुझे और मेरी बहिनों को पढ़ाने की ठान रखी थी। काका साहित्यकार थे, कवि थे, संगीत के पारखी थे, समय की माँग को अच्छी तरह समझते थे। वह अच्छी तरह जानते थे कि शिक्षा के संबंध में ही क्या, किसी भी विषय में बेटे-बेटियों के बीच भेद-भाव करना अन्याय होगा। इसीलिए परिवार में लड़कियों को पढ़ाने की कोई परंपरा न होने पर भी उन्होंने हमें विद्यालय में प्रवेश दिलाया और मुझे गर्व है कि परिवार में लड़कियों की स्नातक और बाद की पढ़ाई मुझसे ही आरंभ हुई। आज भी मैं सोचती हूँ, यदि काका जैसा खुले विचारों वाला दूरदर्शी व्यक्ति न होता तो मेरा शैक्षिक विकास न हो पाता। जीवन के सफ़र में आगे बढ़ने में काका के साथ काकी की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने शांत रहकर, सब कुछ सहकर हमें आगे बढ़ाया और काका की कविताओं की प्रेरणा भी बनीं।

सन् 1960 की बात है। मैं मात्र तेरह साल की थी। घर में उत्सव का माहौल था, मेला-सा लग रहा था। बड़े-बड़े संगीतज्ञ आए हुए थे। अवसर था 'संगीत' की रजत जयंती का । सन् 1935 में काका ने 'संगीत' मासिक पत्रिका का शुभारंभ किया था। 1960 में पच्चीस वर्ष पूरे होने पर संगीत की रजत जयंती पूरे उल्लास के साथ मनाई गई। काका उल्लसित थे, संगीतमय माहौल था। उत्सव तीन दिनों तक चला। उस अभूतपूर्व उत्सव की धुँधली, पर स्पष्ट झलक आज भी मेरे मन में बसी हुई है। साम-गान करते हुए संगीत विद्वानों के स्वर आज भी मन में गूँज रहे हैं। पंडित रविशंकर के सितार की झंकार, आचार्य बृहस्पति जैसे संगीत मर्मज्ञों की उपस्थिति और नृत्यांगना सितारादेवी के घुँघरुओं की अनगूँज आज भी मन को मोहित कर रही है। ऐसा था काका का संगीत के प्रति लगाव। काका चाहते थे कि भारतीय संगीत जन-जन तक पहुँचे और उसकी अनुगूँज देश में ही नहीं विदेशों में भी सुनाई दे। यही कारण है कि संगीत की पुस्तकों का एकमात्र प्रकाशन संस्थान 'संगीत कार्यालय' काका द्वारा हाथरस में स्थापित किया गया, जो आज देश में और अन्य देशों में भी भारतीय संगीत की पताका फहरा रहा है।

काका मुझे प्यार से 'टमाटर' कहकर बुलाते थे और मैं भी टमाटर नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाती थी।

मीना लल्ली! मैं तेरे लिए एक लड़का देख के आया हूँ

बात अक्टूबर 1967 के अंतिम सप्ताह की है। काका संभल (मुरादाबाद) के कवि सम्मेलन से लौटकर आए और आते ही बोले–'मीना लल्ली! मैं तेरे लिए एक लड़का देख के आया हूँ, जो सुंदर भी है और सुशील भी। घर-बार भी बहुत अच्छा है।' मैं तो अचानक काका की बात सुनकर स्तंभित रह गई। पहले लड़की का साहस ही नहीं होता था कि अपने पिता के सामने इस संबंध में कुछ कह सके। लज्जा से मेरी आँखें झुक गईं। काका मुझे बहुत प्यार करते थे। मेरी हिम्मत नहीं थी कि मैं उनकी किसी बात को अस्वीकार कर दूँ और फिर उस समय लड़कियाँ इस विषय में प्रतिरोध कर भी नहीं सकती थीं। जो बड़ों का निर्णय होता था, बस वही फ़ाइनल होता था।

मैंने चुपचाप उनकी बात सुनी और हिम्मत जुटाकर धीरे से बोली–'काकू, आप तो कह रहे थे कि मैं अभी तेरी शादी नहीं करूँगा। तू जितना चाहे पढ़। अभी तो मेरी पढ़ाई पूरी ही नहीं हुई है।'

काका ने मेरी बात सुनी और बोले–'मैं ऐसा ही लड़का देखकर आया हूँ, जो तुझे पढ़ाएगा, जितना तू पढ़ना चाहेगी।' और विवाह के बाद जब काका ने देखा कि मुझे पढ़ने की अनुमति मिल गई है और मैंने एम॰ए॰ में एडमीशन ले लिया है तो काका ने मेरे पति डॉ॰ गिरिराजशरण

'मैंने एम॰ए॰ में एडमीशन ले लिया है तो काका ने मेरे पति डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल को पत्र लिखा....'

अग्रवाल को पत्र में लिखा–'तुम उसे एम॰ए॰ में पढ़ा रहे हो, यह तुम्हारी उच्च मनोवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो लड़की पढ़नेवाली हो और उसे न पढ़ाया जाए तो हम अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते। उसे तुम बराबर शिक्षा देते-दिलाते रहोगे तो हो सकता है मीना-'शरण' परिवार में चमके और कुछ करके दिखा दे।' ऐसे थे सहज मन वाले काका।

सहज-स्वाभाविक मन वाले काका

शादी के समय की एक घटना और याद आ रही है। जैसाकि समाज में प्राय: देखने को मिलता है कि लड़के वाले लड़की वालों से अपने को बहुत ऊपर मानते हैं, मेरे विवाह के समय भी कुछ ऐसा ही हुआ। हुआ यूँ कि जब बारात संभल से हाथरस पहुँची तो वहाँ बारातियों की अपेक्षा के अनुसार सत्कार नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि काका को इस प्रकार से सत्कार करने का कभी अवसर ही नहीं मिला था, क्योंकि उनका तो हमेशा सत्कार हुआ था। दूसरी बात यह भी थी कि संभल में दूसरों का सत्कार करने की परंपरा रही है। इसीलिए उन्हें बारातियों के रूप में स्वागत की अपेक्षा होना स्वाभाविक ही था। बाद में काका ने मेरे पति डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल को पत्र लिखकर अपनी ग़लती की माफ़ी भी माँग ली। उन्होंने लिखा–'मैं अपने कर्त्तव्य-पालन में असफल रहा। बरात का सम्मान और ख़ातिरदारी, जैसी होनी चाहिए थी, उसे हम लोग नहीं कर सके। हमने जो लोग धर्मशाला में नियुक्त किए थे, वे भी अनुभवहीन ऐसे ही निकले जैसे हम। मुझे मालुम है कि बरात में बहुत ऊँचे-ऊँचे व्यक्ति आए थे, उनका यथायोग्य सत्कार न होने से तुम सब खिन्न हो गए। यह स्वाभाविक ही था। उन सबसे मैं लिखित क्षमा माँगता हूँ, चाहे तो यह पत्र सबको दिखा देना।' ऐसी थी सहज-स्वाभाविक मन वाले काका की महानता।

आगे बढ़ने का गुर अभावों से ही सीखा

जीवन के अंतिम वर्षों में काका बिजनौर में मेरे पास दो वर्ष रहे। मुझे उनके पास बैठकर बहुत बातें करने का अवसर मिला। अक्सर मैं उनसे उनके अतीत के बारे में पूछती थी। वे बड़े ही मनोयोग से अपने प्रारंभिक जीवन के कष्टभरे दिनों के विषय में विस्तार से बताते थे। जब काका केवल 15 दिन के थे तभी मेरे बाबा यानी काका के पिताजी का प्लेग की महामारी में निधन हो गया। काका अभावों में पले और बड़े हुए। सात वर्ष की अल्पायु से ही उन्होंने नौकरी की। जब मैंने उनसे पूछा–'काका इतने कष्टों में आप इतना आगे कैसे बढ़े तो उन्होंने सहज ही उत्तर दिया–'वैसे तो सब प्रभू की ही

कृपा रही बेटी, लेकिन जीवन में आगे बढ़ने का गुर मैंने अभावों से ही सीखा है।' उन्होंने समझाते हुए कहा–'इंसान को बड़ा होने पर कभी अभिमान नहीं करना चाहिए और अपनी ज़मीन को भी नहीं भूलना चाहिए।' लेकिन आश्चर्य यह है कि काका के जीवन का संघर्ष उनकी कविताओं में कहीं भी प्रतिबिंबित नहीं हुआ है। उन्होंने कष्टों को भी हँसकर उड़ा दिया।

जो लोग गर्गजी या प्रभूजी कहा करते थे, अब काका कहने लगे

एक दिन बिजनौर में मैं अपनी दोनों बेटियों के साथ काका के पास बैठी थी, तभी छोटी बेटी अनुभूति ने, जिसे काका प्यार से उड़नखटोला कहा करते थे, पूछा–'काकू, आपका असली नाम तो प्रभूलाल गर्ग है तो फिर आपका नाम 'काका' कैसे हो गया?' उन्होंने उसे बताया–'बेटी, हाथरस में अग्रसेन जयंती पर हर साल नाटक हुआ करते थे। मैं भी उनमें हिस्सा लेता था। उन दिनों मैं थोड़ी-थोड़ी कविता भी करने लगा था। ऐसे ही एक उत्सव में मुझे समाज के एक चौधरी की भूमिका मिली, जो खलनायक जैसी थी। नाम था उसका काका। नाटक बहुत सफल रहा। दूसरे दिन जब हम बाजार में निकले तो इधर-उधर से आवाज़ें आने लगीं–' देखो, वह जा रहा है काका।' पहले जो लोग हमें गर्गजी या प्रभूजी कहा करते थे, अब काका कहने लगे और इस तरह हमारा नाम 'काका' हो गया। हाथरस में जन्म लेने के कारण 'हाथरसी' हमने बाद में जोड़ लिया। और इस तरह हम बन गए काका हाथरसी।'

काका का हास्य-व्यंग्य साफ़-सुथरा और सरल होता था, जिसे जनसामान्य भी सहजता से समझकर खिलखिला सकता था। काका कहा करते थे– मेरी कविताएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें मैं बहू-बेटियों के बीच भी गर्व के साथ सुना सकता हूँ।

काका का हास्य-व्यंग्य साफ़-सुथरा और सरल होता था, जिसे जनसामान्य भी सहजता से समझकर खिलखिला सकता था। काका कहा करते थे– मेरी कविताएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें मैं बहू-बेटियों के बीच भी गर्व के साथ सुना सकता हूँ। हँसना-हँसाना काका का जीवन था। वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार श्री अक्षयकुमार जैन की ये पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं–काका ने यह सिद्ध कर दिया है कि भले ही शृंगार रसराज हो, किंतु उनके हास्य और व्यंग्य में रसराज की पैठ है।

❐ **एफ़** 403, **पार्क व्यू सिटी**-2, **सोहना रोड**
गुड़गाँव (हरियाणा)

अतीत के गलियारे से

सुधा ओम ढींगरा

अतीत के पलों को यादों की अँगूठियों में हीरे, पन्ने, नीलम, मूँगे और पुखराज-सा जड़कर मैंने अपने हृदय की संदूकची में सुरक्षित रखा हुआ है। जब भी अतीत के गलियारे में झाँकने को मन करता है तो उन अँगूठियों को पहन लेती हूँ और सुखद अनुभूतियों से सराबोर हो जाती हूँ। आज उन अँगूठियों को पहनकर ऐसा महसूस हो रहा है कि जिस धन को मैं वर्षों से अपना, सिर्फ़ अपना समझती थी, वह मेरा कहाँ है... वह पूँजी तो आप सबकी धरोहर थी, मेरे पास। उसे आज आपके साथ साझा कर रही हूँ...।

वह एक अलसाई सुबह थी। बिस्तर से उठने को मन नहीं कर रहा था। दो वर्ष का बेटा सारी रात सो नहीं पाया था, सर्दी-जुकाम की जकड़ में था और उससे परेशान वह मेरे साथ लिपटा हुआ सोया पड़ा था।

जिस धन को मैं वर्षों से अपना, सिर्फ़ अपना समझती थी, वह मेरा कहाँ है... वह पूँजी तो आप सबकी धरोहर थी, मेरे पास। उसे आज आपके साथ साझा कर रही हूँ...

जालंधर से मेरे मम्मी-पापा हमारे पास आए हुए थे और वे मुझे धोबी, बावर्ची, मेहतरानी, माली यानि घर और बाहर के सब तरह के कार्य करते देख कर कई बार परेशान हो जाते थे। बच्चा छोटा होने की वजह से मैं ढंग से आराम भी नहीं कर पाती थी। उनकी कोशिश रहती थी कि मैं अधिक-से-अधिक आराम कर सकूँ। वे सुबह मुझे बिस्तर से उठने नहीं देते थे। मेरे पति डॉ॰ ओम ढींगरा को स्वयं ही नाश्ता करवा देते थे। वे सोचते थे कि उनके भारत लौटने के बाद तो फिर मुझे इन सब मोर्चों पर जुटना ही है। यह बात सन् 1989 की है। तब अमेरिका में गृहकार्य और बाहरी कामों, बाग़-बगीचे और यार्ड वर्क के लिए कोई मानुषी सहायता मिलने की सुविधा नहीं थी। सब कार्य स्वयं करने पड़ते थे। अब मैक्सिन लोग इन कार्यों के लिए उपलब्ध हैं। मैं भी मम्मी-पापा के लाड़-प्यार का सुख लेती हुई बिस्तर पर करवटें बदलकर झपकियाँ ले रही थी। तभी फ़ोन की घंटी आधी रात में लाउडस्वीकर से माता के जयकारे-सा स्वर निकालती गहरी निद्रा तोड़ती महसूस हुई। पापा ने रसोई में फ़ोन उठा लिया था और होल्ड ऑन कहकर यह बताने आ गए थे कि मैं अपने कमरे का फ़ोन उठा लूँ, उस समय कॉर्डलेस फ़ोन नहीं हुआ करते थे।

दूसरी तरफ़ कोई मिस्टर गर्ग थे, जिन्हें मैं नहीं जानती थी। उन्होंने मुझे कॉल किया था कि काका हाथरसी जी और वीरेंद्र तरुण जी अमेरिका टूर पर आ रहे हैं, अगर मैं उनका कार्यक्रम करवा सकूँ। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की सेंट लुईस शाखा की उन दिनों मैं अध्यक्ष थी कार्यक्रम की तिथि और कुछ औपचारिक बातों के बाद उनसे क्या बात हुई, कुछ याद नहीं। यादों में बस काकाजी के नाम से उत्साहित होकर बिस्तर से

मैंने उन्हें खुशी से उछलते हुए बताया कि काका हाथरसी जी अमेरिका टूर पर आ रहे हैं और हमने उनका कार्यक्रम करवाना है। पापा ने उनकी कई कुंडलियाँ सुना दीं। .....

कूदना अंकित है। मम्मी-पापा मेरे कमरे में ही आ गए थे और काकाजी का नाम उन्होंने भी सुना था।

जिज्ञासा से वे मेरी ओर देख रहे थे। मैंने उन्हें खुशी से उछलते हुए बताया कि काका हाथरसी जी अमेरिका टूर पर आ रहे हैं और हमने उनका कार्यक्रम करवाना है। पापा ने उनकी कई कुंडलियाँ सुना दीं। मेरे पापा व्यवसाय से डाक्टर पर स्वभाव से शायर थे। बस उस दिन के बाद से कार्यक्रम तक मुझे ऐसा महसूस होता रहा, जैसे मैं हवा में उड़ रही हूँ।

काका जी की विशुद्ध हास्यरस में रची-बसी कविताएँ, कुंडलियाँ, छक्के बचपन से सुनती आई थी। बसअड्डे व रेलवे स्टेशन के बुकस्टाल से इनकी पुस्तकें लेकर गंतव्य स्थान पर पहुँचने तक रास्ते-भर पढ़ते जाते थे।

हॉल बुक करवाने, कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करने और प्रोग्राम के निश्चित दिन तक मैं चक्कर घिन्नी-सी घूमती रही। 1982 में मैं विवाहोपरांत सेंट लुईस आई थी। हिंदी के लिए अमेरिका की धरती को बंजर देखकर भावी पीढ़ी के लिए चिंतित हो गई थी और अमेरिका-प्रवेश के कुछ माह के भीतर ही छोटे बच्चों को हिंदी पढ़ाने का स्कूल खोल लिया था। वाशु यानि वाशिंगटन यूनिवर्सिटी सेंट लुईस में हिंदी विभाग नया-नया खुला था और मैंने वहाँ हिंदी पढ़ानी शुरू कर दी थी। अमेरिका के भौगोलिक विस्तार की वजह से भारतीय दूर-दूर फैले हुए थे। आज की बनिस्बत संख्या में भी भारतीय बहुत कम थे। मैं पत्रकार थी और साहित्यिक वातावरण से आई थी। ऐसा महसूस होता था कि उजाड़ बियाबान में आ गई हूँ। साहित्य के लिए भूमि, खाद-पानी और कहीं कोई प्रेरणा नहीं थी। यह सोचकर कि अकेला वृक्ष भी मुरझा जाता है और रचनाशील हृदय को कॉफ़ी हाउस जैसा माहौल चाहिए, मैंने कविता की गोष्ठियाँ प्रयोग के रूप में आरंभ कीं। सौभाग्य से हिंदीभाषी सम्मिलित होने लगे। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के बारे में पता चलते ही मैं इसकी सदस्य बन गई थी और इसकी शाखा खोलकर संस्था का वार्षिक अधिवेशन सेंट लुईस में करवा चुकी थी। शाखा के अंतर्गत रेडियो प्रोग्राम भी शुरू हो चुका था। सारी भूमिका बाँधने के पीछे भाव यह है... कि हिंदी का इतना कार्य कर रही थी, पर अमेरिका में कवि-सम्मेलन करवाने का यह मेरा प्रथम अनुभव था। हालाँकि विश्वास था कि अधिवेशन के बाद कवि सम्मेलन के लिए हिंदीभाषी एकत्रित हो जाएँगे। फिर भी उत्तेजना और उत्साह की मिली-जुली भावनाओं से घिरी थी, क्योंकि कार्यक्रम काका जी का था। बहुत नर्वस थी। प्रोग्राम की सफलता की कामना करते-करते वह दिन आ गया जिसका इंतज़ार था। काकाजी कार्यक्रम वाले दिन दोपहर को आए। काकाजी का आशीर्वाद लेकर हॉल में इंतज़ाम देखने चली गई थी।

काकाजी की लोकप्रियता और मेरी मेहनत रंग लाई। हॉल खचाखच भर गया था। आरंभिक दौर था। अमेरिका में कवि-सम्मेलन इतने प्रचलित नहीं थे, जितने आज हैं। काकाजी की कविताएँ हर कोई सहज और सरलता से समझ सकता है। इसलिए अहिंदीभाषी और आस-पास के क़स्बों से भी लोग आए थे। कार्यक्रम बेहद सफल रहा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि अमेरिका में कवि-सम्मेलनों के प्रति लोगों की रुचि जगाने में काकाजी की इस यात्रा का बहुत बड़ा हाथ है। उनके कार्यक्रम अगले कई वर्षों के हास्य कवि-सम्मेलनों की नींव का पत्थर बने।

जैसे कि मैं पहले चर्चा कर चुकी हूँ, अमेरिका की भौगोलिक स्थिति के कारण से हिंदीभाषी दूर-दूर थे। कवि-सम्मेलनों के प्रचार-प्रसार से वे एक छत तले इकट्ठे होकर अपनी भाषा और भावी पीढ़ी तक उसे पहुँचाने के बारे में सोचने लगे। काका जी के प्रोग्रामों के बाद ही यह प्रक्रिया शुरू हुई।

कार्यक्रम वाली रात तो रात्रि-भोज और लोगों से मिलने-मिलाने में ही व्यतीत हो गई। दूसरे दिन की सुबह नई उमंग और तरंग लेकर आई। काका जी, वीरेंद्र जी, मेरे पापा और मम्मी की मित्रता हो गई। वे सुबह सैर को जाते

कार्यक्रम बेहद सफल रहा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि अमेरिका में कवि-सम्मेलनों के प्रति लोगों की रुचि जगाने में काकाजी की इस यात्रा का बहुत बड़ा हाथ है। उनके कार्यक्रम अगले कई वर्षों के हास्य कवि-सम्मेलनों की नींव का पत्थर बने।

लौटकर नाश्ता कर अपने कमरे में चले जाते। दोपहर के भोजन के समय मेरे पति भी घर आ जाते। सैर के समय बातों का टूटा सिरा फिर पकड़ा जाता। मेरे पति भी कई बार वार्तालाप में हिस्सा लेते और अक्सर ऑफ़िस वापस जाने में देरी कर देते, फिर हँसकर कहते–'पता नहीं, यह सौभाग्य फिर कब मिलेगा।

दोपहर भोजनोपरांत वे फिर कमरे में चले जाते। वे एक सप्ताह रहे। कई बार हमें पता भी नहीं चलता था कि वे घर में हैं। कोई अपेक्षा नहीं, कोई माँग नहीं, बस जब बुला लो, कमरे से बाहर आ जाते थे। शाम की चाय नाश्ते के समय पापा के साथ बातों व कभी-कभी कविताओं का दौर चलता। काका जी को पता चला था कि पापा उपेंद्रनाथ 'अश्क' जी के छोटे भाई हैं। अश्क जी छह भाइयों में दूसरे नंबर पर थे और पापा चौथे पर। पापा के प्रति उनका व्यवहार पहले दिन से ही सौहृर्दपूर्ण था, अब और स्नेही हो गया। बात-बात में पापा को संबोधित करने लगे थे। रात्रि-भोज के बाद हर रोज़ महफ़िल जमती। कभी उनके प्रशंसक आते और कभी नए रचनाकार, जिन्हें उन्होंने छक्का, मुक्तक, कुंडली, दोहे का भेद और मात्रा की गणना सिखाई। बेटे विभु को सुलाने के बाद मैं और मेरे पति, मौन श्रोता बन, पापा और उनके गंभीर विषयों पर विचार-विमर्श को मंत्रमुग्ध होकर सुनते और उन पलों को अपने भीतर समेट लेते।

एक सप्ताह बीतते पता नहीं चला और अगले कार्यक्रम की तिथि निकट आ गई। अगले शहर के लिए एयर पोर्ट पर नमन नेत्रों से फिर मिलने की आशा में विदा किया। पता नहीं था कि यह अंतिम विदाई होगी। आज पापा-मम्मी और काका जी तीनों हमें छोड़कर चले गए हैं। अतीत के गलियारे से निकलकर हृदय के कोने में सुरक्षित पड़े यादों के पलों को आज आपके साथ बाँट लिया है।

माँ कहती थी–दु:ख बाँटने से घटता है... सुख व धन बाँटने से बढ़ता है।

❐ 101 **गाइमोन सिटी, मौरिस विले**
एन.सी. 27560 **यू.एस.ए.**
इ-मेल: sudhaom9@gmail.com

वो घर जो मेरी यादों में बसता है

गीतिका गोयल

ये वो घर है
जो मेरी यादों में बसता है
ये वो घर है
जो मेरे मन में
नन्हे बच्चे-सा हँसता है
यहाँ के हर कोने से
एक अनोखी ख़ुशबू आती है
किताबों की ख़ुशबू
काग़ज़ की ख़ुशबू,
और ख़ुशबू उस बचपन की
जो यहाँ घूमता-फिरता था,
मस्त-चिंतामुक्त!!
ख़ुशबू उस पहली कहानी की
जो मैंने इसी आँगन में बैठकर
लिखी थी,
ख़ुशबू उन पूरियों की
जो हमने गुड़िया की शादी में
बनाई थीं
और ख़ुशबू
नानी की अलमारी में रखी
हरड़ की गोलियों की
जिनका स्वाद आज भी
मुँह में ताज़ा है,
और भी न जाने
कितनी क़िस्म की ख़ुशबुएँ
फिरा करती हैं यहाँ
संगीत के स्वरों की मीठी
ख़ुशबू,
जुम्मन खाँ साहब की
मीठी आवाज़ की ख़ुशबू,
मामीजी के बनाए
चूरमा की ख़ुशबू,
प्यारे की अम्मा, बीधाराम,
पूरनमल के
सेवा-भाव की ख़ुशबू,
काकू के प्रोत्साहन की ख़ुशबू,
और ख़ुशबू उन चनों की
जो काकू के डिब्बे में
उनके सिरहाने रखे होते थे।
और भी हैं ख़ुशबुएँ...
नानाजी की पूजा की घंटी,
आँगन के फ़र्श पर
मौसी के पैरों के निशान,
रसोई के बाहर लगा
भीष्म पितामह की
उम्र का पंखा
संगीत-गोष्ठियाँ
ताश की बाज़ियाँ,
सभी की
यादों की ख़ुशबू भी तो है,
ये घर बड़ा है, अनोखा है
सच!! ये घर बड़ा अनोखा है।

❐ ए 801, **पार्क व्यू सिटी**-2,
सोहना रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)
09582845000

(लगभग 20 वर्ष के अंतराल के बाद जब मैं हाथरस गई तो भाव कुछ यूँ बह निकले)

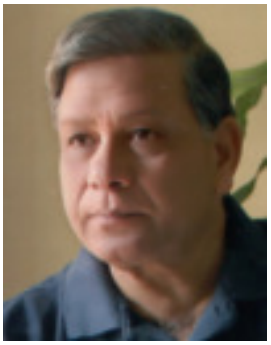

डॉ॰ ब्रजेशकुमार मिश्र

काका हाथरसी जी की पुण्य-स्मृति में

शारदापुत्र! शत नमन तुम्हें!

शारदापुत्र! शत नमन तुम्हें!
हो हास्य-व्यंग्य के मूर्त रूप,
ले त्वरित-सर्जना-शर अनूप।
पी गरल स्वयं, बाँटा अमृत,
झेले हँस-हँस झंझा विद्रूप।

हे मनुज-श्रेष्ठ, शत नमन तुम्हें
शारदापुत्र! शत नमन तुम्हें
मृदु हास्य-व्यंग्य को गौरव दे,
जन-जन से श्रद्धा, आदर ले।
कवि-मंच-जगत पर तुम दमके
नभ में दीपित शशि सुंदर-से

हे सजग सृजक! शत नमन तुम्हें
शारदापुत्र! शत नमन तुम्हें!

❐ **मिश्रा नर्सिंग होम**
31/18, **सिद्धार्थ कॉलोनी,**
मुजफ़्फ़रनगर (उ॰प्र॰)
मो॰ 09412211763

काका हाथरसी और मैं

अविनाश वाचस्पति

वर्ण में क अक्षर से क तक का सफ़र और उससे जुड़ी हुई आ की मात्रा, बनाती है प्रभुदयाल गर्ग को काका। हाथरस में रहे, इसलिए हाथरसी कहे गए। तो यूं मिलकर बने, जाने और पहचाने गए काका हाथरसी। हाथ को सुनने में थोड़ा सा ध्यान हटा लो तो हास्य ही सुनाई देता है। हम कहें हाथरसी, पर सुनने वाला हास्यरसी ही सुनता है। यही है वो जादू जो काका के पाठकों के कानों में घुस, आँखों और मुँह से हँसता है। क से क तक का सफ़र यूँ तो छोटा दिखलाई देता है, पर वो यह भी साबित करता चलता है कि ज़मीन की तरह अक्षरों और शब्दों की दुनिया भी गोल ही होती है। क से ही कविता और क से ही कहानी तथा क से ही काका। फिर भला कैसे हो सकता है तुकों का घाटा। काका ने स्वस्थ हास्य और चुहल भरी हास्य कविता के जरिए जन जन तक, मन के आह्लाद को जिस तरह पहुँचाया, उसका आज इंटरनेट जगत भी मुकाबला नहीं कर सका है। वास्तव में जो कवि कर्म काका ने किया, वो मशीन की नहीं, मन की उपलब्धि है। इस उपलब्धि पर हिंदी कविता को गर्व है।

मशीन शब्द के बीच में विराजी शी, असल में काका के मन में बैठी काकी हैं, जो उनकी कविता-कला के अक्षर-अक्षर में मौजूद रही हैं। यह कोई साधारण घटना नहीं है। साहित्य में ऐसी घटना युगों में कभी-कभी बहुत मुश्किल से घटित होती है।

काका से यूं तो कई बार मिलना हुआ। पर मेरा मन उसे काका के दर्शन मानकर अभिभूत है। मिलना तो सिर्फ एक बार सनलाइट कॉलोनी में श्री अशोक चक्रधर के निवास पर हुआ था। काका के दर्शन देते ही, अशोकजी द्वारा मेरा नाम अविनाश बतलाने पर काका ने सहज प्रतिक्रिया दी थी, अविनाश ख़ूब खेलते होगे ताश। मेरे मुँह से अनायास बोल निकले थे कि नहीं काका, कभी नहीं लगाया ताश को हाथ। मैं मानता हूँ कि तुक के मोह में मेरे मुँह से झूठ निकला था, जबकि मैंने वह जानबूझकर नहीं बोला था। फिर मैंने तुरंत काका को बतलाया भी था कि बचपन में दो तीन पाँच, रमी इत्यादि खेल भाई, बहनों, रिश्तेदारों, परिचितों के साथ गर्मी की छुट्टियों में खेले थे, पर वे आदत न बन सके। काका सदैव परिस्थितियों को अपनी काव्य कुंडलियों में इस प्रकार बाँधते थे कि मन पर मंतर बँध जाया करता था।

❐ **साहित्यकार सदन,** 195 **(प्रथम तल), संत नगर ईस्ट आफ़ कैलाश के पास, नई दिल्ली** 110065
मोबाइल 09718750843/09717849729

दो बाल-कविताएँ

श्रीमती पुष्पा मित्तल

कोयल

कोयल करती कुहू-कुहू
पपिहा बोले पिऊ-पिऊ
चिड़िया करती चीं-चीं-चीं
हँसते रहना ही-ही-ही
मुर्ग़ा कहता कुकड़ू कूँ
कभी न बनना अकड़ू जू
बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ
अब मैं चूहे कभी न खाऊँ।

तितली

तितली रानी, तितली रानी
उड़ती-फिरती है मनमानी।
रंग-बिरंगी, कितनी प्यारी
सबके मन को हरने वाली।
कभी इधर है, कभी उधर है
पल में जाने कहाँ, किधर है।

कभी मोगरा उसको भाता
कभी लिली के पास वो जाती।
चंपा, बेला, जुही, चमेली
सबसे मिल-जुलकर है आती।
मुन्नी पीछे दौड़ लगाती
फिर भी देखो पकड़ न पाती।

❐ 475/22, **इंदिरा नगर, लखनऊ**

दुष्यंत को मिला प्रथम कविता कोश सम्मान, प्रेमचंद गांधी बने कोश के संपादक

अंतर्जाल की दुनिया में कविताओं और कवियों का सबसे बड़ा ठिकाना है कविताकोश। हाल में ही कोश के संचालन को पाँच साल पूरे हुए। इस अवसर पर प्रथम कविताकोश सम्मान समारोह का आयोजन जयपुर में जवाहर कला केंद्र के कृष्णायन सभागार में किया गया। समारोह में घोषणा की गई कि कविताकोश के नए संपादक कवि प्रेमचंद गांधी होंगे। भूतपूर्व संपादक अनिल जनविजय टीम के सक्रिय सदस्य के रूप में संपादकीय संयोजन का काम देखेंगे।

प्रेमचंद गांधी ने उपस्थित सहभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह दिन हिंदी-कविता के इतिहास की बड़ी घटना है। पहली बार कोश को इंटरनेट की दुनिया से निकालकर सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है। कविताकोश के संस्थापक और प्रशासक ललित कुमार ने उपस्थित जनसमुदाय को कविताकोश के इतिहास और कविताकोश वेबसाइट के उद्देश्यों से परिचित कराया। ललित ने कविताकोश के विकास में सामुदायिक भावना के महत्त्व पर बल दिया और बताया कि इस तरह की वेबसाइट का अस्तित्व सिर्फ सामुदायिक प्रयासों से ही संभव है।

रचनाकारों का सम्मान : कविता कोश ने पंच वर्षीय जयंती के अवसर पर दो वरिष्ठ कवियों और पाँच एकदम नए युवा कवियों को सम्मानित करने का निर्णय लिया था। कविताकोश सम्मान 2011 के तहत नरेश सक्सेना, लखनऊ (कवि), बल्लीसिंह चीमा, ऊधमसिंह नगर (कवि), दुष्यंत, राजस्थान (कवि), श्रद्धा जैन, सिंगापुर (शायर), अवनीशसिंह चौहान, इटावा (नवगीतकार), सिराज फ़ैसल ख़ान, शाहजहाँपुर (शायर) व पूनम तुषामड़, नई दिल्ली (कवि) को सम्मानित किया गया। सम्मान के अंतर्गत वरिष्ठ कवियों नरेश सक्सेना एवं बल्लीसिंह चीमा को 11000 रुपए नकद, कविता कोश सम्मान-पत्र और कविता कोश ट्रॉफ़ी प्रदान की गई। पाँचों युवा कवियों को पाँच-पाँच हजार रुपए नकद, सम्मान-पत्र और कविता कोश ट्रॉफ़ी दी गई। शाल ओढ़ाकर इन कवियों का सम्मान करने के लिए मंच पर कवि विजेंद्र, ऋतुराज, कवि नंद भारद्वाज, आलोचक मोहन श्रोत्रिय आदि उपस्थित थे।

समारोह में कविता कोश की तरफ़ से कविता कोश की प्रशासक प्रतिष्ठा शर्मा, कोश की कार्यकारिणी के सदस्य धर्मेंद्रकुमार सिंह, टीम के भूतपूर्व सदस्य कुमार मुकुल एवं आदिल रशीद, संकल्प शर्मा, रामेश्वर कांबोज 'हिमांशु', मायामृग, मीठेश निर्मोही, राघवेंद्र, हरिराम मीणा, बनजकुमार 'बनज' आदि उपस्थित थे।

2008 का अखिल भारतीय भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार

भारत भवन सभागार में मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद की साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में वरिष्ठ हिंदी कवि उद्भ्रांत को उनकी लंबी कविता 'अनाद्यसूक्त' के लिए अकादमी का वर्ष 2008 का अखिल भारतीय भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार प्रदान किया गया। इस लंबी कविता को कवि ने नौ स्पंदों में विभक्त किया है। इसके अतिरिक्त निबंधसंग्रह 'विवेचना के सुर' के लिए प्रो॰ शरदनारायण खरे (मंडला) को माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, 'एक अचानक शाम' पर कहानी के लिए मनमोहन सरल (मुंबई) को मुक्तिबोध पुरस्कार, उपन्यास 'काहे री नलिनी' के लिए उषा यादव (आगरा) को वीरसिंह देव पुरस्कार और आलोचना पुस्तक 'गांधी: पत्रकारिता के प्रतिमान' के लिए डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका (दिल्ली) को आचार्य रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया। सभी पुरस्कृत रचनाकारों को नारियल, शॉल, सम्मान-पत्र के साथ इक्यावन हज़ार रुपये की धनराशि प्रदेश की संस्कृति मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा द्वारा प्रदान की गयी।

'आलराउंड' के लेखिका विशेषांक का विमोचन

हिंदी साहित्य मासिक पत्रिका 'आलराउंड' के सातवें विशेषांक 'लेखिका विशेषांक' का विमोचन एडवोकेट फकीरचंद मल्होत्रा ने किया। इस दौरान साहित्य में जुड़े कई पाठक व लेखक उपस्थित थे। पत्रिका के अगस्त 2011 के इस लेखिका विशेषांक के बारे में बताते हुए

मुख्य संपादक श्री अमितकुमार लाडी ने बताया कि इस विशेषांक में अनेक लेखकों की रचनाएँ दी गई हैं। उन्होंने कहा कि इन रचनाओं में कविताएँ, लघुकथाएँ, ग़ज़लें, बालकहानी, बालकविता आदि शामिल हैं।

'आधी ज़िंदगी पूरा सच' लोकार्पित

कवि हरिराम पथिक के सद्य: प्रकाशित मुक्तक संग्रह 'आधी ज़िंदगी पूरा सच' का लोकार्पण एक विशेष समारोह में हुआ। कादंबिनी के पूर्व कार्यकारी संपादक श्री विजयकिशोर मानव समारोह अध्यक्ष, प्रख्यात साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ॰ कमलकांत बुधकर (मुख्य अतिथि) एवं श्री शरदेंदु शर्मा (पत्रकार) ने संयुक्त रूप से मुक्तक संग्रह का विमोचन किया। जी॰पी॰ओ॰ रोड स्थित पंजाब होटल में आयोजित विमोचन समारोह में वक्ताओं ने कहा कि अपनी सद्य: प्रकाशित कृति 'आधी ज़िंदगी पूरा सच' में कवि हरिराम पथिक ने अपनी काव्य-साधना और जीवन की सघन अनुभूतियों को अपने मुक्तकों में बहुत ही सुंदर ढंग से पिरोया है। कार्यक्रम में कवि पथिक ने अपनी कृति के विषय में विस्तार से जानकारी दी तथा कुछ चुनिंदा मुक्तक भी प्रस्तुत किए।

प्रो॰ श्यामल उपाध्याय को 'साहित्यकार सम्मान'

हिमाक्षरा राष्ट्रीय साहित्य परिषद, वर्धा, महाराष्ट्र के तत्त्वावधान में शिक्षक भवन, पुणे में आचार्य काका कालेलकर की 125वीं जयंती के अवसर पर साहित्यकार सम्मान समारोह में हिंदी की उल्लेखनीय सेवाओं के आधार पर प्रो॰ श्यामल उपाध्याय (मंत्री भारतीय वाङ्मय पीठ, कोलकाता) को गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा नई दिल्ली द्वारा आचार्य काका कालेलकर 'साहित्यकार सम्मान' से विभूषित किया गया।

राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी में देशभर के व्यंग्यकार सम्मिलित

अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन द्वारा उ॰प्र॰ भाषा संस्थान के सहयोग से दो दिवसीय शरद जोशी स्मृति राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी का आयोजन 11 एवं 12 जून 2011 को हुआ। राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोपाल चतुर्वेदी (लखनऊ) उपस्थित थे। राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ व्यंग्यकार श्री शेरजंग गर्ग ने की। राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी में श्री हरि जोशी (भोपाल), प्रेम जनमेजय (नई दिल्ली), रोमेश जोशी, जवाहर चौधरी, मृदुल कश्यप, सूर्यकांत नागर (इंदौर), कैलाश मंडलेकर (खंडवा), शांतिलाल जैन (भोपाल), डॉ॰ रमेशचंद्र (ब्यावरा), जगदीश ज्वलंत (महिदपुर), प्रेमचंद द्वितीय (बड़नगर), सहित करीब 50 व्यंग्यकार सम्मिलित हुए। अन्य प्रमुख व्यंग्यकारों में बी॰एल॰ आच्छा, रमेशचंद शर्मा, डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा, डॉ॰ हरीशकुमार सिंह, डॉ॰ प्रभाकर शर्मा, राजेंद्र देवधर 'दर्पण', डॉ॰ निखिल जोशी, कमल चौधरी, मुकेश जोशी, डॉ॰ संदीप नाडकर्णी, राजेंद्र नागर, डॉ॰ स्वामीनाथ पांडे, संदीप सृजन, संतोष सुपेकर, गफ़ूर स्नेही, अनिल कुरेल, आदि ने राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी में भागीदारी की। संगोष्ठी में स्वागत भाषण अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष एवं प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ॰ शिव शर्मा ने किया।

राष्ट्रीय व्यंग्य संगोष्ठी में व्यंग्यकार डॉ॰ हरीशकुमार सिंह के नए संग्रह 'लिफ्ट करा दे' का विमोचन भी किया गया। व्यंग्य संग्रह का प्रकाशन हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर द्वारा किया गया है। डॉ॰ हरीशकुमार सिंह का यह तीसरा व्यंग्य संकलन है।

डॉ॰ राधेश्याम शुक्ल को रामनाथ गोइन्का पत्रकार शिरोमणि पुरस्कार प्रदत्त

कमला गोइन्का फाउंडेशन ने पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित एक भव्य पुरस्कार एवं सम्मान समारोह में हिंदी दैनिक स्वतंत्र वार्ता के संपादक डॉ॰ राधेश्याम शुक्ल को प्रतिष्ठित रामनाथ

गोइन्का पत्रकार शिरोमणि पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ॰ शुक्ल को हिंदीतर क्षेत्र के वरिष्ठ हिंदी पत्रकार के रूप में सम्मानित करते हुए फाउंडेशन की ओर से प्रशस्तिपत्र, उत्तरीय, श्रीफल, स्मृतिचिह्न और सरस्वती की प्रतिमा के साथ 51 हज़ार रुपए की राशि भी प्रदान की गई। स्मरणीय है कि 62 वर्षीय डॉ॰ राधेश्याम शुक्ल अपने विद्यार्थीकाल से ही सोद्देश्य पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं तथा विगत 13 वर्षों से हैदराबाद में रहकर समाचार पत्र संपादक के अतिरिक्त अपने व्याख्यानों और लेखों के माध्यम से हिंदीभाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं।

साथ ही, इस समारोह में वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार डॉ॰ बालशौरि रेड्डी को उनके समग्र लेखन के लिए भाभीश्री रमादेवी गोइन्का सारस्वत सम्मान तथा आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के अध्यक्ष डॉ॰ यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद को डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के हिंदी से तेलुगु में अनुवाद के लिए गीतादेवी गोइन्का हिंदी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये सभी सम्मान मुख्य अतिथि ज्ञानपीठ पुरस्कारग्रहीता साहित्यकार डॉ॰ सी॰नारायण रेड्डी के हाथों भेंट किए गए। इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध कला-संग्राहक एवं समीक्षक जगदीश मित्तल और विशेष अतिथि एम॰ उपेंद्र के अतिरिक्त पुरस्कारदाता संस्था के श्यामसुंदर गोइन्का, ललिता गोइन्का, प्रकाश गोइन्का, सुशील गोइन्का, संजय गोइन्का भी मंच पर उपस्थित थे।

आशीष कंधवे की पुस्तक 'जन गण मन' और 'समय की समाधि' का विमोचन

युवाकवि श्री आशीष कंधवे की पुस्तकों 'समय की समाधि' और 'जन गण मन' का विमोचन दिल्ली के हिंदी भवन के सभागार में वरिष्ठ साहित्यकार श्री अजितकुमार, ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक श्री दिनेश मिश्र, भारत के जाने-माने पत्रकार एवं सांसद डॉ॰ चंदन मित्रा, गगनांचल के पूर्व अथिति संपादक, कवि एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री हरेंद्रप्रताप, प्रख्यात कवि डॉ॰ लक्ष्मीशंकर वाजपेयी एवं युवा प्रखर कवि, साहित्यकार डॉ॰ अमरनाथ अमर ने संयुक्त रूप से किया। उक्त समारोह में बोलते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री अजितकुमार ने कहा कि आशीष कंधवे की रचनाओं में दबे-कुचले और शोषित समाज की आवाज़ मुखर हुई है। कार्यक्रम का संचालन कवि डॉ॰ विवेक गौतम ने किया। इस अवसर पर विश्वविख्यात नृत्यांगना शोभनानारायण एवं श्रीमती अनुभूति चतुर्वेदी, भारत सरकार के पूर्व सांस्कृतिक निदेशक श्री गोरखनाथ के अलावा साहित्यकार श्री हरीश आनंद, श्रीमती चंद्रिका जोशी, कवयित्री निवेदिता, कवयित्री नमिता राकेश, कवि श्री चंद्रेशखर आश्री भी उपस्थित थे।

'तनहाइयों का शोर' का लोकार्पण

कायाकल्प साहित्यकला फाउंडेशन, नोएडा के तत्त्वावधान में कवि अरुण सागर की पुस्तक 'तनहाइयों का शोर' का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकारों एवं ग़ाज़ियाबाद के अनेक प्रशासनिक अधिकारियों के समक्ष किया गया। मुख्य अतिथि थे आकाशवाणी दिल्ली के निदेशक श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी। अध्यक्षता डॉ॰ शेरजंग गर्ग ने की। इस अवसर पर डॉ॰ कुँअर बेचैन, देवेंद्र शर्मा 'इंद्र', कमलेश भट्ट 'कमल', ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग', वी॰के॰ वर्मा 'सैदी' आदि उपस्थित थे। लोकार्पण के बाद कायाकल्प साहित्य परिवार की ओर से अरुण सागर को साहित्यश्री सम्मान 2011 प्रदान किया गया।

'हिंदी साहित्य निकेतन शोध पुरस्कार' की घोषणा

हिंदी साहित्य निकेतन देश का ऐसा विशिष्ट संस्थान है, जो हिंदी-शोध की दिशा में विशेष रूप से सक्रिय है। इस संस्थान ने अभी तक हिंदी में संपन्न शोध की पूरी सूचनाएँ लगभग 3000 पृष्ठों के पाँच खंडों में प्रकाशित की हैं।

हिंदी साहित्य निकेतन की ओर से उसकी स्वर्णजयंती के अवसर पर प्रकाशित शोध-प्रबंधों पर 'हिंदी साहित्य निकेतन शोध पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है।

नियम एवं शर्तें-

1-इस वर्ष पुरस्कार की राशि 25000 रुपए होगी।

2-पुरस्कार हेतु पिछले तीन वर्षों में (2009 तथा बाद के) प्रकाशित शोध-प्रबंध स्वीकार्य होंगे।

3-शोध-प्रबंधों की तीन प्रतियाँ (निर्मूल्य) पंजीकृत डाक से भेजनी होंगी।

4-पुरस्कार का निर्णय विद्वानों की एक समिति द्वारा किया जाएगा।

5-प्रविष्टि भेजते समय किसी भी पुस्तक पर अपना विवरण न लिखें, न ही हस्ताक्षर करें।

6-प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 20 नवंबर 2011 है।

7-निर्णायक मंडल द्वारा किया गया निर्णय अंतिम तथा सभी को स्वीकार्य होगा।

8-पुरस्कार-हेतु भेजे जाने वाले शोध-प्रबंधों के पैकिट पर सबसे ऊपर 'शोध-पुरस्कार हेतु' अवश्य लिखा जाए।

8-समस्त प्रविष्टियाँ निम्न पते पर प्रेषित की जाएँ–

हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) 246701

शोध संदर्भ-5

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ० मीना अग्रवाल

'शोध-संदर्भ' के पूर्व में प्रकाशित चार खंडों का अपूर्व स्वागत हुआ। इन खंडों में हिंदी-शोध के आरंभ से लेकर सन् 2003 तक स्वीकृत शोधप्रबंधों का वर्गीकृत विवरण दिया गया है। अब **शोध-संदर्भ**-5 प्रकाशित हो गया है, जिसमें सन् 2003 के बाद स्वीकृत शोधप्रबंधों का विवरण प्रकाशित किया गया है।

ग्रंथ में विवरण निम्नलिखित क्रम में दिए गए हैं–

1. शोधकर्ता का नाम
2. जन्मतिथि
3. शोध का विषय
4. विश्वविद्यालय का नाम
5. उपाधि वर्ष
6. निदेशक का नाम व पता
7. प्रकाशन का विवरण
8. उपलब्ध पता

इस विशिष्ट ग्रंथ का मूल्य 895 रुपए है, किंतु शोध-निदेशकों, हिंदी-प्राध्यापकों तथा शोध-छात्रों को यह ग्रंथ मात्र 550 रुपए में दिया जाएगा।

अपना आदेश तथा धनराशि का बैंक ड्राफ्ट यथाशीघ्र निम्न पते पर भेजिए। सी०बी०एस० शाखाओं के चैक स्वीकार्य होंगे।

हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)
01342-263232, 07838090732

हिन्दी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)

फोन : 01342-263232, 07838090732

ई-मेल :
giriraj3100@gmail.com
giriraj@hindisahityaniketan.com
वेबसाइट :
www.hindisahityaniketan.com

महत्त्वपूर्ण कोश एवं संदर्भ ग्रंथ

निश्तर ख़ानक़ाही एवं डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

ग़ज़ल और उसका व्याकरण	150.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल एवं डॉ॰ मीना अग्रवाल

हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-1	495.00
हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-2	700.00
शोधसंदर्भ-भाग-1	500.00
शोधसंदर्भ-भाग-2	550.00
शोधसंदर्भ-भाग-3	525.00
शोधसंदर्भ-भाग-4	595.00
शोधसंदर्भ-भाग-5	895.00
तुकांत कोश	300.00
शोध अंक भाग-1	100.00
शोध अंक भाग-2	100.00
शोध अंक भाग-3	100.00
शोध अंक भाग-4	100.00
शोध अंक भाग-5	100.00
शोध अंक भाग-6	100.00
शोध अंक भाग-7	100.00
शोध अंक भाग-8	100.00
शोध अंक भाग-9	100.00
शोध अंक भाग-10	100.00
शोध अंक भाग-11	100.00
शोध अंक भाग-12	100.00
शोध अंक भाग-13	100.00
शोध अंक भाग-14	100.00
शोध अंक भाग-15	100.00

समीक्षा एवं समालोचना

डॉ॰ अंजु भटनागर

डॉ॰ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान	500.00

डॉ॰ ज्योति सिंह

मृदुला गर्ग कृत अनित्य : इतिहास और आख्यान का संबंध	150.00
मृदुला गर्ग और नारी-अस्मिता का प्रश्न	300.00

डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी

काका हाथरसी : एक समीक्षा-यात्रा	300.00

डॉ॰ मनोज कुमार

सांप्रदायिकता और हिंदी कथासाहित्य	250.00

डॉ॰ दीपा के॰

अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर	250.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल

आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत (पुरस्कृत)	450.00

डॉ॰ हरीशकुमार सिंह

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य	350.00
साठोत्तरी हिंदी-ग़ज़ल : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान/डॉ॰ अनिलकुमार शर्मा	350.00

डॉ॰ शंकर क्षेम

एक साक्षात्कार : पं॰ अमृतलाल नागर के साथ	150.00
ग़ज़ल : सौंदर्य और यथार्थ/अनिरुद्ध सिन्हा	150.00

डॉ॰ ज्योति व्यास

समय के हस्ताक्षर (हिंदी के आधुनिक कवि)	150.00

डॉ॰ लालबहादुर रावल

कालिदास के साहित्य में भौगोलिक तत्त्व 300.00

डॉ॰ अशोककुमार

जनपद बिजनौर के आधुनिककालीन साहित्यकार 350.00

बिजनौर क्षेत्र की ग्रामोद्योग-संबंधी शब्दावली का अध्ययन / डॉ॰ ओमदत्त आर्य 500.00

आस्थावाद एवं अन्य निबंध/ डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित 300.00

साहित्य और संस्कृति/डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित 300.00

हास्य-निबंध : स्वतंत्रता के पश्चात्/ डॉ॰ आशा रावत 350.00

आज़ादी के बाद का हिंदी गद्य व्यंग्य/ डॉ॰ प्रेम जनमेजय 350.00

हिंदी बालकाव्य के विविध पक्ष/विनोदचंद्र पांडेय 300.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ॰ मीना अग्रवाल

वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष 200.00

फिजी में प्रवासी भारतीय/डॉ॰ शुचि गुप्ता 300.00

मुक्तिबोध का रचना-संसार/डॉ॰ शिवशंकर लधवे 200.00

हास्य-व्यंग्य

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ 150.00

मेरे इक्यावन व्यंग्य 300.00

चुनी हुई हास्य कविताएँ 250.00

मंचीय व्यंग्य एकांकी 200.00

बाबू झोलानाथ 60.00

राजनीति में गिरगिटवाद 100.00

महेशचंद्र द्विवेदी

भज्जी का जूता 150.00

क्लियर फंडा 120.00

प्रिय-अप्रिय प्रशासकीय प्रसंग 170.00

पं॰ सूर्यनारायण व्यास, सं॰ राजशेखर व्यास

वसीयतनामा 150.00

नो टेंशन/ डॉ॰ सुरेश अवस्थी 170.00

काका की विशिष्ट रचनाएँ/काका हाथरसी 300.00

काका के व्यंग्य-बाण/काका हाथरसी 300.00

कक्के के छक्के/काका हाथरसी 200.00

लूटनीति मंथन करी/काका हाथरसी 200.00

खिलखिलाहट/काका हाथरसी 200.00

पैसे कहाँ से दें/डॉ॰ आशा रावत 200.00

चाहिए एक और भगतसिंह/डॉ॰ आशा रावत 100.00

नमस्कार प्रजातंत्र/महेश राजा 150.00

ए जी सुनिए/अशोक चक्रधर 100.00

इसलिए बौड़म जी इसलिए/अशोक चक्रधर 100.00

चुटपुटकुले/अशोक चक्रधर 60.00

तमाशा/अशोक चक्रधर 60.00

रंग जमा लो/अशोक चक्रधर 65.00

सो तो है/अशोक चक्रधर 60.00

हँसो और मर जाओ/अशोक चक्रधर 60.00

नमस्ते जी/डॉ॰ बलजीत सिंह 150.00

अब हँसने की बारी है/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

1991 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 50.00

1992 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 50.00

1993 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 50.00

1994 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 60.00

1995 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 65.00

1996 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1997 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1998 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1999 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 120.00

2002 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00

2003 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00

2004 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 170.00

पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ 100.00

पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ 200.00

पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी 100.00

डॉ॰ शिव शर्मा

शिवशर्मा के चुने हुए व्यंग्य 50.00

बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) 150.00

अपने-अपने भस्मासुर 150.00

प्रतिनिधि व्यंग्य/दामोदरदत्त दीक्षित 100.00

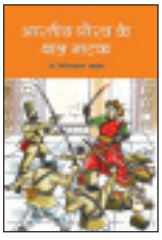

मधुप पांडेय

हास्य-व्यंग्य : मधुप पांडेय के संग 160.00
धमकीबाज़ी के युग में/निश्तर ख़ानक़ाही 60.00
ला ख़र्चा निकाल/गजेंद्र तिवारी 200.00
जलनेवाले जला करें/गजेंद्र तिवारी 60.00
कवयित्री सम्मेलन/ सुरेंद्रमोहन मिश्र 100.00
पेट में दाढ़ियाँ हैं/सूर्यकुमार पांडेय 100.00
ये है इंडिया/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह 120.00
आँखों देखा हाल/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह 150.00
लिफ़्ट करा दे/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह 200.00
देवेंद्र के कार्टून/देवेंद्र शर्मा 80.00
कार्टून कौतुक/देवेंद्र शर्मा 120.00
लिफ़ाफ़े का अर्थशास्त्र/डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा 120.00

कहानी

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ 200.00
पच्चीस कहानियाँ 200.00
कथा जारी है/बाबूसिंह चौहान 150.00
इक्कीस कहानियाँ/ सत्यराज 100.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल

अंदर धूप बाहर धूप (नारी-मन की कहानियाँ) 150.00

डॉ॰ दिनेशचंद्र बलूनी

उत्तराखंड की लोकगाथाएँ 200.00

एक बौना मानव/महेशचंद्र द्विवेदी 100.00
लव जिहाद/महेशचंद्र द्विवेदी 200.00
कौन कितना निकट/रेणु 'राजवंशी' गुप्ता 120.00
लघु कथाएँ/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 150.00

उपन्यास

अनोखा उपहार/श्रीमती सुषमा अग्रवाल 200.00
आसरा/श्रीमती सुषमा अग्रवाल 100.00
तीन बीघा ज़मीन/श्रीमती सुषमा अग्रवाल 200.00
मन के जीते जीत/श्रीमती सुषमा अग्रवाल 200.00
कालचक्र से परे/श्रीमती नीरजा द्विवेदी 200.00
भीगे पंख/महेशचंद्र द्विवेदी 200.00
और लहरें उफनती रहीं/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध 200.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास)/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00
अराज-राज/डॉ॰ मोहन गुप्त 200.00
सुराज-राज/डॉ॰ मोहन गुप्त 350.00
एक गुमनाम फौजी की डायरी/डॉ॰ आशा रावत 150.00
एक चेहरे की कहानी/डॉ॰ आशा रावत 150.00
गुरुदक्षिणा (व्यंग्य-उपन्यास)/डॉ॰ आशा रावत 100.00

एकांकी-नाटक

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

मंचीय व्यंग्य एकांकी 200.00
बच्चों के हास्य नाटक 200.00
बच्चों के रोचक नाटक 200.00
बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक 200.00
बच्चों के अनुपम नाटक 200.00
बच्चों के उत्तम नाटक 200.00
भारतीय गौरव के बाल नाटक 200.00
प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक 300.00
ग्यारह नुक्कड़ नाटक 200.00
नीली आँखें 60.00
संसार : एक नाट्यशाला/बाबूसिंह चौहान 150.00
ग्यारह एकांकी/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 200.00
दमन/रामाश्रय दीक्षित 100.00

ललित निबंध एवं रेखाचित्र

कैसे-कैसे लोग मिले/निश्तर ख़ानक़ाही 125.00
यादों का मधुबन/कृष्ण राघव 150.00
समय के चाक पर/डॉ॰ लालबहादुर रावल 125.00
समय एक नाटक/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 160.00
दर्पण झूठ बोलता है/बाबूसिंह चौहान 60.00
मकड़जाल में आदमी/बाबूसिंह चौहान 80.00
उफनती नदियों के सामने/बाबूसिंह चौहान 100.00
पीठ पर नील गगन/बाबूसिंह चौहान 100.00
इन दिनों समर में/डॉ॰ कृष्णकुमार रत्तू 250.00
अनुभव के पंख/चंद्रवीरसिंह गहलौत 250.00

गीत-ग़ज़ल

निश्तर ख़ानक़ाही

निश्तर ख़ानक़ाही समग्र (प्रकाशनाधीन) 500.00

मोम की बैसाखियाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 50.00
ग़ज़ल मैंने छेड़ी (ग़ज़ल-संग्रह) 80.00
ग़ज़लों के शहर में (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मेरे लहू की आग (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00

डॉ॰ कुँअर बेचैन
कोई आवाज़ देता है 150.00
दिन दिवंगत हुए 150.00
कुँअर बेचैन के नवगीत 200.00
कुँअर बेचैन के प्रेमगीत 150.00
पर्स पर तितली (हाइकु) 200.00

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
मातृभूमि के लिए 200.00
संघर्ष जारी है 170.00
जीवन-पथ में 150.00
देश हम जलने न देंगे 150.00
तुम भी मेरे साथ चलो 150.00
शमा हर रंग में जलती है/रामेश्वरप्रसाद 150.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
अक्षर हूँ मैं (कविताएँ) 150.00
सन्नाटे में गूँज (ग़ज़ल-संग्रह) 160.00
भीतर शोर बहुत है (ग़ज़ल-संग्रह) 160.00
मौसम बदल गया कितना (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शिकायत न करो तुम (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
आदमी है कहाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
आदमी के हक़ में (ग़ज़लें)/रामगोपाल भारतीय 100.00
यहाँ तक वहाँ से (कविताएँ)/रमेश कौशिक 200.00
हास्य नहीं व्यंग्य (कविताएँ)/रमेश कौशिक 150.00
गांधारी का सच (खंडकाव्य)/आर्यभूषण गर्ग 200.00

डॉ॰ आकुल
राधेय (खंडकाव्य) 120.00
असित चंद्र : अवदात चंद्रिका (काव्य-नाटक) 120.00
जिंदगी गाती तो है/(ग़ज़ल-संग्रह) 120.00
आसमान मेरा भी है (ग़ज़लें)/किशनस्वरूप 100.00
बूँद-बूँद सागर मैं (ग़ज़ल-संग्रह)/किशनस्वरूप 100.00
पंथ के पाँवड़े (काव्य-संग्रह)/किशनस्वरूप 100.00

कर्नल तिलकराज
आँचल-आँचल खुशबू (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
ज़ख़्म खिलने को हैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
अग्निसुता/राजेंद्र शर्मा 150.00
सीतायनी/डॉ॰ शंकर क्षेम 150.00
हिरना लौट चलें (गीत-संग्रह)/शचींद्र भटनागर 150.00
तिराहे पर (ग़ज़ल-संग्रह)/शचींद्र भटनागर 150.00
ढाई आखर प्रेम के (गीत-संग्रह)/शचींद्र भटनागर 200.00
अखंडित अस्मिता (मुक्तक)/शचींद्र भटनागर 200.00
गुलमुहर की छाँव में (ग़ज़लें)/मनोज अबोध 100.00
स्नेहा/तारा प्रकाश 100.00
उजियारा आशाओं का/तारा प्रकाश 150.00
बुलंदी इरादों की/तारा प्रकाश 150.00
चलने से मंज़िल मिलती है/तारा प्रकाश 200.00
इंद्रधनुष/तारा प्रकाश 200.00
संवेदनाओं के रंग/तारा प्रकाश 200.00
सुरों के ख़त/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 100.00
सुनहरे मंत्र का जादू/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 100.00
सुनाते हुए ऋतुगीत/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 150.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल
सफ़र में साथ-साथ (मुक्तक-संग्रह) 150.00
जो सच कहे (हाइकु-संग्रह) 150.00
यादें बोलती हैं (कविताएँ) 200.00
एक मुट्ठी धूप/नीरजा सिंह 100.00
कटे हाथों के हस्ताक्षर/डॉ॰ कमल मुसद्दी 150.00
फ़ासले मिट जाएँगे (ग़ज़लें)/डॉ॰ बलजीत सिंह 150.00
शब्द-शब्द संदेश (दोहे)/डॉ॰ बलजीत सिंह 150.00
जीवन है मुस्कान (दोहे)/डॉ॰ बलजीत सिंह 150.00
भीतर का संगीत (दोहे)/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00
सुख के बिरवे रोप (दोहे)/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00
इंद्रधनुष के रंग (दोहे)/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00

डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'
बहती नदी हो जाइए (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
अँधियारों से लड़ना सीखें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
जीवन-अमृत : पर्यावरण चेतना (दोहा-संग्रह) 200.00
अक्षर-अक्षर हो अमर (दोहा-संग्रह) 200.00

वैदुष्यमणि विद्योत्तमा (खंडकाव्य) 200.00
स्मृतियाँ/श्रीमती सुषमा अग्रवाल 100.00
अनजाने आकाश में/महेशचंद्र द्विवेदी 170.00
बातें कुछ अनकही/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
मैंने देखा है/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
हौसला तो है/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
ज़िंदगी रुकती नहीं/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
जज़्बात की धूप/धूप धौलपुरी 250.00
आड़ी-तिरछी यादों-सा कुछ/नवलकिशोर शर्मा 180.00
जब चाँद डूब रहा था/नवलकिशोर शर्मा 200.00
एड्स शतक/पूरणसिंह सैनी 150.00
खोजें जीवन सत्य (दोहे)/डॉ॰ ओमदत्त आर्य 150.00
अपनी एक लकीर (दोहे)/डॉ॰ ओमदत्त आर्य 200.00
राष्ट्र-शक्ति/सलेकचंद संगल 150.00
माँ तुझे प्रणाम/सलेकचंद संगल 150.00
लहरों के विरुद्ध/डॉ॰ रामप्रकाश 200.00
हर वृक्ष महाबोधि नहीं होता/महेंद्र कुमार 200.00
समय के भूगोल में/राजेंद्र मिश्र 200.00
पीड़ा का राजमहल/डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल 200.00

आत्मकथा-संस्मरण

मेरा जीवन : ए-वन/काका हाथरसी 100.00
आत्मसरोवर/ओम्प्रकाश अग्रवाल 125.00
निष्ठा के शिखर-बिंदु/नीरजा द्विवेदी 200.00
सफ़र साठ साल का/डॉ॰अजय जनमेजय (सं) 400.00
गीतिका गोयल, अनुभूति भटनागर (संपादक)
यादों की गुल्लक 300.00
आधी हक़ीक़त आधा फ़साना/डा॰ बलजीतसिंह 150.00

बाल-साहित्य

धरती पर चाँद (पुरस्कृत)/शंभूनाथ तिवारी 150.00
हम बगिया के फूल (बालगीत)/डा॰ बलजीतसिंह 150.00
आओ गीत सुनाओ गीत/डा॰बलजीतसिंह 150.00
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने/डा॰बलजीतसिंह 200.00
दिन बचपन के (बालगीत)/डा॰बलजीतसिंह 200.00
जादूगर बादल (बालगीत)/विनोद भृंग 150.00
आटे-बाटे दही चटाके (शिशुगीत)/बालकृष्ण गर्ग 150.00
चुनमुन की कहानियाँ (पुरस्कृत)/गीतिका गोयल 150.00
किशोर मन की कहानियाँ/डॉ॰ सरला अग्रवाल 150.00
चलो आकाश को छू लें/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मानव-विकास की कहानी 200.00
मानव का विकास 300.00
मानव सभ्यता विकास 200.00
पार्टी गेम्स/चाँदनी कक्कड़ 125.00

विविध

उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन/
डॉ॰ सरिता शाह 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल
पर्यावरण : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
नारी : कल और आज 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे 125.00
हिंसा : कैसी-कैसी 200.00
दंगे : क्यों और कैसे (पुरस्कृत) 100.00
रमेशचंद्र दीक्षित, गिरिराज शाह, निश्तर ख़ानक़ाही,
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मानवाधिकार : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
डॉ॰ गिरिराज शाह
अपराध-अपराधी : अन्वेषण एवं अभियोजन 200.00
गुरु नानकदेव/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
अमृतवाणी/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 300.00
वेद-वेदान्त दर्शन/डॉ॰ मूलचन्द दालभ 300.00
प्रकृति : एक ज्ञेय तत्त्व/डॉ॰ मूलचन्द दालभ 300.00
कन्हैया गीता/डॉ॰ मूलचन्द दालभ 900.00
मैं हरिद्वार बोल रहा हूँ/डॉ॰ कमलकांत बुधकर 395.00
डॉ॰ गोविंद शर्मा एवं रवि लंगर
टास्कफोर्स : हैल्थकेयर प्रोजेक्ट्स 450.00
सिद्धाश्रम का संन्यासी/मनोज भारद्वाज 300.00
समुद्री दैत्य सुनामी/डॉ॰ लालबहादुर रावल 300.00

हिंदी साहित्य निकेतन द्वारा प्रकाशित

अनुपम ग्रंथ

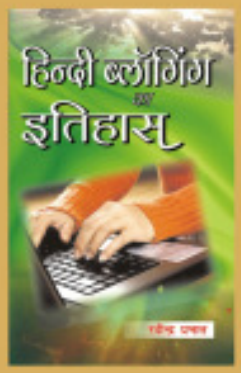

हिन्दी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०)

फोन : 01342-263232

ई-मेल :

giriraj3100@rediffmail.com
giriraj@hindisahityaniketan.com

वेबसाइट :

www.hindisahityaniketan.com

'हिंदी साहित्य निकेतन शोध पुरस्कार' की घोषणा

हिंदी साहित्य निकेतन देश का ऐसा विशिष्ट संस्थान है, जो हिंदी-शोध की दिशा में विशेष रूप से सक्रिय है। इस संस्थान ने अभी तक हिंदी में संपन्न शोध की पूरी सूचनाएँ लगभग 3000 पृष्ठों के पाँच खंडों में प्रकाशित की हैं।

हिंदी साहित्य निकेतन की ओर से उसकी स्वर्णजयंती के अवसर पर प्रकाशित शोध-प्रबंधों पर 'हिंदी साहित्य निकेतन शोध पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है।

नियम एवं शर्तें-

1- इस वर्ष पुरस्कार की राशि 25000 रुपए होगी।

2- पुरस्कार हेतु पिछले तीन वर्षों में (2009 तथा बाद के) प्रकाशित शोध-प्रबंध स्वीकार्य होंगे।

3- शोध-प्रबंधों की तीन प्रतियाँ (निर्मूल्य) पंजीकृत डाक से भेजनी होंगी।

4- पुरस्कार का निर्णय विद्वानों की एक समिति द्वारा किया जाएगा।

5- प्रविष्टि भेजते समय किसी भी पुस्तक पर अपना विवरण न लिखें, न ही हस्ताक्षर करें। पुरस्कार हेतु भेजी जाने वाली प्रविष्टि के साथ अपना परिचय और पासपोर्ट साइज़ का फ़ोटो भी भेजें।

6- प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 20 नवंबर 2011 है।

7- निर्णायक मंडल द्वारा किया गया निर्णय अंतिम तथा सभी को स्वीकार्य होगा।

8- पुरस्कार-हेतु भेजे जाने वाले शोध-प्रबंधों के पैकिट पर सबसे ऊपर 'शोध-पुरस्कार हेतु' अवश्य लिखा जाए।

9- समस्त प्रविष्टियाँ निम्न पते पर प्रेषित की जाएँ–

हिंदी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) 246701

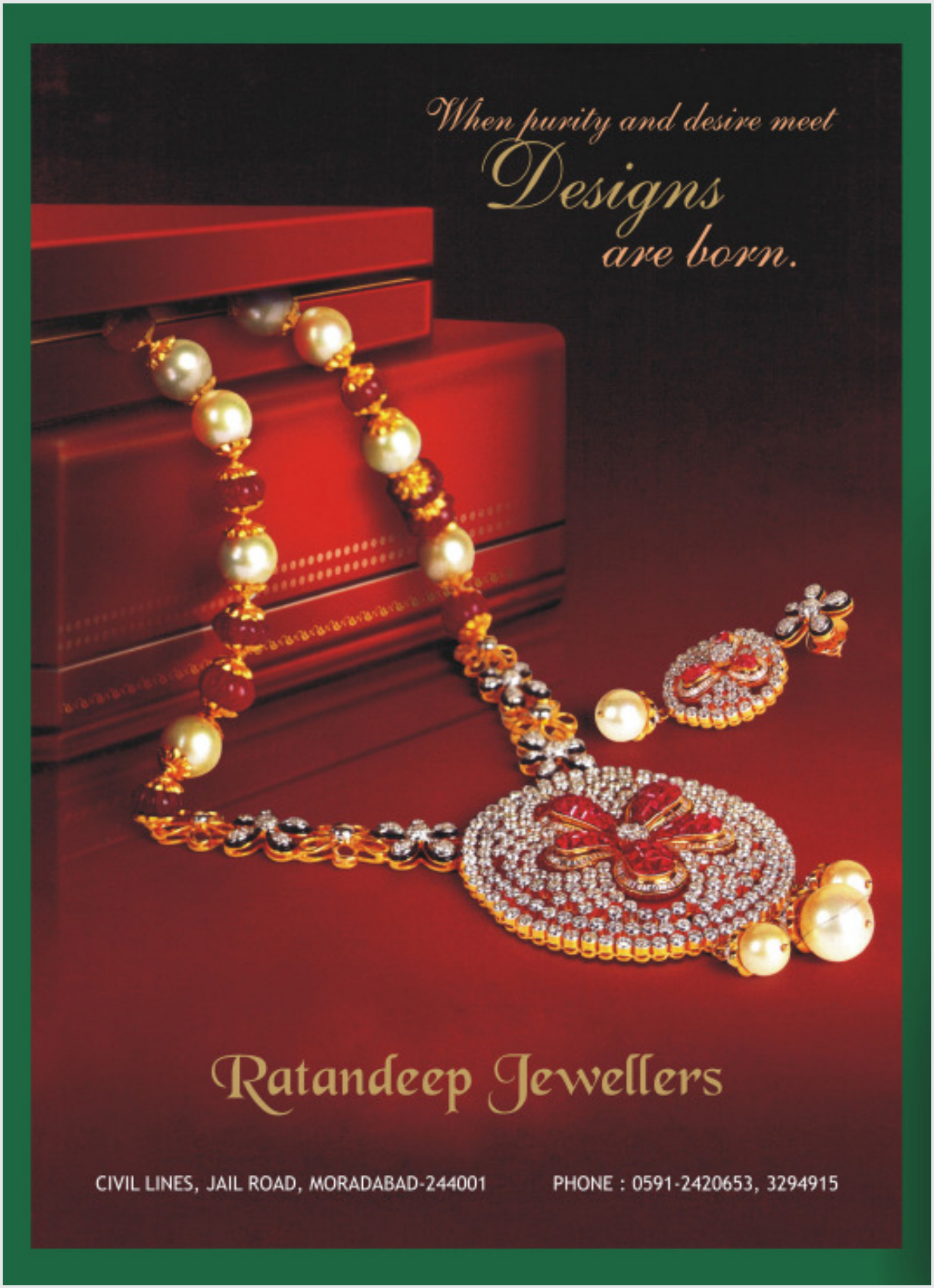
When purity and desire meet
Designs
are born.
Ratandeep Jewellers
CIVIL LINES, JAIL ROAD, MORADABAD-244001
PHONE : 0591-2420653, 3294915